IX बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता, उत्पादकता और सुदृढ़ता

9.1 एक सुपरिचालित वित्तीय क्षेत्र वित्तीय संसाधनों की मध्यस्थता को सुगम बनाता है। कोई वित्तीय प्रणाली संसाधन सृजन और उसके आबंटन में जितनी ही अधिक कार्य कुशल होगी, आर्थिक विकास में उसका योगदान उतना ही अधिक होगा (मोहन 2005)। वित्तीय मध्यस्थता की कार्य-कुशल प्रणाली अर्थव्यवस्था में जोखिम न्यूनीकरण प्रक्रिया में भी योगदान करती है। उदाहरण के लिए उत्पादकता में हुई वृद्धि को पूंजी के उस सुरक्षित भंडार को सुदृढ़ करने में लगाए जाने पर, जो जोखिम को आत्मसात कर लेता है, बैंकिंग में वर्धित कार्यकुशलता के फलस्वरूप अपेक्षाकृत अधिक और ज्यादा उपयुक्त नवोन्मेष, वर्धित लाभप्रदता के साथ-साथ अधिकाधिक सुरक्षा और वित्तीय सुदृढ़ता आ सकती है। (कासु, गिरारडोन और मोलीन्यूक्स, 2002)। इसके अलावा, कार्यकुशलता अथवा उत्पादकता सम्बन्धी उपाय बैंकिंग प्रणाली की शक्तियों अथवा उसकी कमज़ोरियों को उभारने में महत्त्वपूर्ण संकेतक के रूप में काम कर सकते हैं तथा वे जब आवश्यक हो, उस समय विनियामक द्वारा पहले से पूर्वक्रियात्मक उपाय किए जाने को संभव बना सकते हैं। इसलिए, बैंकिंग क्षेत्र में कार्यकुशलता और उत्पादकता की जांच-पड़ताल और उनकी माप हमेशा से अनुसंधान की दृष्टि से रुचि के क्षेत्र रहे हैं।

9.2 अनुभव के आधार पर यह पता चला है कि कार्य-कुशलता के लिए अधिक अंक प्राप्त करने वाले बैंकों के तुलनात्मक रूप से कम अंक पाने वाले बैंकों की अपेक्षा अपना अस्तित्व बनाए रखने की संभावना अधिक होती है (बार और सीम्स, 1996)। एक अन्य अध्ययन ने वाणिज्यिक बैंकों में प्रबंधकीय समस्याओं के समय-पूर्व चेतावनी संकेतों के प्रयोजन हेतु नियमित आधार पर लागतपरक कार्य-कुशलता की छानबीन की प्रासंगिकता को वैध बना दिया है। यह अध्ययन लागतपरक कार्य-कुशलता और बैंक की विफलता की जोखिम के बीच नकारात्मक और महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध की पुष्टि कर देता है (पॉडपियरा एण्ड पॉडपियरा, 2005)। इस प्रकार बैंकिंग की कार्य-कुशलता और उत्पादकता के मूल्यांकन को अधिक महत्त्व प्राप्त हो जाता है।

9.3 कतिपय कारकों को वित्तीय मध्यवर्तियों की कार्य-कुशलता और उत्पादकता से जुड़ा हुआ पाया गया। जबकि विभिन्न देशों में विशिष्ट कारक अलग-अलग हो सकते हैं, सामान्य रूप से अपेक्षाकृत अधिक कार्य-कुशलता और लाभप्रदता के पीछे निहित प्रेरक शक्ति बड़े पैमाने की किफायतों, कार्यकलापों के विविधीकरण तथा अधुनातन प्रौद्योगिकियों को लागू किए जाने से होने वाले लाभों को सुगम बनाने वाला नीतिगत परिवेश ही रही है। अतः ये कारक विश्वभर के नीति-निर्माताओं का ध्यान आकृष्ट करते रहे हैं।

9.4 भारत में बैंकिंग क्षेत्र के सुधारों का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य प्रणाली में लचीलेपन, परिचालनात्मक स्वायत्तता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना तथा भारत में बैंकिंग मानकों को अंतरराष्ट्रीय उत्तम परंपराओं के अनुरूप उन्नत करना था (रेड्डी, 2002)। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के उद्देश्य से 1990 वाले दशक के प्रारंभिक दिनों से ही कई उपाय किए गए हैं। प्रौद्योगिकीय विकास के साथ ही इन उपायों के फलस्वरूप, भारत में बैंकों के परिचालनात्मक वातावरण में महत्त्वपूर्ण रूप से परिवर्तन आए हैं। भारतीय बैंकिंग प्रणाली को विदेशी बैंकों की बढ़ी हुई उपस्थिति और निजी क्षेत्र के नये बैंकों के प्रवेश के फलस्वरूप बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। अधिकांश सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक पूंजी बाज़ार में पहुंच गए हैं। इससे, जैसा कि पूर्ववर्ती अध्याय में वर्णित है, उन्हें बाजार अनुशासन का पालन करने के अलावा, उनका पूंजी ढांचा ही परिवर्तित हो गया है। ब्याज दरों का निर्धारित ढांचा लगभग विनियमित हो गया है। आरक्षित नकदी निधि अनुपात (सीआरआर) और सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) के रूप में सांविधिक पूर्व-क्रयों में महत्त्वपूर्ण रूप से कमी आ गई है। बैंकों को गैर-परम्परागत कार्यकलापों में विविधीकरण करने की भी अनुमति दे दी गई है। बैंकों को उनके समक्ष उपस्थित स्थिति के अनुरूप निर्णय लेने में उन्हें समर्थ बनाने हेतु उन्हें उनकी दैनंदिन की निर्णय प्रक्रिया में परिचालनात्मक लचीलापन और कार्यपरक स्वायत्तता प्रदान की गई। बैंकों पर अंतरराष्ट्रीय श्रेष्ठ परंपराओं के अनुरूप विवेकसम्मत मानदंड भी लागू किए गए। अतीत में, बैंकों की निधियों की एक बड़ी मात्रा अनर्जक आस्तियों में उलझ जाती थी। बैंकों को उनकी विगत प्राप्य राशियों को शीघ्रतापूर्वक वसूल करने में समर्थ बनाने के लिए बहु-आयामी संस्थागत व्यवस्थाएं भी लागू की गईं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में हुई उन्नतियों ने बैंकों को नये उत्पाद और सुपुर्दगी चैनल आरंभ करने तथा उनकी आंतरिक नियंत्रण प्रणालियों को सुदृढ़ बनाने से समर्थ बना दिया है। इन समस्त परिवर्तनों से बैंकों की उस विधि को परिवर्तित करने की आशा की जाती है, जिसमें वे इस प्रकार के उत्पाद और सेवाओं का निर्माण तथा सुपुर्दगी करने हेतु निविष्टियों को लगाते हैं जो उनकी कार्यकुशलता और उत्पादकता को प्रभावित करती हैं।

9.5 उपर्युक्त पृष्ठभूमि में, इस अध्याय में भारत में बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता, उत्पादकता और वित्तीय सुदृढ़ता का मूल्यांकन किया गया है। इस अध्याय का केंद्रबिन्दु इस बात का निर्धारण करना है कि क्या बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता और उत्पादकता में सुधारोत्तर अवधि में वृद्धि हुई है और यदि वैसा है, तो वह किस सीमा तक हुई है। भारतीय बैंकिंग प्रणाली की उत्पादकता और कार्य-कुशलता की अन्य देशों, विशेषकर उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) वाले देशों के साथ तुलना भी की गई है। कार्य-कुशलता की तीन भिन्न-भिन्न आयामों, यथा - स्वामित्व (सार्वजनिक बनाम निजी), आकार (छोटे बनाम बड़े) और कार्यकलाप (विशिष्टीकरण बनाम विविधीकरण) के साथ जांच भी की गई है।

9.6 इस अध्याय को आठ खंडों में संगठित किया गया है। खण्ड II में कार्य-कुशलता और उत्पादकता की माप के सम्बन्ध में कुछ संकल्पनात्मक मुद्दे निर्धारित किए गए हैं। खण्ड III में लेखांकन उपायों और वित्तीय अनुपातों के आधार पर बैंकिंग क्षेत्र के साथ-साथ बैंकों की

समूह-वार उत्पादकता और कार्य-कुशलता का मूल्यांकन किया गया है। जहां कहीं भी संभव हुआ, अन्य देशों के साथ तुलना भी की गई है। निवल ब्याज मार्जिन (एनआइएम), जो बैंकों की आय का मुख्य स्रोत होता है, को प्रभावित करने वाले कारकों का भी मूल्यांकन किया गया है। खण्ड IV में आर्थिक उपायों की दृष्टि से उत्पादकता और कार्य-कुशलता को मापा गया है तथा सम्पूर्ण भारतीय बैंकिंग क्षेत्र के साथ-साथ बैंकों की समूह-वार कार्य-कुशलता के निर्धारक तत्त्वों का पता लगाने का भी प्रयास किया गया है। एक ओर कार्य-कुशलता और दूसरी ओर स्वामित्व, आकार और विविधीकरण के बीच सम्बन्धों को भी इस खण्ड में विश्लेषित किया गया है। खण्ड V में जोखिम भारित आस्ति की तुलना में पूंजी का अनुपात (सीआरएआर) और आस्ति की गुणवत्ता की दृष्टि से बैंकिंग क्षेत्र की वित्तीय सुदृढ़ता का मूल्यांकन किया गया है। इसमें कार्य-कुशलता और वित्तीय सुदृढ़ता के बीच विद्यमान सम्बन्धों के निर्धारण का भी प्रयास किया गया है। खण्ड VI में उन कारकों की व्याख्या की गई है, जिनके फलस्वरूप पिछले वर्षों में कार्य-कुशलता में वृद्धि हुई है। आगे के मार्ग के रूप में खण्ड VII में उन मुद्दों को रेखांकित किया गया है, जिनका बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता, उत्पादकता और वित्तीय सुदृढ़ता में और अधिक सुधार लाने की दृष्टि से निराकरण किया जाना आवश्यक है। खण्ड VIII में इस विश्लेषण से उठने वाले प्रमुख मुद्दों को सारांशीकृत किया गया है।

II. उत्पादकता और कार्य-कुशलता की माप : कुछ संकल्पनात्मक मुद्दे

9.7 उत्पादकता से आशय है किसी आर्थिक इकाई की एक विशिष्ट निविष्टि और प्रौद्योगिकी की सहायता से अधिकतम संभाव्य उत्पादन करने की सामर्थ्य और इच्छा (कालीराजन और चांद, 1994)। प्रति इकाई निविष्टि उत्पादन जितना ही अधिक होगा, उत्पादकता उतनी ही अधिक होगी। दूसरी ओर कार्य-कुशलता में बैंक के कार्य-निष्पादन को सीमा के भीतर अथवा सीमा-पार उद्योग के अग्रगण्य बैंक के साथ मानकीय रूप में तुलना करते हुए मापा जाता है। यद्यपि, सामान्यतया, यह आशा की जाती है कि उत्पादकता और कार्य-कुशलता में सहवर्ती उतार-चढ़ाव होगा, तथापि इन दोनों मापों की दृष्टि से किसी बैंक के अंक में वास्तविक रूप में भिन्नता होगी। जहाँ किसी बैंक की उत्पादकता में एक अवधि के दौरान बढ़ोत्तरी होगी, वहीं उसकी उत्पादकता में हुई वृद्धि के उद्योग के सर्वश्रेष्ठ कार्यनिष्पादक की तुलना में कम होने पर उसकी कार्य-कुशलता के अंक में गिरावट आ सकती है (बॉक्स IX.1)।

9.8 किसी आर्थिक पाठ्यपुस्तक में किसी विशिष्ट फर्म के मामले के ठीक विपरीत, बैंक कोई निश्चित उत्पाद या उत्पादन का निर्माण नहीं करता - इसके बजाय वह एक बहु-उत्पाद उत्पादक इकाई होता है। अतः, किसी विशिष्ट विनिर्माण फर्म की उत्पादकता को मापने वाला सामान्य मापदंड बैंकों के मामले में सहजता से नहीं लागू किया जा सकता। बैंकिंग इकाइयों की उत्पादकता और कार्य-कुशलता को मापने के लिए आवश्यक विशिष्ट पद्धतियां मोटे तौर पर दो प्रकार की होती हैं, यथा - लेखांकन माप और आर्थिक माप। लेखांकन मापों से आशय है विविध प्रकार के ऐसे वित्तीय अनुपात जो किसी बैंकिंग इकाई के कार्य-निष्पादन अथवा उसकी उत्पादकता को मापने के लिए किसी एक या उससे अधिक उत्पादनों और उनसे संबंधित निविष्टियों पर बल देते हैं। एक मानदंडीय संकल्पना के रूप में कार्य-कुशलता को देश के भीतर अथवा उसके बाहर विद्यमान उत्तम परंपराओं के समक्ष इन अनुपातों का उपयोग करते हुए यथा मूल्यांकित बैंक के कार्य-निष्पादन से तुलना करके मापा जा सकता है।

बॉक्स IX.1
उत्पादकता और कार्य-कुशलता - सूक्ष्म भेद

लेखांकन मापों के रूप में बेहतर ढंग से ज्ञात उत्पादकता के मानक मापों में यह मानते हुए कि अन्य परिवर्ती कारक, प्रौद्योगिकी और संस्थाएं (औसत उत्पादकता) अपरिवर्तित रहते हैं, किसी एकल निविष्टि में प्रति इकाई उत्पादन में आए परिवर्तन की गणना शामिल होती है। प्रति कर्मचारी कारोबार, प्रति कर्मचारी लाभ, औसत आस्ति की तुलना में परिचालन लागत के औसत अथवा कर्मचारी व्यय की तुलना में परिचालनगत आय के अनुपात का उपयोग प्रायः बैंकिंग क्षेत्र में उत्पादकता के परंपरागत मापों के रूप में किया जाता है। उत्पादकता में परिवर्तन की इन मानक संकल्पनाओं में कार्य-कुशलता और उत्पादकता के बीच विद्यमान सूक्ष्म भेद मिट जाता है। हालांकि, कुल उपादान उत्पादकता (टीएफपी) जैसे उत्पादकता के सकल मापों के विकास ने उत्पादन में परिवर्तन को दो महत्त्वपूर्ण संघटकों, यथा - कार्यकुशलता में परिवर्तन के कारण उत्पादन में परिवर्तन और प्रौद्योगिकी में हुए परिवर्तन के कारण उत्पादन में परिवर्तन में विसमुच्चयन को संभव बना दिया है। जहां कार्य-कुशलता में परिवर्तन में निविष्टि में बढ़ोत्तरी के बिना उत्पादन में वृद्धि अथवा उत्पादन में कमी लाए बिना निविष्टियों में कमी को मापता है, वहीं प्रौद्योगिकी में आया परिवर्तन उत्पादन में आए उस परिवर्तन का द्योतक होता है, जो नवोन्मेषों (तकनीकी प्रगति), आघातो (वित्तीय संकट), बाज़ार के ढांचे में परिवर्तन (विलयन और अभिग्रहण के कारण अधिक संकेन्द्रण) और विनियामक नीतियों (वित्तीय अविनियमन) के फलस्वरूप आता है। अधिक तकनीकी रूप से कार्य-कुशलता में परिवर्तन उत्पादन कार्यों (लक्ष्य के अनुरूप होने या पिछड़ जाने) से सम्बद्ध उतार-चढ़ाव होता है, जबकि प्रौद्योगिकी में परिवर्तन उत्पादन कार्यों में बदलाव से सम्बन्धित होता है (परिशिष्ट IX.1 देखें)। दूसरे शब्दों में, कार्यकुशलता की संकल्पना इस बात से सम्बन्धित होती है कि कोई बैंक वर्तमान उत्पादन संभावनाओं की सीमारेखा की तुलना में उसके संसाधनों का कितनी अच्छी तरह से उपयोग करता है। इसलिए, बैंकिंग कार्य-कुशलता का विश्लेषण अन्तः क्षेत्रीय तुलनाओं पर निर्भर करती है, उसमें प्रौद्योगिकीय और सापेक्ष मूल्य-निर्धारण, दोनों ही पहलुओं का समावेश होता है तथा इसमें उत्पादकता सम्बन्धी कार्य-निष्पादन का विश्लेषण किए जाने हेतु आंशिक संकेतक मूल्य का भी समावेश होता है। दूसरी ओर उत्पादकता की संकल्पना से सम्पूर्ण क्षेत्र का कार्य-निष्पादन अभिप्रेत है, तथा उसमें कार्य-कुशलता और प्रौद्योगिकीय उन्नतियों में औसत माप में हुए परिवर्तनों का भी प्रभावी ढंग से समावेश होता है (ओस्टर और ऐन्टिओक, 1995)।

सन्दर्भ :

ओस्टर, ए. और एल ऐन्टिओक, 1995 ''मेज़रिंग प्रॉडक्टिविटि इन दि आस्ट्रेलियन बैंकिंग सेक्टर'', रिज़र्व बैंक ऑफ आस्ट्रेलिया ।

9.9 लेखांकन माप के मामले में विविध प्रकार के अनुपातों की गणना की जाती है और उनमें से प्रत्येक का सम्बन्ध बैंक गतिविधि के किसी विशिष्ट पहलू से होता है। चूंकि बैंकिंग उद्योग बहु-विध उत्पादों का निर्माण करने के लिए बहुविध निविष्टियों का उपयोग करता है, इसका एक सुस्पष्ट अनुमान लगाना हमेशा संभव नहीं हो सकता। इस परिसीमा पर नियंत्रण पाने के उद्देश्य से किसी बैंकिंग इकाई की कुल उपादान उत्पादकता की गणना करने के लिए ऐसी वैकल्पिक तकनीकें अपनाई जाती हैं, जिनमें एक ही माप में बैंकिंग परिचालनों के सभी पहलुओं का समावेश हो जाता है। ये तकनीकें, जिन्हें आम तौर पर आर्थिक माप कहा जाता है, मोटे तौर पर दो प्रकार की होती हैं - उत्पादन कार्य संबंधी विनिर्देश के आधार पर प्राचलीय पश्चगमन और वैकल्पिक रूप से गैर-प्राचलीय दृष्टिकोण (परिशिष्ट IX.1)।

9.10 इस विषय पर विशालकाय साहित्य मौजूद है, जो बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता और उत्पादकता को मूल्यांकित करने की वैकल्पिक पद्धतियों पर प्रकाश डालता है (बॉक्स IX.2)।

III. भारत में बैंकिंग क्षेत्र की उत्पादकता और कार्य-कुशलता की माप - लेखांकन माप

9.11 इस अध्याय में भारत में बैंकिंग क्षेत्र की उत्पादकता और कार्य-कुशलता को लेखांकन मापों और आर्थिक मापों, दोनों ही का उपयोग करते हुए मापा गया है। जहाँ लेखांकन माप समग्र कार्य-कुशलता के स्तर को निर्धारित करने वाले अलग-अलग मानदंडों की दृष्टि से बैंक के कार्य-निष्पादन का विसमुच्चयित और तीक्ष्ण विश्लेषण करने में समर्थ बनाते हैं, वहीं आर्थिक माप प्रत्येक बैंक की तुलना उद्योग के सर्वश्रेष्ठ कार्य-निष्पादक की कार्यकुशलता और उत्पादकता से करते हुए एक संमिश्र और सुस्पष्ट अनुमान उपलब्ध कराते हैं। इस खण्ड में उत्पादकता और कार्य-कुशलता का निर्धारण लेखांकन मापों का उपयोग करते हुए किया गया है, जबकि आर्थिक मापों के आधार पर मूल्यांकन अगले खण्ड में किया गया है।

9.12 किसी बैंकिंग इकाई की कार्य-कुशलता और उत्पादकता का मूल्यांकन करने के लिए अन्य बातों के साथ ही मध्यस्थता लागत, ब्याजगत अंतर, परिचालन व्यय, आय की तुलना में लागत का अनुपात, आस्तियों पर प्रतिलाभ, इक्विटी पर प्रतिलाभ, प्रति कर्मचारी कारोबार, प्रति कर्मचारी आय और प्रति कर्मचारी कारोबार कुछ सामान्य तौर पर प्रयुक्त होने वाले लेखांकन माप हैं। यद्यपि इनमें से प्रत्येक अनुपात उत्पादकता कार्य-कुशलता का संकेतक होता है तथा वह बैंकिंग की कार्यप्रणाली के कुछ पहलुओं का द्योतक होता है, किसी बैंकिंग इकाई के कार्यनिष्पादन के सम्बन्ध में अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए इसका अन्य अनुपातों के साथ सन्निधान किया जाना आवश्यक होता है (बॉक्स IX.3)।

कुल आस्तियों की तुलना में परिचालन लागत

9.13 यह अनुपात आस्ति की प्रति इकाई पर खर्च हुई परिचालन लागत की रकम का संकेत करता है। किसी बैंक द्वारा उसकी श्रम शक्ति और शाखाओं तथा 'बैक आफिस' परिचालनों को युक्तियुक्त करते हुए लागत में कमी लाने के लिए किए जाने वाले प्रयासों को इस अनुपात में प्रतिबिंबित कर लिया जाना चाहिए। यह अनुपात जितना ही बड़ा होगा, कार्यकुशलता उतनी ही कम होगी। इस अनुपात का उपयोग कुछ अनुसंधानकर्ताओं द्वारा बैंकिंग प्रणाली की मध्यस्थता लागत को निरूपित करने हेतु भी किया जाता है। इस प्रकार के उपयोग का तर्क इस तथ्य में निहित होता है कि अन्ततः बैंक इन परिचालन लागतों का उपयोग अपनी उपलब्ध निधियों (अर्थात जमाराशियों) से आस्ति (अर्थात ऋण) सृजन करने में ही करते हैं। परिचालन लागत में कमी का परिणाम अन्ततः उधार देने की दरों में तथा निवल ब्याजगत मार्जिन में भी कमी के रूप में सामने आता है जिससे ऋण का अपेक्षाकृत अधिक उठाव सुगम हो जाता है और इसलिए आर्थिक वृद्धि संभव होती है (भिडे, प्रसाद और घोष, 2002)। बासेल II मानदंडों के अनुसार कम से कम आस्ति की तुलना में बैंकों का लागत अनुपात लगभग एक प्रतिशत होना चाहिए (घोष, सी.आर. और अन्य, 2004)।

9.14 कुल मिलाकर भारतीय बैंकिंग उद्योग के आस्ति की तुलना में लागत अनुपात के स्तर में क्रमिक और लगभग स्थायी गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई देती है, जो 1995-96 के 2.93 प्रतिशत के शीर्ष स्तर से घटकर 2006-07 में 1.91 प्रतिशत रह गई। हालांकि, अलग-अलग बैंक समूहों में यह प्रवृत्ति अलग-अलग थी। निजी क्षेत्र के नए बैंकों की आस्ति की तुलना में लागत अनुपात, जिसमें 1997-98 और 2001-02 के बीच की अवधि में तीव्र गति से कमी आई थी, 2002-03 और उसके बाद में क्रमिक रूप से बढ़ गया। हालांकि, अन्य सभी बैंक समूहों से संबंधित अनुपात, जो 1990 वाले दशक में सामान्य रूप से बढ़ गया था, 2000 वाले दशक में कम हो गया। सम्पूर्ण अवधि अर्थात 1991-92 और 2006-07 के बीच की अवधि में जहाँ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के अनुपात में कमी आई, वहीं विदेशी बैंकों और निजी बैंकों के मामले में यह बढ़ गया (सारणी 9.1)।

9.15 वर्ष 2001-02 में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की कुल आस्तियों की तुलना में परिचालन लागत में आई तीव्र गिरावट कार्यबल के युक्तिकरण के कारण थी। भारतीय स्टेट बैंक और राष्ट्रीयकृत बैंकों ने 2000-01 के दौरान स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना लागू की थी, जिसका 2001-02 में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के आस्ति की तुलना में लागत अनुपात पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव हुआ। वर्ष 2006-07 के दौरान परिचालन व्ययों में आई तीव्र गिरावट को पिछले वर्षों की तुलना में मजदूरी बिल में हुई अपेक्षाकृत कम वृद्धि के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है, क्योंकि हाल के वर्षों में बैंक कई प्रकार के नेमी स्वरूप वाले क्रियाकलापों की भी आउटसोर्सिंग कराने की ओर प्रवृत्त हुए हैं। निजी क्षेत्र के नये बैंकों के मामले में अनुपात में हुई वृद्धि, जो 1990 वाले दशक के उत्तरवर्ती दिनों में आरंभ हुई थी, शाखा नेटवर्क में विस्तार तथा प्रौद्योगिकीय श्रेणी उन्नयन पर व्यय और आधारभूत सुविधाओं के निर्माण को प्रतिबिंबित करती है। नये निजी क्षेत्र वाले तथा विदेशी बैंकों ने प्रौद्योगिकी उन्नयन पर भारी रकमें निवेशित कर रखी हैं, जिसका बेहतर उपभोक्ता समर्थन उपलब्ध कराने और दीर्घकाल तक आस्ति प्रबंधन करने हेतु प्रौद्योगिकी से लाभ उठाने पर चमत्कारिक प्रभाव हुआ (डिसूजा, 2002), यद्यपि अल्पकालिक तौर पर परिचालन लागत बढ़ गई। यह स्थिति विदेशी बैंकों के मामले में अर्जन आस्तियों की तुलना में निरंतर बढ़ती गैर-श्रमिक लागत अनुपात से प्रमाणित हो

बॉक्स IX.2
उत्पादकता और कार्य-कुशलता : विविध देशों के अनुभवजन्य साक्ष्य

प्रारंभ में, कार्य-कुशलता से संबंधित अध्ययन इस सुस्पष्ट धारणा के तहत कि बैंक तकनीकी रूप से तथा निर्धारित रूप से कार्यकुशल होते हैं पैमाने (आकार) और प्रसार (उत्पाद संमिश्र) की किफायतों का पता लगाने तक ही सीमित हुआ करते थे (बर्जर और हम्फ्री, 1997)। हालांकि, वित्तीय वैश्वीकरण और नये उत्पादों के विकास की पृष्ठभूमि में बैंकिंग के ढांचे में आए आमूल-चूल परिवर्तन के फलस्वरूप एक व्यापक आम राय यह बनी कि तकनीकी कार्य-कुशलता में अन्तरों पूर्णतया उत्पादन की गलत माप और प्रसार का परिणाम नहीं हो सकते (बर्जर और हम्फ्री, 1997)।

इस संभावना का पता लगाने के लिए कि शाखा नेटवर्क बैंकों की लागतपरक कार्य-कुशलता में योगदान करता है अथवा नहीं अमरीकी बैंकिंग उद्योग में व्यापक अनुभवजन्य कार्य उपलब्ध हैं। किन्तु इस सम्बन्ध में उपलब्ध साक्ष्य अनिर्णायक ही हैं। अमरीकी बैंकिंग क्षेत्र के सम्बन्ध में 5,548 बैंकों के नमूने वाले एक व्यापक कार्य से यह पता चलता है कि शाखा नेटवर्क के परिचालन, चाहे वह घरेलू हो या फिर विदेशी, ने अपेक्षाकृत अधिक लागतपरक अकुशलता में योगदान किया है (कापार्किस और अन्य 1994) दूसरी ओर, अमरीकी बैंकिंग क्षेत्र से सम्बन्धित एक अन्य अध्ययन में इस बात का उल्लेख है कि शाखा बैंकों और गैर-शाखा वाली बैंकिंग इकाइयों के बीच कार्यकुशलता में कोई महत्त्वपूर्ण अंतर नहीं था और समग्र तथा तकनीकी कार्यकुशलता उत्पाद की विविधता से नकारात्मक रूप से सम्बन्धित थी और शहरीकरण की सीमा से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित थी।

इसी प्रकार, जहाँ तक बैंकों की कार्य-कुशलता पर अविनियमन के प्रभाव का सम्बन्ध है, इस सम्बन्ध में भी आमराय पूर्ण से कम ही है। 88 स्पैनिश बैंकों और 55 बचत बैंकों के 1985-91 की अवधि वाले अलग-अलग पैनलों पर आधारित एक अध्ययन में इस मुद्दे को रेखांकित किया गया है कि अविनियमन वाणिज्यिक बैंकों के मामले में तुलनात्मक लागतपरक कार्यकुशलता में कमी से जुड़ा था, किन्तु बचत बैंकों के मामले में इसके कारण कोई परिवर्तन नहीं हुआ (क्यूर्टा, रैंड ओरिया, एल 2002)। इसके अलावा, तुर्की के वाणिज्यिक बैंकों के सम्बन्ध में 1988 से 1999 तक की अवधि वाले डेटा पर्यावरण विश्लेषण अपनाते हुए किए गए एक अध्ययन से यह पता चला कि अविनियमन की अवधि में बैंकों की भारी अकुशलता का अनुभव हुआ। दूसरी ओर, भारतीय बैंकिंग क्षेत्र से सम्बन्धित कुछ अध्ययनों से यह पता चलता है कि अविनियमन, जिसमें शुल्क आधारित क्रियाकलापों में विविधीकरण की अनुमति दी गई थी तथा शाखाएं खोलने हेतु मानदंडों को शिथिल किया गया था, ने कार्यकुशलता और उत्पादकता की वृद्धि में योगदान किया है (भट्टाचार्य, भट्टाचार्य और कुंभकार, 1997)। इसी प्रकार, 1981 से 90 तक की अवधि हेतु किए गए तुर्की के बैंकों से सम्बन्धित एक अध्ययन में यह पाया गया कि अविनियमन के बाद उत्पादकता में महत्त्वपूर्ण से सुधार हुआ, किन्तु वह तकनीकी उन्नति की बजाय मुख्यतः अकुशल बैंकों द्वारा सर्वश्रेष्ठ बैंकों के अनुरूप होने की दिशा में किए गए प्रयासों द्वारा प्रेरित थी। इसके अलावा, तुलनपत्र में शामिल न की जाने वाली मदों जैसे गैर-परम्परागत क्रियाकलापों को अलग कर दिए जाने के कारण सम्पूर्ण उद्योग की औसत कार्य-कुशलता और उत्पादकता के अंकों में महत्त्वपूर्ण रूप से कमी आ गई।

जहाँ तक विविधीकरण के प्रभाव का सम्बन्ध है, उसके सम्बन्ध में कमोबेश आम राय है। 1985 से लेकर 1990 तक की अवधि हेतु 86 वाणिज्यिक बैंकों के समावेश वाले एक पैनल अध्ययन में यह पाया गया कि विविधीकरण के परिणामस्वरूप अमरीकी वाणिज्यिक बैंकिंग उद्योग में मोटे तौर पर 1 प्रतिशत का समग्र आर्थिक अभिलाभ दर्ज हुआ है। इसी प्रकार 1981 से लेकर 1992 तक की अवधि हेतु ताइवान के 22 देशी बैंकों, जिनमें से 11 सार्वजनिक बैंक थे, के समावेश वाले एक पैनल ने यह अभिज्ञात किया कि ताइवान के बैंकिंग उद्योग में माप (आकार) और प्रसार (स्कोप) दानों ही प्रकार की किफायतें अस्तित्व में थीं।

दो विविध देशीय अध्ययन भी हैं, जिनमें विभिन्न देशों के बैंकिंग उद्योग की तुलनात्मक कार्य-कुशलता के स्तरों का मूल्यांकन किया गया है । यूरोपीय आयोग ने 1987 से 94 तक की अवधि हेतु यूरोपीय संघ के सभी प्रमुख बैंकिंग क्षेत्रों के लिए एक समूहित समय श्रृंखला लागत सीमा का अनुमान लगाया। कुल मिलाकर उक्त अध्ययन में 20 प्रतिशत की औसत उत्पादकता अकुशलताएं पाई गईं। एक अलग देश के स्तर पर लक्ज़मबर्ग के बैंक अपेक्षाकृत अधिक कार्य-कुशल पाए गए। 1992 में 8 यूरोपीय देशों के मामले में उत्पादकता, कार्य-कुशलता और प्रौद्योगिकी में विद्यमान अंतरों पर किए गए एक व्यापक अध्ययन में यह बताया गया है कि फ्रान्स, स्पेन और बेल्जियम (क्रमशः 0.95, 0.82 और 0.81 कार्य-कुशलता अंकों के साथ) सर्वाधिक कुशल बैंकिंग क्षेत्र वाले देश पाए गए, जबकि इंग्लैंड (0.54) आस्ट्रिया (0.61) और जर्मनी (0.65) सबसे कम कुशल देश पाए गए।

कुछ अध्ययनों में इस बात को प्रलेखित किया गया है कि लागतपरक कार्य-कुशलता किस प्रकार से बैंकिंग प्रणाली की सुरक्षा और वित्तीय सुदृढ़ता को विशेष रूप से बढ़ा सकती है। वास्तव में बर्जर और डि यंग ने समस्यामूलक ऋणों और आस्ति की गुणवत्ता के बीच विद्यमान एक दोहरी हेतुकता - जो कैमेल्स रेटिंग के तहत सुरक्षा और वित्तीय सुदृढ़ता का एक अपरिष्कृत संकेतक है - तथा 1985 और 1994 के बीच वाली अवधि के दौरान अमरीकी बैंकों के मामले में लागतपरक कार्य-कुशलता का पता लगाया है।बाहरी घटनाओं के कारण निर्मित अनर्जक ऋण बैंकों पर अतिरिक्त परिचालन लागत थोप सकते हैं।

अनुभव के आधार पर सिद्ध हो गया है कि डेटा पर्यावरण विश्लेषण से प्राप्त कार्यकुशलता अंकों का प्रयोग करते हुए प्रबन्धन की गुणवत्ता के एक परोक्षी के रूप में बैंक की विफलता की भविष्यवाणी कैसे की जा सकती है। यह पाया गया कि अधिक कार्य-कुशलता अंक प्राप्त करने वाले बैंकों के कम अंक पाने वाले बैंकों की तुलना में अपना अस्तित्व बनाए रखने की संभावना काफी अधिक होती है (बर्र और साइम्स, 1996)।

एक अन्य अध्ययन ने चेकोस्लोवाकिया में वाणिज्यिक बैंकों में विद्यमान प्रबन्धकीय समस्याओं की समय-पूर्व चेतावनी के लिए लागतपरक कार्यकुशलता की नियमित छानबीन किए जाने की अत्यधिक प्रासंगिकता को वैध बना दिया है। इसने लागतपरक कार्यकुशलता और बैंक विफलता के जोखिम के बीच नकारात्मक और महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध की पुष्टि कर दी है। इसे ध्यान में रखते हुए बैंकिंग की कार्य-कुशलता और उत्पादकता के मूल्यांकन को प्रारंभिक महत्त्व प्राप्त हो जाता है (पॉडपियरा और पॉडपियरा, 2005)।

संदर्भ :

बर्र, आर और टी. साइम्स, 1996 : ''बैंक फेल्योर प्रिडिक्शन यूजिंग डी.ई ए टु मेजर मैनेजमेंट क्वालिटी,'' फेडरल रिज़र्व बैंक ऑफ डल्लास वर्किंग पेपर।

बर्जर, ए.एन. और डी.बी. हम्फ्री, 1997, ''इफिसियेन्सी ऑफ फाइनैन्सियल इंस्टीट्यूशन्स : इंटरनेशनल सर्वे एण्ड डाइरेक्शन्स फॉर फ्यूचर रिसर्च,'' यूरोपियन जर्नल ऑफ ऑपरेशनल रिसर्च, 98 : 175-212।

बर्जर, ए.एन. और आर. डि यंग, 1997, ''प्रॉब्लम लोन्स एण्ड कॉस्ट एफिशिएन्सी इन कॉमर्शियल बैंक्स,'' फेडरल रिजर्व बोर्ड फाइनैन्स एण्ड इकॉनॉमिक्स डिस्कशन सिरीज 8।

भट्टाचार्य, अंजना, अरुणवा भट्टाचार्य और सुबल सी. कुंभकार, 1997, ''चेन्जेज इन इकॉनॉमिक रेजीम एण्ड प्रॉडक्टिविटि ग्रोथ; ए स्टडी ऑफ इण्डियन पब्लिक सेक्टर बैंक्स,'' जर्नल ऑफ कम्पेरेटिव इकॉनॉमिक्स, 25(2) : 196-219।

क्यूर्टा, आर. और एल.ओरिया, 2002, ''मर्जर्स एण्ड टेक्निकल एफिशिएन्सी इन स्पैनिस सेविंग्स बैंक्स,: ए स्टॉकैस्टिक डिस्टैन्स फंक्शन एप्रोच,'' जर्नल ऑफ बैंकिंग एण्ड फाइनैन्स, 26(12) 2231-2247।

पॉडपियेरा, ए. और जे. पॉडपियेरा, 2005, ''डिटीरिओरेटिंग कॉस्ट एफिशिएन्सी इन कमर्शियल बैंक्स सिग्नल्स ऐन इनक्रीजिंग रिस्क ऑफ फेल्योर,'' सीएनबी वर्किंग पेपर सिरीज, दिसम्बर।

बॉक्स IX.3
अनुपात विश्लेषण का विश्लेषणात्मक ढांचा

बैंकिंग क्षेत्र में कार्य-कुशलता और उत्पादकता के विश्लेषण हेतु अपनाया जाने वाला एक सामान्य दृष्टिकोण है अनुपात विश्लेषण, जिसके द्वारा किसी बैंकिंग इकाई के कार्य-निष्पादन की जांच कुछ प्रमुख मानदंडों तथा आय की तुलना में लागत के अनुपात, प्रति कर्मचारी कारोबार, प्रति शाखा कारोबार आदि जैसे अनुपातों के अनुसार की जाती है। हालांकि, यह देखा जा सकता है कि उक्त विश्लेषण में पूर्वापरता अपनाई जाती है और इनमें से प्रत्येक अनुपात अन्तर-सम्बद्ध होते हैं। उदाहरण के लिए आय की तुलना में लागत अनुपात को बैंक की समग्र कार्यकुशलता का माप कहा जा सकता है। यह इस बात का संकेत होता है कि बैंक अपना समग्र परिचालन कितनी कुशलता से संचालित करता है। आय के अलग-अलग घटकों को लेकर और उन्हें उनके सम्बद्ध लागत घटकों के साथ जोड़ने पर विभिन्न क्रियाकलापों में बैंक की सक्षमता का पता चलेगा अथवा उसके प्रति अन्तर्दृष्टि प्राप्त होगी। जमा संग्रहण और ऋण सृजन बैंकिंग कारोबार के मुख्य अंग होते हैं। इसलिए मध्यस्थता लागत, जो ऋण की आय को जमा लागत से जोड़ती है, बचतकर्ताओं से जमाराशियां जुटाने तथा उसे प्रयोक्ता समूहों को उधार देने के बैंक के मुख्य कार्य में उसकी कार्यकुशलता को उजागर करेगी। इसी प्रकार, सरकारी और गैर-सरकारी प्रतिभूतियों में बैंक के निवेश को या तो घरेलू स्तर पर या फिर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जुटाई गई उधार ली गई निधियों से उद्भूत हुआ परिकल्पित किया जा सकता है। निवल ब्याजगत मार्जिन अनुपात इस बात का संकेत करता है कि बैंक आस्ति देयता असंतुलन से उद्भूत होने वाली अपनी आर्थिक जोखिमों का कितनी कुशलता से प्रबंधन करते हैं।

जहाँ तक गैर-निधिक अथवा शुल्क आधारित क्रियाकलापों का सम्बन्ध है, किसी विशिष्ट डेस्क से सम्बन्धित मामलों की देखरेख करने वाले बैंक कर्मचारियों के वैयक्तिक कौशल और उनकी व्यावसायिक कुशाग्रता महत्त्वपूर्ण होती है। हालांकि, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि कार्मिकों को उसी समूह को निधि और गैर-निधि आधारित, दोनों ही प्रकार के क्रियाकलापों को संभालने में लगाया जा सकता है, किसी बैंक द्वारा उसके शुल्क आधारित क्रियाकलापों को संभालने वाले कार्मिकों के सम्बन्ध में वहन किए जाने वाले खर्च को अलग करना कठिन होता है। इस प्रकार, इस तीसरे प्रकार के कारोबार में बैंकों की कार्य-कुशलता को मोटे तौर पर ब्याजगत आय अथवा कुल आय की तुलना में गैर-ब्याजगत आय के अनुपात के अनुसार मापा जाता है। बैंक प्रायः कुल लाभ में प्रत्येक बैंकिंग क्रियाकलाप के योगदान की गणना करने हेतु अंतरण मूल्य-निर्धारण व्यवस्था अपनाते हैं।

आय दो कारकों पर निर्भर करती है - यथा, कारोबार का आकार अथवा ऋण की मात्रा अथवा निवेश संविभाग और मूल्य अथवा उधार दरें अथवा निवेश की प्रति इकाई पर ब्याज/लाभांश/पूंजीगत अभिलाभ। इस प्रकार उप-क्रियाकलापों में बैंक की सक्षमता का पता लगा लिए जाने के बाद, उसकी कार्य-कुशलता को उसकी निविष्टियों, अर्थात प्रति कर्मचारी कारोबार अथवा प्रति शाखा कारोबार, की प्रत्येक इकाई पर कारोबार की समग्र मात्रा की दृष्टि से देखा जा सकता है। अन्त में, इसे आस्ति की प्रति इकाई से प्रतिलाभ अथवा इक्विटी पर प्रतिलाभ जैसे लाभप्रदता अनुपातों द्वारा ज्ञात किया जा सकता है।

जाती है, जो उद्योग के स्तर से काफी अधिक है। इसके अलावा, विदेशी बैंक आकर्षक वेतन और सुविधाओं की सहायता से उद्योग की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को आकर्षित करते रहे हैं। उन्होंने अपने कार्यबल को टिकाए रखने के लिए प्रशिक्षण और मानव संसाधन प्रबंधन रणनीतियों पर संसाधनों की उल्लेखनीय मात्रा निवेशित कर रखी है, जिससे उनकी श्रम लागत में इसके बाद यथावर्णित ढंग से वृद्धि हो गई है।

सारणी 9.1 : भारत में वाणिज्य बैंकों की कुल आस्तियों की तुलना में परिचालन लागत

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	2.48	2.67	2.60	2.97	*	2.97	2.61	2.26	2.59
1992-93	2.64	2.64	2.64	2.71	*	2.71	2.64	2.70	2.65
1993-94	2.66	2.64	2.65	2.49	*	2.49	2.64	2.65	2.64
1994-95	2.95	2.76	2.83	2.35	*	2.35	2.80	2.72	2.79
1995-96	3.09	2.93	2.99	2.63	1.82	2.47	2.95	2.77	2.93
1996-97	2.94	2.85	2.88	2.49	1.94	2.36	2.83	3.04	2.85
1997-98	2.68	2.65	2.66	2.30	1.76	2.14	2.60	2.98	2.63
1998-99	2.70	2.63	2.65	2.22	1.74	2.04	2.59	3.39	2.65
1999-2000	2.46	2.56	2.52	2.18	1.42	1.85	2.43	3.11	2.48
2000-01	2.66	2.76	2.72	1.98	1.75	1.87	2.60	3.05	2.64
2001-02#	2.11	2.40	2.29	2.08	1.12	1.45	2.13	3.00	2.19
2002-03	2.11	2.33	2.25	2.04	1.95	1.99	2.20	2.78	2.24
2003-04	2.21	2.21	2.21	1.99	2.04	2.02	2.17	2.75	2.21
2004-05	2.14	2.06	2.09	2.02	2.03	2.03	2.08	2.88	2.13
2005-06	2.28	1.93	2.05	2.11	2.11	2.11	2.06	2.94	2.13
2006-07	1.98	1.67	1.77	1.88	2.11	2.06	1.84	2.78	1.91

* : निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त वर्ष से उपलब्ध हुए।

: वर्ष 2001-02 में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की कुल आस्तियों की तुलना में परिचालन लागत में आई तीव्र गिरावट भारतीय स्टेट बैंक और राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा वर्ष 2000-01 के दौरान लागू की गई स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना के कारण थी।

स्रोत : भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियों (भारतीय रिज़र्व बैंक) से परिकलित।

चार्ट IX.1 : कुल आस्तियों की तुलना में परिचालन लागत 2006-07

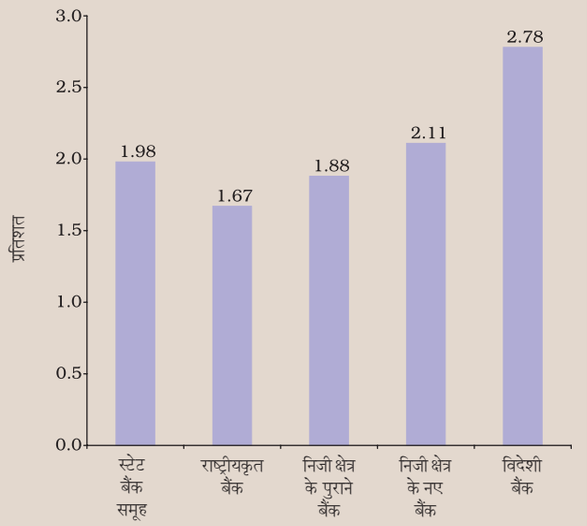

चार्ट IX.2 : कुल आस्तियों की तुलना में तुलनपत्रेतर एक्सपोज़र (मार्च के अंत में)

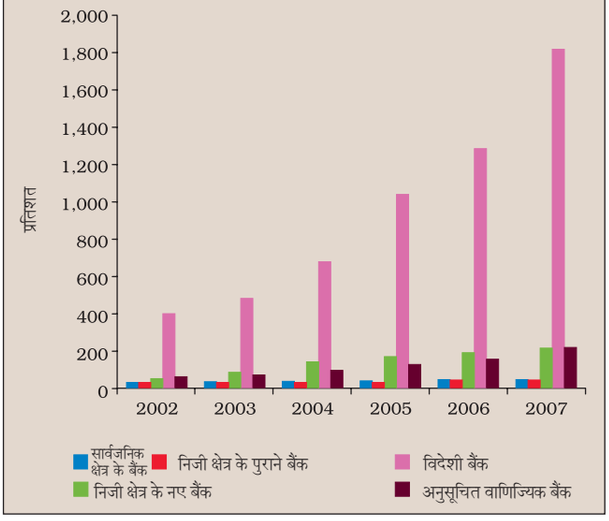

9.16 सभी बैंक समूहों के मामले में आस्तियों की तुलना में लागत के अनुपात की तुलना करने पर यह पता चलता है कि वर्ष 2006-07 के दौरान आस्तियों की तुलना में लागत का अनुपात राष्ट्रीयकृत बैंकों के मामले में सबसे कम था, उसके बाद पुराने निजी बैंकों, स्टेट बैंक समूह और नए निजी बैंकों का क्रम था। विदेशी बैंकों के मामले में यह सर्वाधिक था (चार्ट IX.1)।

9.17 विदेशी बैंकों के मामले में अधिक अनुपात तुलनपत्र में शामिल न की जानेवाली मदों में एक्सपोज़र के कारण कुछ हद तक भ्रामक हो सकता है, जिनमें उनके कुल कारोबार के पर्याप्त अंश का समावेश होता है (चार्ट IX.2)। यद्यपि इस प्रकार के कारोबार में लागत अपरिहार्य होती है, तथापि इसे आस्ति में शामिल नहीं किया जाता, जिसके फलस्वरूप आस्ति की तुलना में परिचालन लागत का अनुपात बढ़ जाता है।

9.18 विभिन्न देशों की तुलना से यह पता चलता है कि कुल आस्तियों की तुलना में परिचालन व्यय के अनुपात में कतिपय उन्नत अर्थव्यवस्थाओं तथा उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में 1999 और 2006 के बीच वाली अवधि में मुख्यतः देश के भीतर और सीमा पार वाले देशों में बढ़ते स्पर्धात्मक दबावों के कारण गिरावट आ गई। यद्यपि भारत में यह अनुपात उन्नत देशों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक था, यह अधिकांश उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्था वाले देशों के साथ अनुकूल रूप से तुलनीय था। जबकि, वर्ष 2006 के दौरान यह अनुपात उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के मामले में सामान्यतया 2 से भी कम था, तथापि यह उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों के मामले में 1.43 से लेकर 7.13 तक के बीच वाली सीमा तक था। इसके अलावा एशिया की उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं में यह अनुपात लातीनी अमरीका और पूर्वी यूरोप के देशों यथा रूस की तुलना में कम था। भारत के मामले में यह अनुपात थाईलैंड, फिलीपीन्स और इंडोनेशिया के साथ अनुकूल रूप से तुलनीय किंतु कोरिया, और चीन के साथ प्रतिकूल रूप से तुलनीय था (सारणी 9.2 और चार्ट IX.3)[1]।

आय की तुलना में लागत अनुपात

9.19 आय की तुलना में लागत अनुपात यह सूचित करता है कि बैंकों द्वारा निधियों को कितने लाभप्रद ढंग से अभिनियोजित किया गया है। यह अनुपात किसी बैंक की उसके व्यय से राजस्व सृजित करने की योग्यता को निरूपित करता है। इसमें तुलन पत्र में शामिल न की जानेवाली मदों से संबंधित परिचालनों का प्रभाव शामिल होता है और इस प्रकार यह आस्ति की तुलना में लागत के अनुपात की अपेक्षा कार्य-कुशलता को मापने का बेहतर माप होता है। समग्र उद्योग के मामले में, आय की तुलना में लागत का अनुपात 1992-93 के 71.89 प्रतिशत के शीर्ष स्तर से कम हो कर 2007 में 50.15 प्रतिशत हो गया (सारणी 9.3)। हालांकि अलग-अलग बैंक समूहों में प्रवृत्तियों में भिन्नता मौजूद थी। जहां विदेशी और निजी क्षेत्र के नए बैंकों के मामले में उक्त अनुपात में बढ़ोत्तरी हुई, वहीं अन्य बैंक समूहों के मामले में यह क्रमिक रूप से कम हो गया।

9.20 इसके फलस्वरूप, विभिन्न बैंक समूहों में अनुपात में अंतर पिछले वर्षों में कम हो गया। वर्ष 2006-07 के दौरान विदेशी बैंकों के मामले में आय की प्रति इकाई लागत सबसे कम बनी हुई है, जिसमें यह ध्वनित होता है कि यह समूह उद्योग का सर्वाधिक कार्य-कुशल समूह है,

[1] तुलनीयता के लिए, इसमें तथा बाद की सभी सारणियों में विभिन्न देशों की तुलना संबंधी भारत के आंकड़े ''बैंक स्कोप'' से लिए गए है। व्याप्ति में अंतर के कारण जरूरी नहीं हैं कि भारत के ये आंकड़े अन्य सारणियों के आंकड़ों से मेल खाएं।

सारणी 9.2 : चुनिंदा देशों में वाणिज्य बैंकों की कुल आस्तियों की तुलना में परिचालन लागत

(प्रतिशत)

देश	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं								
संयुक्त राज्य अमरीका	2.30	2.75	2.82	2.71	2.79	1.65	1.83	1.88
कनाडा	*	3.21	3.29	3.49	3.23	2.98	2.99	2.57
यूके	*	2.38	2.58	2.47	1.34	1.56	1.40	1.39
इटली	3.26	3.23	3.32	3.34	3.43	2.32	1.91	2.30
फ्रांस	1.59	2.02	1.71	1.63	1.57	1.49	1.31	1.37
जर्मनी	1.89	1.94	2.54	2.80	2.37	1.93	1.71	1.59
जापान	2.63	2.35	2.92	2.45	2.28	1.87	1.43	1.48
उभरती अर्थव्यवस्थाएं								
मैक्सिको	11.26	6.29	6.09	5.98	5.49	5.33	5.74	6.02
चिली	4.43	3.63	3.75	3.81	3.46	3.41	3.38	3.16
कोरिया	4.59	4.27	2.86	2.81	3.74	2.88	2.16	2.07
थाईलैंड*	7.70	2.34	1.85	2.69	2.48	2.36	2.28	3.21
फिलीपीन्स	5.52	5.37	3.77	3.84	3.39	3.69	3.81	3.87
मलेशिया	*	2.34	2.82	2.39	2.07	2.06	1.99	1.91
इंडोनेशिया	7.61	2.44	3.45	2.94	3.39	3.31	3.79	3.97
ब्राजील	9.25	7.60	7.27	7.18	7.20	7.35	7.16	7.13
रूसी महासंघ	6.54	4.60	5.15	4.80	4.44	4.70	4.61	5.93
चीन	1.73	1.61	1.58	1.60	1.63	1.56	1.44	1.43
मेमो:								
श्रेणी	**1.59 - 11.26**	**1.61 - 7.60**	**1.58 - 7.27**	**1.60 - 7.18**	**1.34 - 7.20**	**1.49 - 7.35**	**1.31- 7.16**	**1.37 - 7.13**
भारत	**2.99**	**3.43**	**3.06**	**3.30**	**3.40**	**3.42**	**3.22**	**2.97**

*: आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं अथवा यदि उपलब्ध हैं, तो उनके नमूने बहुत छोटे हैं और इसलिए उनके विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया।

स्रोत : बैंक स्कोप।

चार्ट IX.3 : चुनिंदा देशों में बैंकों की औसत आस्तियों की तुलना में परिचालन लागत अनुपात की भूमिका - 2006

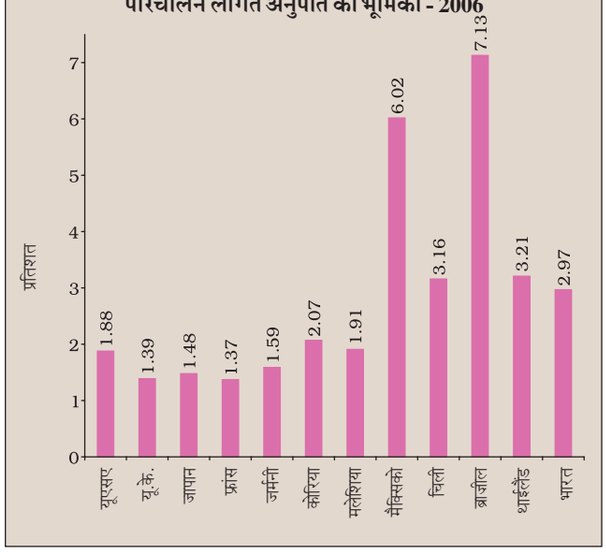

इसके बाद राष्ट्रीयकृत बैंकों और निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों का स्थान था। इस अनुपात की दृष्टि से स्टेट बैंक और निजी क्षेत्र के नए बैंक समूहों को सबसे कम कार्य-कुशल पाया गया (चार्ट IX.4)। अंतरराष्ट्रीय श्रेष्ठ प्रथा मानदंडों के अनुसार, बैंकों को 40 प्रतिशत[2] का लागत-आय अनुपात लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। अतएव, 50.15 प्रतिशत के आय की तुलना में लागत अनुपात के साथ भारत को अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता के स्तर की प्राप्ति तथा श्रेष्ठ प्रथा मानदंडों पर खरे उतरने के लिए काफी कुछ करने की आवश्यकता है।

9.21 यद्यपि आय की तुलना में परिचालन लागत का अनुपात वांछित स्तर से अधिक था, यह उल्लेखनीय है कि भारतीय बैंकों का अनुपात कतिपय उन्नत और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों से अनुकूल रूप से तुलनीय था (चार्ट IX.5)। नमूने में शामिल अधिकांश देशों में, यह अनुपात 50 प्रतिशत से अधिक था। केवल तीन उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (मलेशिया, चीन और कोरिया) में उक्त अनुपात 40 प्रतिशत के आसपास था। चीन आय की तुलना में लागत अनुपात को 1999 और 2006 के बीच वाली अवधि में आधा नीचे लाने में समर्थ हुआ था (सारणी 9.4)।

2 ''स्ट्रैटेजिक मॉडेल्स फॉर रिपोजीशनिंग ऑफ पब्लिक सेक्टर बैंक्स-क्रीएटिंग ग्लोबल विनर्स,'' बैंकॉन 2004 में दर्शाए गए बासेल II मानदण्ड, घोष, सी.आर. और अन्य (2004)।

सारणी 9.3 : भारत में वाणिज्य बैंकों की आय की तुलना में लागत अनुपात

(प्रतिशत)

क्षेत्र	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	47.44	67.51	58.41	58.96	*	58.96	58.44	30.91	55.30
1992-93	59.19	86.35	73.72	66.75	*	66.75	73.32	59.15	71.89
1993-94	64.84	79.09	73.08	57.33	*	57.33	72.02	41.22	68.10
1994-95	60.43	72.65	67.57	52.21	*	52.21	66.49	40.34	63.51
1995-96	59.53	71.98	66.66	54.39	39.42	51.53	65.34	45.36	63.25
1996-97	57.37	69.33	64.31	56.20	38.34	51.31	63.04	45.54	61.00
1997-98	56.85	66.61	62.72	53.80	37.21	48.47	61.14	43.04	58.88
1998-99	62.41	68.29	65.94	65.13	48.69	58.96	65.26	56.61	64.26
1999-2000	58.64	66.25	63.23	54.22	40.22	48.62	61.36	48.35	59.86
2000-01	65.15	68.22	67.01	53.15	50.13	51.75	65.12	49.90	63.37
2001-02	52.11	56.65	54.93	43.47	47.95	45.61	53.53	48.76	53.01
2002-03	48.16	49.97	49.30	43.36	46.08	45.05	48.53	46.35	48.34
2003-04	45.76	45.03	45.30	43.51	49.22	47.13	45.63	42.92	45.38
2004-05	46.74	50.16	48.87	55.76	51.81	53.03	49.60	49.13	49.56
2005-06	51.19	52.69	52.11	58.69	53.97	55.19	52.77	46.79	52.11
2006-07	52.80	49.36	50.58	50.72	52.59	52.17	50.98	44.64	50.15

* : निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त वर्ष से उपलब्ध हुए ।

स्रोत : भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियों (भारतीय रिजर्व बैंक) से परिकलित ।

9.22 परिचालन लागत को श्रम और गैर-श्रम परिचालन लागतों के रूप में विखंडित किया जा सकता है। इस प्रकार का विखंडन विभिन्न बैंकिंग प्रणालियों में श्रम/प्रौद्योगिकी द्वारा प्राप्त किए गए सापेक्ष महत्त्व का पता लगाने में सहायक होता है। इसके अलावा, विश्व भर में वित्तीय सेवाओं और बाज़ारों के बढ़ते एकीकरण से वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराने से अधिकाधिक स्पर्धात्मकता और गति प्राप्त करने के लिए प्रौद्योगिकीय हलों पर अधिक से अधिक निर्भरता आवश्यक हो जाने के फलस्वरूप यह आशा की जाती है कि गैर-श्रम परिचालन लागत को श्रम लागत की अपेक्षा अधिक अंश प्राप्त होगा।

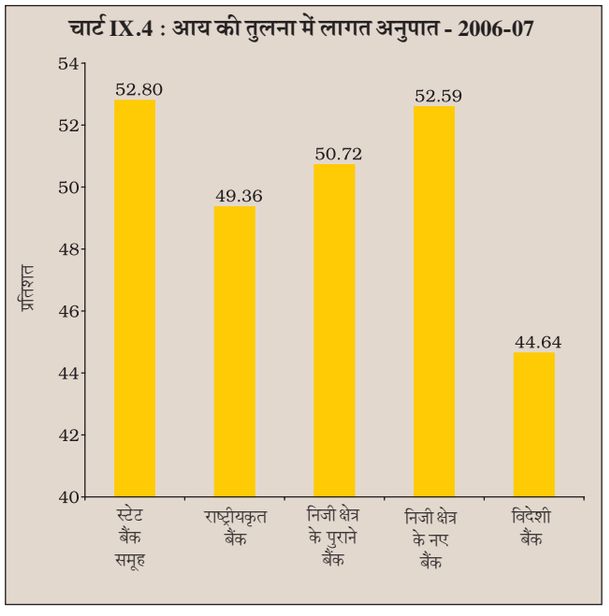

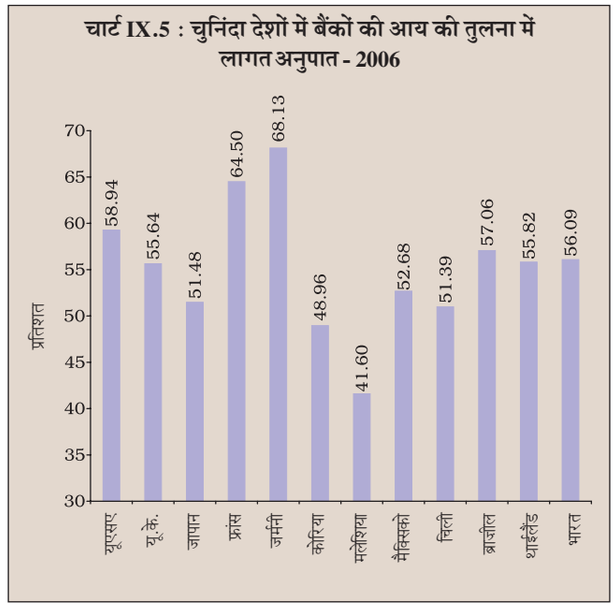

सारणी 9.4 : चुनिंदा देशों में वाणिज्य बैंकों की आय की तुलना में लागत अनुपात

(प्रतिशत)

देश	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं								
यू एस ए	57.87	60.07	62.34	63.69	51.74	52.07	54.90	58.94
कनाडा	*	68.38	69.42	70.46	70.66	69.83	72.66	65.53
यू.के.	*	60.89	69.21	67.03	67.14	57.20	56.28	55.64
इटली	73.28	69.85	75.24	87.93	82.99	66.31	60.37	59.29
फ्रांस	72.58	70.74	76.77	77.34	72.85	68.03	66.16	64.50
जर्मनी	70.02	70.62	91.90	87.13	89.52	72.92	71.96	68.13
जापान	50.47	49.53	52.47	51.64	51.61	50.13	51.55	51.48
उभरती अर्थव्यवस्थाएं								
मैक्सिको	57.50	68.64	62.13	65.75	61.85	63.18	55.35	52.68
चिली	60.49	59.41	58.07	55.05	54.59	54.67	54.65	51.39
कोरिया	43.91	48.93	40.98	39.95	41.18	43.56	48.10	48.96
थाईलैंड	91.52	86.54	78.96	64.02	58.05	52.18	51.78	55.82
फिलीपीन्स	70.39	68.29	72.81	60.06	56.91	64.02	61.69	61.97
मलेशिया	*	37.92	41.79	41.41	42.07	43.35	42.26	41.60
इंडोनेशिया	60.19	62.96	55.86	55.31	52.65	49.58	57.06	53.21
ब्राज़ील	71.10	82.32	71.23	62.46	62.33	65.20	58.99	57.06
रूसी महासंघ	51.50	62.15	49.34	57.29	51.47	52.85	48.72	54.22
चीन	79.91	75.69	72.54	54.09	48.50	46.18	46.03	41.98
मेमो :								
श्रेणी	**43.91 - 91.52**	**37.92 - 86.54**	**40.98 - 91.90**	**39.95 - 87.93**	**41.18 - 89.52**	**43.35 - 72.92**	**42.26 - 72.66**	**41.60 - 68.13**
भारत	**57.78**	**58.87**	**53.93**	**48.67**	**46.32**	**51.29**	**54.13**	**56.09**

*** :** आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं अथवा यदि उपलब्ध हैं, तो उनके नमूने बहुत छोटे हैं और इसलिए उनके विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया।

स्रोत : बैंक स्कोप।

अर्जक आस्ति की प्रति इकाई श्रम लागत

9.23 बैंकिंग, उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी सॉल्यूशनों पर बढ़ी हुई निर्भरता के बावजूद स्वरूप की दृष्टि से ही एक सूचना और मानवीय पूंजी प्रधान उद्योग है। इसलिए, बैंकों की लाभप्रदता के निर्धारण में श्रम-लागत एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतएव, परिचालन लागत के विखंडित स्तर पर अर्जक आस्तियों की प्रति इकाई श्रम लागत (वेतन पर व्यय) परिचालन लागतों के घटकों में महत्त्वपूर्ण हो जाता है। अर्जक आस्तियों की प्रति इकाई श्रम लागत संपूर्ण उद्योग के मामले में आधी कम हो गई, जो 1991-92 के 2.30 प्रतिशत से घटकर 2006-07 में 1.23 प्रतिशत के स्तर पर आ गई। यह मुख्यतः सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों तथा निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों की प्रति नए इकाई श्रम लागत में आई गिरावट के कारण संभव हुआ, निजी क्षेत्र के नए बैंकों और विदेशी नए बैंकों की इकाई लागत में वृद्धि हुई (सारणी 9.5)। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के मामले में आई गिरावट व्यापक तौर पर 2000-01 में स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना के कठोर कार्यान्वयन के कारण संभव हुई।

9.24 वर्ष 2006-07 के दौरान निजी क्षेत्र के नये बैंकों के मामले में श्रम लागत समस्त बैंक समूहों में सबसे कम थी, यह अनिवार्य रूप से इसलिए संभव हुई क्योंकि वे नेमी स्वरूप वाले अधिकांश कार्यों की आउटसोर्सिंग करवाने के अलावा नेमी कार्यों के लिए भी श्रम बल के बजाय प्रौद्योगिकी पर अधिक निर्भर करते हैं (चार्ट IX.6)। हालांकि, अधिकांश उनके शाखा नेटवर्क के विस्तार तथा कर्मचारियों की भर्ती के कारण उनकी श्रम लागत में बढ़ोत्तरी हो रही है। दूसरी ओर, विदेशी बैंकों की श्रम लागत, जो 1991-92 में 1.08 प्रतिशत के रूप में बैंकिंग क्षेत्र में सबसे कम थी, मुख्यतः उनके द्वारा भुगतान की गई अपेक्षाकृत अधिक परिलब्धियों के कारण 2006-07 में बढ़कर 1.56 प्रतिशत हो गई। विदेशी बैंकों, जिनका 1991-92 में शाखा नेटवर्क में अंश मात्र 0.38 प्रतिशत तथा समस्त वाणिज्यिक बैंकों के मुकाबले कर्मचारी शक्ति में अंश मात्र 1.45 प्रतिशत था, वाणिज्यिक बैंकों के बीच वेतन पर हुए कुल व्यय में उनकी हिस्सेदारी 3.14 प्रतिशत थी। विदेशी बैंकों का वेतन व्यय का अंश समस्त वाणिज्यिक बैंकों के कुल वेतन व्यय का 8.52 प्रतिशत था, जबकि उनके पास 2006-07 में कुल बैंक कर्मचारियों के केवल 3.11 प्रतिशत कर्मचारी थे और 0.47 प्रतिशत शाखा नेटवर्क था।

9.25 पिछले 10 वर्षों अथवा उसके आसपास की अवधि के दौरान श्रम उत्पादकता में हुई पर्याप्त बढ़ोत्तरी के बावजूद भारत में श्रम लागत विकसित अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले अपेक्षाकृत अधिक बनी हुई है। अधिकांश विकसित देशों और चीन, कोरिया, थाईलैंड और मलेशिया

सारणी 9.5 : भारत में वाणिज्य बैंकों की अर्जक आस्तियों की प्रति इकाई श्रम लागत

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	2.41	2.34	2.36	2.86	*	2.86	2.38	1.08	2.30
1992-93	2.51	2.40	2.44	2.59	*	2.59	2.45	0.96	2.34
1993-94	2.51	2.38	2.43	2.22	*	2.22	2.42	1.10	2.31
1994-95	2.86	2.48	2.61	2.05	*	2.05	2.58	1.23	2.48
1995-96	3.22	2.89	3.01	2.29	0.37	1.91	2.92	1.37	2.80
1996-97	3.01	2.73	2.83	1.96	0.36	1.56	2.70	1.45	2.60
1997-98	2.75	2.51	2.59	1.81	0.38	1.38	2.46	1.31	2.37
1998-99	2.70	2.52	2.58	1.83	0.39	1.30	2.44	1.37	2.35
1999-2000	2.37	2.40	2.39	1.77	0.36	1.17	2.22	1.31	2.15
2000-01	2.55	2.62	2.59	1.53	0.40	0.99	2.37	1.24	2.28
2001-02	1.93	2.11	2.04	1.54	0.47	0.93	1.86	1.33	1.83
2002-03	1.80	1.91	1.87	1.45	0.52	0.86	1.69	1.10	1.65
2003-04	1.78	1.80	1.79	1.35	0.56	0.84	1.61	1.17	1.58
2004-05	1.66	1.62	1.63	1.30	0.58	0.81	1.48	1.15	1.46
2005-06	1.79	1.46	1.57	1.38	0.62	0.83	1.41	1.34	1.40
2006-07	1.51	1.23	1.32	1.26	0.71	0.84	1.21	1.56	1.23

*: निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त वर्ष से उपलब्ध हुए।

स्रोत : भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियों (भारतीय रिजर्व बैंक) से परिकलित।

जैसे एशियाई राष्ट्रों में श्रम लागत (प्रतिशत की दृष्टि से अर्जक आस्ति की प्रति इकाई कार्मिक व्यय) 1 प्रतिशत से भी कम था। हालांकि भारत की श्रम-लागत हाल के वर्षों में इटली के साथ तुलनीय और फिलिपिन्स तथा इंडोनेशिया के मुकाबले कुछ हद तक बेहतर थी। अन्य उभरती बाज़ार

चार्ट IX.6: प्रति अर्जक आस्ति श्रम लागत - 2006-07

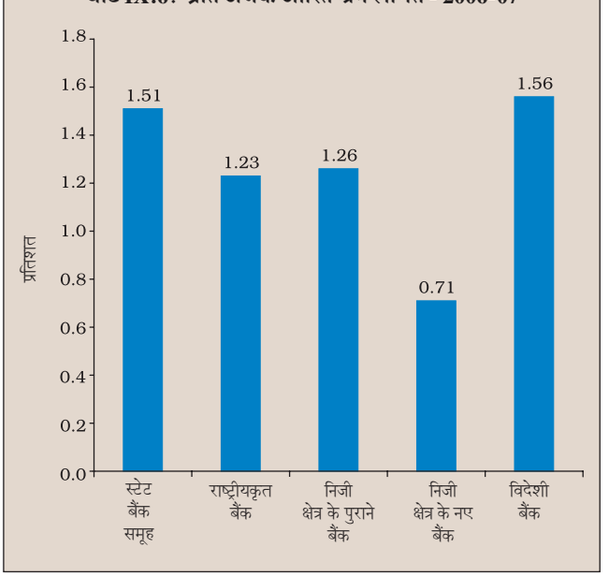

अर्थव्यवस्थाओं में ब्राज़ील और रूस में श्रम लागतें 2 प्रतिशत से अधिक की दर से महत्त्वपूर्ण रूप से अधिक थीं (सारणी 9.6 और चार्ट IX.7)।

9.26 इन स्वरूपों से यह पता चलता है कि केवल आर्थिक विकास ही श्रम लागतों की व्याख्या करने में महत्त्वपूर्ण कारक नहीं हो सकता। प्रतिस्पर्धात्मक दबाव और श्रम बाज़ार का ढांचा भी श्रम लागत को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारक सिद्ध होते हैं।

गैर-श्रम लागत

9.27 आंकड़ों के अपेक्षाकृत शीघ्र गति से संसाधन और नेमी स्वरूप के कार्यों के लिए तथा अधिक ग्राहकोनुकूल सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकीय सॉल्यूशनों पर अधिक बल दिए जाने के परिणामस्वरूप बैंकों की गैर श्रम लागतों[3] में निरपेक्ष दृष्टि से वृद्धि हो रही है। अर्जक आस्तियों की प्रति इकाई गैर-श्रम लागत सुधारों की प्रारंभिक अवधि में सभी बैंक समूहों के मामले में बढ़ गई (सारणी 9.7)। हालांकि 1990 वाले दशक के मध्यकाल से विदेशी और निजी क्षेत्र के नये बैंकों को छोड़कर सभी बैंक समूहों के मामले में गैर-श्रम लागतों में कमी आई है। तथापि, प्रौद्योगिकी-प्रधान निविष्टियों पर बढ़े हुए व्यय से आगे चल कर गैर श्रम-लागतों की तुलना में अर्जक आस्तियों के अपेक्षाकृत अधिक तीव्र विस्तार के फलस्वरूप उत्पादकता और कार्य-

3 गैर-श्रम लागत = कुल परिचालन लागत - श्रम लागत

सारणी 9.6 : चुनिंदा देशों में वाणिज्य बैंकों की अर्जक आस्तियों की तुलना में कार्मिक व्ययों का अनुपात

(प्रतिशत)

देश	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं								
यू एस ए	0.86	0.90	0.89	0.67	0.73	0.57	0.63	0.62
कनाडा	*	1.68	1.67	1.73	1.69	1.67	1.52	1.41
यू.के.	*	1.01	1.00	0.90	0.84	0.76	0.64	0.63
इटली	*	1.37	1.40	1.38	1.38	1.32	1.00	1.12
फ्रांस	*	1.01	0.91	0.91	0.89	0.84	0.68	0.66
जर्मनी	*	0.97	1.03	1.00	0.93	0.79	0.75	0.80
जापान	*	0.43	0.41	0.46	0.42	0.38	0.39	0.36
उभरती अर्थव्यवस्थाएं								
मैक्सिको	2.98	2.37	*	*	*	*	*	*
चिली	*	1.85	1.85	1.80	1.71	1.62	1.56	1.51
कोरिया	0.90	0.89	0.88	0.95	0.92	0.91	0.92	0.93
थाईलैंड	*	0.72	0.72	0.67	0.68	0.74	0.79	0.84
फिलीपीन्स	*	1.54	1.50	1.48	1.52	1.38	1.40	1.36
मलेशिया	*	0.76	0.83	0.76	0.72	0.73	0.72	0.72
इंडोनेशिया	*	0.83	1.01	1.13	1.36	1.61	1.78	1.71
ब्राज़ील	*	4.22	3.58	3.19	3.22	3.13	2.86	2.59
रूसी महासंघ	2.35	2.38	2.31	2.35	2.37	2.62	2.43	2.16
चीन	*	0.31	0.45	0.56	0.51	0.47	0.53	0.52
मेमो:								
श्रेणी	**0.86 – 2.98**	**0.31 - 4.22**	**0.41 - 3.58**	**0.46 - 3.19**	**0.42 - 3.22**	**0.38 - 3.13**	**0.39 - 2.86**	**0.36 - 2.59**
भारत	*	**1.96**	**1.54**	**1.56**	**1.49**	**1.40**	**1.37**	**1.20**

*: आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं अथवा यदि उपलब्ध हैं तो उनके नमूने बहुत छोटे है और इसलिए उनके विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया।

स्रोत : बैंक स्कोप।

कुशलता में वृद्धि होने की आशा है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों तथा निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों की तुलना में निजी क्षेत्र के नए बैंकों तथा विदेशी बैंकों की गैर-श्रम लागतें उल्लेखनीय रूप से उच्चतर थीं । विदेशी बैंक समूहों की गैर-श्रम लागतें उच्च होने का एक मुख्य कारण बड़े स्तर पर तुलन-पत्रेतर एक्सपोजर का होना था जिन्हें हर (कुल आस्तियां)में नहीं दर्शाया जाता,जबकि ऐसे कारोबारों को चलाने की लागत अंश (गैर-श्रम लागत) में दर्शाई जाती है । विदेशी तथा निजी क्षेत्र के नए बैंक समूहों की गैर-श्रम लागतों का उच्चतर स्तर शाखा विस्तार, प्रौद्योगिकी उन्नयन तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर निर्माण पर हुए व्यय के कारण भी था जिससे दीर्घावधि में उनकी कार्यक्षमता तथा उत्पादन क्षमता में वृद्धि होने की संभावना है (चार्ट IX.8)।

चार्ट IX.7: चुनिंदा देशों में कुल आस्तियों की तुलना में श्रम लागत का अनुपात - 2006

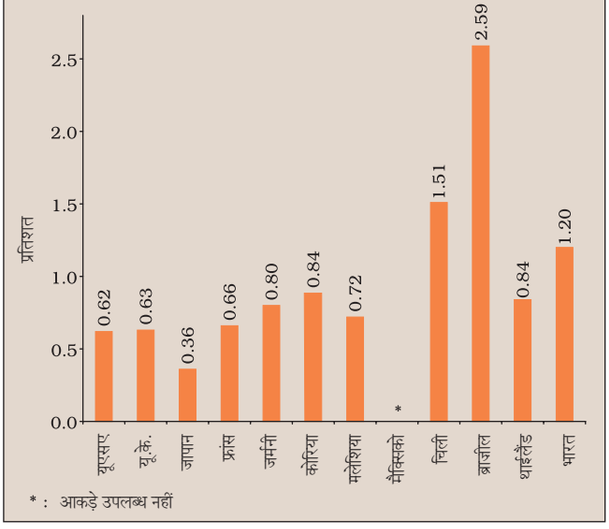

* : आकड़े उपलब्ध नहीं

9.28 गैर-श्रम लागतों में गिरावट की सामान्य प्रवृत्ति के बावजूद गैर श्रम लागतों (अर्जक आस्तियों द्वारा सामान्यीकृत) की तुलना में श्रम लागत अनुपात में कुछेक रोचक प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं, जिन्हें विभिन्न बैंक समूहों की श्रम प्रधानता का संकेतक माना जा सकता है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के मामले में अनिवार्यतः इन बैंक समूहों द्वारा आरंभ किए गए प्रौद्योगिकीय सॉल्यूशनों के कारण श्रम-प्रधानता में गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई देती है (सारणी 9.8)। इसके अलावा, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में श्रम बल के युक्तियुक्तकरण से भी उनकी श्रम-प्रधानता में कमी लाने में सहायता प्राप्त हुई है। दूसरी ओर, नए निजी बैंकों की श्रम-प्रधानता में श्रम बल में बढ़ोत्तरी तथा इसके पूर्व यथावर्णित उनके द्वारा भुगतान की गई परिलब्धियों, दोनों ही के कारण क्रमिक रूप से वृद्धि हुई।

सारणी 9.7 : भारत में वाणिज्य बैंकों की अर्जक आस्तियों की प्रति इकाई गैर-श्रम लागतें

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	1.02	1.05	1.04	1.17	*	1.17	1.05	2.18	1.12
1992-93	0.98	1.05	1.03	1.10	*	1.10	1.03	2.89	1.17
1993-94	1.23	1.12	1.16	1.11	*	1.11	1.15	2.36	1.25
1994-95	1.09	1.21	1.17	1.05	*	1.05	1.16	2.53	1.26
1995-96	1.09	1.07	1.08	1.21	2.10	1.38	1.11	2.53	1.22
1996-97	1.14	1.03	1.07	1.25	2.12	1.47	1.11	2.67	1.24
1997-98	0.92	0.97	0.95	1.19	1.92	1.41	1.00	2.77	1.14
1998-99	1.09	0.91	0.98	1.07	1.88	1.36	1.02	3.27	1.20
1999-2000	0.94	0.86	0.89	1.01	1.48	1.21	0.93	2.63	1.06
2000-01	0.94	0.83	0.87	0.94	1.81	1.36	0.94	2.69	1.07
2001-02	0.78	0.79	0.79	0.99	1.47	1.26	0.86	2.68	0.99
2002-03	0.73	0.79	0.77	0.95	1.88	1.54	0.91	2.38	1.00
2003-04	0.80	0.78	0.79	0.98	1.90	1.58	0.94	2.50	1.04
2004-05	0.80	0.75	0.77	1.09	1.83	1.58	0.93	2.58	1.02
2005-06	0.85	0.77	0.80	1.08	1.82	1.61	0.98	2.57	1.08
2006-07	0.79	0.70	0.73	0.96	1.80	1.60	0.93	2.36	1.03

*: निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त वर्ष से उपलब्ध हुए।

स्रोत : भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियों (भारतीय रिज़र्व बैंक) से परिकलित।

9.29 भारतीय बैंकों की लगभग 2 प्रतिशत की दर से गैर-श्रम लागत उन्नत देशों तथा कोरिया, मलेशिया और चीन जैसी कुछ उभरती अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले कुछ हद तक अधिक थी (चार्ट IX.9)। मैक्सिको, ब्राज़ील और रूस जैसे कुछ देशों में यह अनुपात वैश्विक मानकों से 3 से 4 गुना अधिक था। एशिया के थाईलैंड, इंडोनेशिया और फिलिपीन्स जैसी कुछ उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं में भी यह अनुपात अपेक्षाकृत अधिक था (सारणी 9.9)।

चार्ट IX.8: प्रति अर्जक आस्ति गैर-श्रम लागत - 2006-07

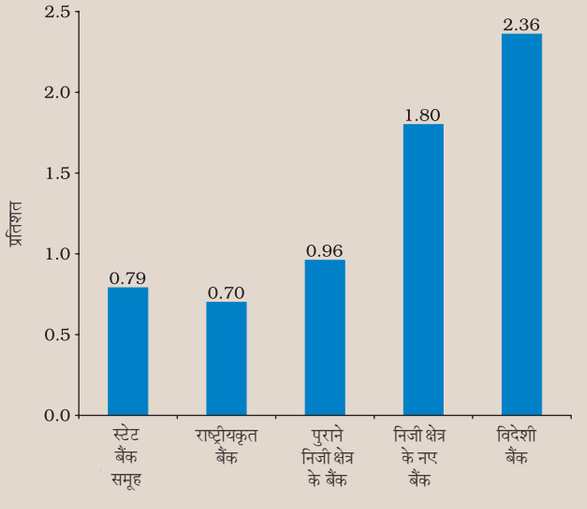

9.30 उभरती अर्थव्यवस्थाओं में सुदूर पूर्व एशियाई अर्थव्यवस्थाओं यथा मलेशिया और कोरिया की गैर-श्रमिक लागत विकसित विश्व की अर्थव्यवस्थाओं से तुलनीय है (चार्ट IX.9)।

मध्यस्थता लागत

9.31 मध्यस्थता लागत की कोई एक परिभाषा नहीं है। यद्यपि कुछेक अनुसंधानकर्ताओं ने उधार देने और जमा की दरों के बीच अंतर का प्रयोग मध्यस्थता की परिभाषा के रूप में किया है, तथापि मध्यस्थता लागत की सर्वाधिक सामान्य रूप से प्रयुक्त परिभाषा है जमा लागत और ऋण आस्तियों से प्रतिलाभ के बीच अंतर। यह उस कार्य-कुशलता को द्योतित करता है जिससे बैंकों द्वारा बचतकर्ताओं से वित्तीय संसाधन निवेशकों को मध्यस्थीकृत किए जाते हैं। बैंकिंग प्रणाली की उत्पादकता / कार्य-कुशलता के फलस्वरूप मध्यस्थीकरण लागतों में गिरावट की अपेक्षा की जाती है, क्योंकि अधिक कार्य-कुशल वित्तीय प्रणालियों से अपेक्षाकृत कम लेन-देन लागत पर सुलभ निधि संग्रहण को सुविधाजनक बनाए जाने की आशा की जाती है।

9.32 वित्तीय क्षेत्र के सुधारों को आरंभ किए जाने के फलस्वरूप भारत में मध्यस्थीकरण की लागत में क्रमिक रूप से कमी आ रही है।

सारणी 9.8 : भारत में वाणिज्य बैंकों की गैर-श्रम लागत की तुलना में श्रम लागत का अनुपात

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	236.24	221.98	227.08	245.12	*	245.12	227.96	49.36	204.72
1992-93	257.00	227.60	237.99	235.20	*	235.20	237.84	33.23	199.59
1993-94	203.81	213.47	209.79	199.84	*	199.84	209.24	46.79	184.95
1994-95	262.20	204.24	223.47	194.83	*	194.83	221.74	48.68	196.74
1995-96	294.18	269.41	278.48	188.97	17.68	138.37	263.68	54.35	230.20
1996-97	264.38	264.02	264.16	156.80	17.16	106.44	243.33	54.52	210.34
1997-98	299.84	258.05	272.09	152.20	19.71	98.11	245.33	47.20	207.60
1998-99	246.80	276.16	264.51	171.41	20.64	95.60	238.74	41.81	196.81
1999-2000	251.97	278.45	268.24	176.57	24.22	96.72	238.38	49.61	202.81
2000-01	270.32	317.40	298.02	161.65	22.07	72.71	252.76	46.28	212.80
2001-02#	247.87	266.69	259.70	155.73	31.97	73.81	216.28	49.63	184.85
2002-03	245.97	241.73	243.25	152.70	27.77	56.03	185.49	46.21	164.28
2003-04	221.91	231.26	227.72	137.94	29.65	53.19	170.51	46.70	152.33
2004-05	207.03	215.01	212.07	119.72	31.65	51.34	159.73	44.72	142.73
2005-06	209.33	189.16	196.54	128.39	33.94	51.20	143.69	52.10	129.99
2006-07	189.80	174.46	179.94	130.95	39.35	52.52	129.73	66.12	119.90

* : निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त वर्ष से उपलब्ध हुए।

: बैंक विलयन के लिए आंकड़े समायोजित किए गए हैं।

स्रोत : भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियों (भारतीय रिज़र्व बैंक) से परिकलित।

उद्योग स्तर पर मध्यस्थता लागत 1991-92 के 6.24 से घटकर 2006-07 में 3.43 प्रतिशत रह गयी (सारणी 9.10) मध्यस्थता लागत में यह गिरावट आय की तुलना में लागत अनुपात में आई कमी के अनुरूप है। यह गिरावट सभी बैंक समूहों में परिलक्षित हुई, जिससे बढ़ते प्रतिस्पर्धी दबाव का पता चलता है।

चार्ट IX.9: चुनिंदा देशों में बैंकों की कुल आस्तियों की तुलना में गैर श्रम लागतों का अनुपात -2006

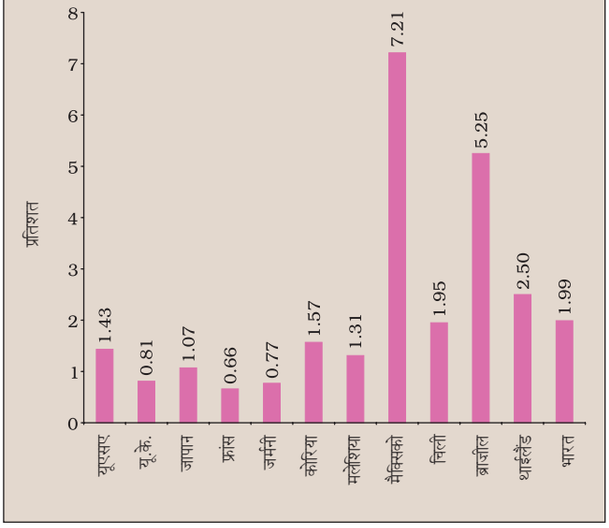

9.33 वर्ष 2006-07 के दौरान स्टेट बैंक समूह के मामले में मध्यस्थता लागत सबसे कम (2.97 प्रतिशत) थी, जिसके बाद राष्ट्रीयकृत बैंकों (3.32 प्रतिशत), निजी क्षेत्र के नए बैंकों (3.61 प्रतिशत), निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों (3.63 प्रतिशत) और विदेशी बैंकों (5.50 प्रतिशत) का स्थान था (चार्ट IX.10)।

9.34 विदेशी बैंकों के मामले में अधिक मध्यस्थता लागत आंशिक रूप से उनकी अल्प लागत वाली जमाराशियां जुटाने की योग्यता के कारण थी। वर्ष 2005-06 के दौरान विदेशी बैंक समूह के मामले में 3.5 प्रतिशत की दर से जमा लागत स्टेट बैंक समूह के मुकाबले कम से कम 100 आधार अंक कम थी। यह उल्लेख करना भी महत्त्वपूर्ण है कि कुल जमाराशियों में चालू खाते की जमाराशियों का अंश विदेशी बैंकों के मामले में सर्वाधिक था। हालांकि, भारतीय संदर्भ में मध्यस्थता लागत का निर्वचन सावधानीपूर्वक किए जाने की आवश्यकता है। यह इसलिए है क्योंकि जुटाए गए संसाधनों का एक महत्त्वपूर्ण भाग आरक्षित नकदी निधि अनुपात (सीआरआर) और सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) के रूप में सांविधिक अपेक्षाओं में अभिनियोजित किए जाने की आवश्यकता होती है, जिस पर अतीत में बैंक बाज़ार की तुलना में कम प्रतिलाभ अर्जित करते थे। इसके कारण बैंकों द्वारा प्रति-आर्थिक-सहायता आवश्यक हो गई थी, जिसके फलस्वरूप मध्यस्थता लागतों में एक बड़ी फन्नी (wedge) निर्मित हो गई थी। वह सीमा जहां तक इस प्रकार के संसाधनों का पूर्वक्रय किया जाता है, महत्त्वपूर्ण रूप से कम हो गई है और बैंक

सारणी 9.9: चुनिंदा देशों में वाणिज्य बैंकों की कुल अर्जक आस्तियों की तुलना में गैर श्रम लागतों का अनुपात

(प्रतिशत)

देश	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं								
यू एस ए	2.13	1.95	2.03	2.03	2.11	1.18	1.36	1.43
कनाडा	*	1.91	2.08	2.28	2.00	1.78	1.86	1.47
यू.के.	*	1.29	1.36	1.37	1.25	0.99	0.86	0.81
इटली	*	1.59	1.77	1.93	1.97	1.65	1.07	1.19
फ्रांस	*	0.92	0.91	0.89	0.84	0.83	0.72	0.66
जर्मनी	*	1.06	1.43	1.66	1.31	1.01	0.88	0.77
जापान	*	1.75	2.39	1.84	1.70	1.39	1.03	1.07
उभरती अर्थव्यवस्थाएं								
मैक्सिको	11.36	6.26	7.34	7.16	6.56	6.26	6.87	7.21
चिली	*	2.35	2.44	2.44	2.23	2.1	1.94	1.95
कोरिया	4.46	3.99	2.54	2.35	3.31	2.36	1.54	1.57
थाईलैंड	*	1.63	1.21	2.13	1.90	1.69	1.57	2.50
फिलीपीन्स	*	3.41	3.27	3.35	2.29	2.95	3.01	3.17
मलेशिया	*	1.63	2.05	1.68	1.41	1.37	1.43	1.31
इंडोनेशिया	*	2.63	2.78	2.24	2.35	2.28	2.65	2.85
ब्राज़ील	*	4.80	4.72	5.03	4.82	5.07	5.16	5.25
रूसी महासंघ	5.98	3.07	3.78	3.32	3.10	3.04	3.11	4.84
चीन	*	1.73	1.61	1.43	1.35	1.20	1.08	1.04
मेमो:								
श्रेणी	**2.13-11.36**	**0.92 - 6.26**	**0.91 - 7.34**	**0.89 - 7.16**	**0.84 - 6.56**	**0.83 - 6.26**	**0.72 - 6.87**	**0.66 - 7.21**
भारत	*	**1.80**	**1.71**	**2.00**	**2.18**	**2.20**	**2.09**	**1.99**

*: आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं अथवा यदि उपलब्ध हैं तो उनके नमूने बहुत छोटे हैं और इसलिए उनके विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया।

स्रोत : बैंक स्कोप।

सरकारी प्रतिभूतियों में उनके निवेशों पर बाज़ार से संबद्ध ब्याज दरें भी प्राप्त करते हैं। हालांकि, अब भी प्रति-आर्थिक-सहायता के तत्व से इनकार नहीं किया जा सकता। अतः भारतीय संदर्भ में मध्यस्थता लागत निवल ब्याज मार्जिन द्वारा बेहतर ढंग से निरूपित होती है।

सारणी 9.10 : भारत में वाणिज्य बैंकों की मध्यस्थता लागतें

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	5.92	5.66	5.77	6.13	*	6.13	5.79	13.28	6.24
1992-93	4.05	4.26	4.22	5.54	*	5.54	4.29	12.81	4.82
1993-94	4.85	4.84	4.85	5.78	*	5.78	4.91	9.25	5.22
1994-95	3.54	4.17	3.95	5.06	*	5.06	4.03	7.30	4.27
1995-96	4.69	5.58	5.26	5.70	4.00	5.31	5.27	7.03	5.43
1996-97	5.83	6.18	6.06	6.19	7.93	6.62	6.14	7.45	6.28
1997-98	3.68	4.58	4.26	5.00	5.59	5.17	4.37	6.89	4.61
1998-99	3.49	4.23	3.96	3.86	4.36	4.03	3.98	6.32	4.19
1999-2000	2.69	3.88	3.45	3.71	3.57	3.68	3.48	4.88	3.59
2000-01	3.09	3.86	3.58	3.44	3.48	3.48	3.57	5.81	3.74
2001-02#	2.15	3.14	2.79	3.24	4.83	4.15	2.97	5.12	3.12
2002-03	1.79	3.33	2.78	3.06	4.77	4.07	3.03	5.22	3.17
2003-04	1.82	3.36	2.82	3.43	4.69	4.18	3.09	4.72	3.18
2004-05	2.04	2.86	2.58	3.33	3.96	3.68	2.79	4.35	2.87
2005-06	2.20	3.07	2.78	3.38	3.71	3.58	2.95	4.79	3.05
2006-07	2.97	3.32	3.20	3.63	3.61	3.61	3.30	5.50	3.43

* : निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त वर्ष से उपलब्ध हुए।

: बैंक विलयन के आंकड़े समायोजित किए गए हैं।

स्रोत : भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियों (भारतीय रिज़र्व बैंक) से परिकलित।

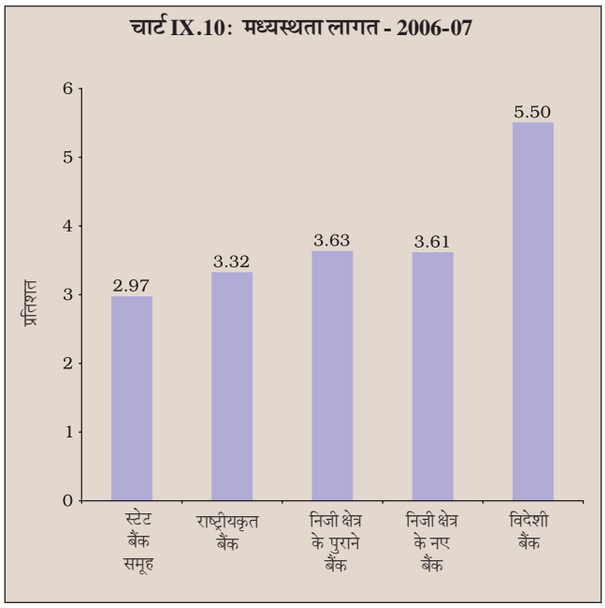

निवल ब्याज मार्जिन अथवा स्प्रेड

9.35 निवल ब्याज मार्जिन को आस्तियों द्वारा प्रसामान्यीकृत कुल उपचित ब्याज (निवेशों जैसी मदों सहित) और कुल खर्च ब्याज (अंतर बैंक उधारों जैसी मदों सहित) के बीच के अंतर के रूप में परिभाषित किया गया है। यह अनुपात इस बात का संकेत करता है कि बैंक अपनी समस्त निधियों (जमाराशियों और उधार ली गई राशियों, दोनों ही) को ऋण और निवेश परिचालनों से आय सृजित करने हेतु कितने प्रभावी ढंग से अभिनियोजित करते हैं। यह अनुपात जितना ही कम होता है, बैंकिंग प्रणाली उतनी ही अधिक कार्य-कुशल होती है।

9.36 ऐतिहासिक रूप से, मुख्यतः पर्याप्त प्रतिस्पर्धा के अभाव के कारण भारतीय बैंकों का निवल ब्याज मार्जिन अधिक रहा है। ऐसा लगता है कि सुधार आरंभ किए जाने के उपरांत उद्योग में व्याप्त वर्धित प्रतिस्पर्धात्मक दबावों ने स्प्रेडों पर अधोमुखी दबाव डालना आरंभ कर दिया। उद्योग का निवल ब्याज मार्जिन, जो 1991-92 में 3.30 प्रतिशत था, घटकर 2001-02 में 2.57 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2002-03 और उसके बाद से आर्थिक गतिविधियों में हुए सुधार तथा अभूतपूर्व ऋण वृद्धि के परिणामस्वरूप, निवल ब्याज मार्जिन में ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्ति आरंभ हुई और वह 2006-07 तक कम होकर 2.69 प्रतिशत के स्तर पर आने के पहले 2003-04 तक 2.87 प्रतिशत पर आ गया था (सारणी 9.11)।

9.37 बैंक-समूहवार आंकड़ों से यह पता चलता है कि 1991-92 में स्टेट बैंक समूह, निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों और विदेशी बैंकों से सम्बन्धित निवल ब्याज मार्जिन (एनआइएम) लगभग उसी स्तर पर था। जहाँ पिछले वर्षों में विदेशी बैंकों के निवल ब्याज मार्जिन में केवल मामूली गिरावट आई, वहीं स्टेट बैंक समूह और निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के मार्जिन में महत्त्वपूर्ण रूप से गिरावट आई। निजी क्षेत्र के नए बैंकों से सम्बन्धित प्रवृत्तियों में भारी घट-बढ़ परिलक्षित हुआ। 1995-96 और 2001-02 के बीच वाली अवधि में लगभग निरंतर आधार पर कम होने के बाद उक्त अनुपात उसके बाद महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़ गया। हालांकि, इस वृद्धि के बावजूद, उनका निवल ब्याज मार्जिन 2006-07 में सबसे कम (2.36 प्रतिशत) था, उसके बाद राष्ट्रीयकृत बैंकों (2.58 प्रतिशत), निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों (2.74 प्रतिशत), स्टेट बैंक समूह (2.79 प्रतिशत) और

सारणी 9.11: भारत में वाणिज्य बैंकों की कुल आस्तियों की तुलना में निवल ब्याज मार्जिन का अनुपात

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	3.80	2.86	3.22	4.01	*	4.01	3.26	3.90	3.30
1992-93	3.01	2.02	2.39	2.92	*	2.92	2.42	3.57	2.51
1993-94	2.68	2.17	2.36	3.01	*	3.01	2.40	4.20	2.54
1994-95	3.27	2.73	2.92	3.07	*	3.07	2.93	4.27	3.03
1995-96	3.34	2.95	3.10	3.17	2.85	3.10	3.10	3.75	3.15
1996-97	3.48	2.97	3.16	2.96	2.94	2.95	3.14	4.13	3.22
1997-98	3.14	2.78	2.91	2.56	2.25	2.46	2.86	3.98	2.95
1998-99	2.85	2.78	2.81	2.17	2.01	2.11	2.73	3.52	2.79
1999-2000	2.76	2.67	2.70	2.33	1.87	2.13	2.63	3.85	2.72
2000-01	2.76	2.90	2.84	2.51	2.14	2.33	2.77	3.64	2.84
2001-02#	2.71	2.74	2.73	2.40	1.18	1.58	2.52	3.25	2.57
2002-03	2.77	2.99	2.91	2.46	1.68	1.96	2.73	3.36	2.77
2003-04	2.83	3.06	2.98	2.56	2.03	2.21	2.82	3.57	2.87
2004-05	3.06	2.82	2.91	2.65	2.18	2.34	2.80	3.34	2.83
2005-06	3.07	2.73	2.85	2.72	2.28	2.40	2.75	3.58	2.81
2006-07	2.79	2.58	2.65	2.74	2.36	2.45	2.60	3.74	2.69

* : निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त वर्ष से उपलब्ध हुए।

: बैंक विलयन के आंकड़े समायोजित किए गए हैं।

स्रोत : भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियों (भारतीय रिजर्व बैंक) से परिकलित।

विदेशी बैंकों (3.74 प्रतिशत) के मार्जिन थे (चार्ट IX.11)। विदेशी बैंकों के मामले में अपेक्षाकृत अधिक निवल ब्याज मार्जिन उनके चालू खातों की विशाल मात्रा के कारण था, जिन्होंने बैंकों को इसके पूर्व यथा वर्णित अल्प-लागत वाली जमाराशियां जुटाने में समर्थ बनाया।

चार्ट IX.11: निवल ब्याज मार्जिन - 2006-07

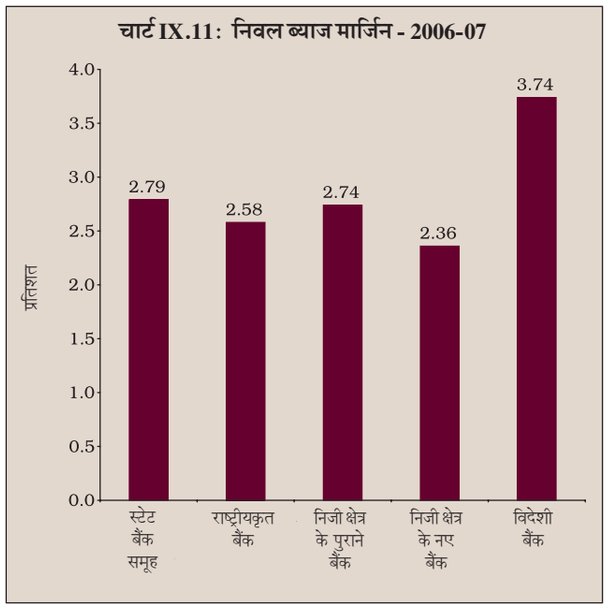

9.38 अन्तरराष्ट्रीय अनुभव से पता चलता है कि अविनियमित और प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में निवल ब्याज मार्जिन में कमी आती है। यह इसलिए होता है, क्योंकि जैसे-जैसे प्रतिस्पर्धा बढ़ती जाती है, प्रतिस्पर्धी बैंक निधियां आकर्षित करने हेतु जमाराशियों पर तुलनात्मक रूप से अपेक्षाकृत अधिक ब्याज दरें प्रदान करने लगते हैं, जबकि उसके साथ ही उनके कारोबार को विस्तारित करने के लिए ऋणों पर अपेक्षाकृत कम ब्याज भी लेने लगते हैं। हाल के वर्षों में मार्जिनों में आई गिरावट का कारण प्रतिफल वक्र का समतल हो जाना भी हो सकता है। अन्तरराष्ट्रीय अनुभव से पता चलता है कि प्रतिफल वक्र को संकुचित किए जाने के फलस्वरू प निवल ब्याज मार्जिनों में, विशेषतः उन अर्थव्यवस्थाओं में, जिनमें ब्याज दर व्युत्पन्नियां सुविकसित नहीं है और गैर-ब्याजगत आय अर्जित करने के अवसर सीमित हैं, कमी आ सकती है। 1997-98 से 2007-08 तक की अवधि के दौरान भारत में सरकारी प्रतिभूतियों के बाज़ार के गौण बाज़ार प्रतिफलों से परिकलित प्रतिफल वक्र महत्त्वपूर्ण रूप से निवल ब्याज मार्जिन से सह-सम्बद्ध था (बॉक्स IX.4)।

बॉक्स IX.4
प्रतिफल वक्र और बैंकों के निवल ब्याज मार्जिन

परम्परागत रूप से यह तर्क दिया जाता है कि प्रतिफल वक्र और बैंकों के निवल ब्याज मार्जिन के बीच एक तर्कपूर्ण सम्बन्ध विद्यमान होता है। बैंक उनकी जमाराशियों पर अल्पावधिक ब्याज दरों के आधार पर ब्याज का भुगतान करते हैं, जबकि ऋण देते समय उसे दीर्घावधिक ब्याज दरों से जोड़ देते हैं। इस प्रकार प्रदत्त और प्राप्त ब्याज के बीच अंतर, जो निवल ब्याज मार्जिन होता है, को अल्पावधिक और दीर्घावधिक ब्याज दरों के बीच अंतर के रूप में परिभाषित प्रतिफल वक्र की ढलान (slope) द्वारा प्रभावित होना चाहिए। इस मामले में अन्तरराष्ट्रीय संवाद को 1984 और 1994 में ऐतिहासिक रूप से समर्थन प्रदान किया गया, जब प्रतिफल वक्र अन्तर में परिवर्तनों और बैंकों के दो तिमाही के अंतराल वाले निवल ब्याज मार्जिनों के बीच सह-सम्बन्ध 70 प्रतिशत नियत किया गया। प्रतिफल वक्र और निवल ब्याज मार्जिन के बीच विद्यमान यह सम्बन्ध इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि प्रतिफल वक्र का समतल होना आर्थिक वृद्धि के मंद होने तथा उसके परिणामस्वरूप बैंकों के अर्जन पर वर्धित दबाव की पूर्वपीठिका होती है, सूक्ष्म-आर्थिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण होता है। हालांकि, इन दिनों कतिपय कारणों से बैंक प्रतिफल वक्र में होने वाले उतार-चढ़ावों के प्रति कम संवेदनशील हो गए हैं। एक, इसका एक कारण बदलता बैंकिंग विनियमन और उत्पाद विभेदन हो सकता है, जिसने बैंकों को गैर-परम्परागत क्रियाकलापों में विविधीकृत होने में समर्थ बना दिया है। दो, ब्याज दरों में उतार-चढ़ावों के प्रति एक्सपोजर को ब्याज दर अदला-बदली (swaps), प्रतिभूतिकरण और समायोज्य दर वाले ऋणों जैसे नए वित्तीय उत्पादों के विकास के माध्यम से मंदित कर दिया गया है। तीन, बैंक उनके निवल ब्याज मार्जिनों पर घटते प्रतिफलों के प्रभाव को उनकी आस्तियों का इक्विटी और मांग जमाराशियों जैसी गैर-ब्याज वाली देयताओं के माध्यम से अधिकाधिक निधीयन करते हुए प्रतितुलित करने में समर्थ रहे हैं।

एक अन्य रोचक प्रेक्षण यह है कि यद्यपि बड़े बैंकों के निवल ब्याज मार्जिन प्रतिफल वक्र में होने वाले उतार-चढ़ावों के अनुरूप घटते-बढ़ते रहे हैं, छोटे बैंकों ने प्रतिफल वक्र की निर्धारित प्रवृत्ति से विलग होने के संकेत प्रदर्शित किए हैं। इसका कारण छोटे और बड़े बैंकों के बीच आस्ति के विन्यास और निधीयन लागत में अंतर हो सकता है।

बड़े बैंक वाणिज्यिक और औद्योगिक ऋणों के विशेषज्ञ होते हैं, जिनमें प्रभारित की जाने वाली दरों में, बैंक और गैर-बैंक, दोनों ही स्रोतों से प्रतिस्पर्धा के कारण गिरावट की प्रवृत्ति परिलक्षित हुई है। दूसरे, अपेक्षाकृत बड़े बैंकों को उनकी एक-दिवसीय और थोक निधीयन, जिनका ब्याज दरों में ऊर्ध्वमुखी संशोधन के दौरान शीघ्रतापूर्वक पुनर्मूल्य-निर्धारण किया जाता है, पर अधिकाधिक निर्भरता के कारण निधीयन लागत में द्रुत गति से वृद्धि का सामना करना पड़ा है। यह अपेक्षाकृत छोटे बैंकों की स्थिति के ठीक विपरीत है, जो दीर्घावधिक जमाराशियों पर अधिक निर्भर करते हैं।

भारत के मामले में, प्रतिफल अंतर (1 वर्ष और 10 वर्ष के बीच की अवधि वाली सरकारी प्रतिभूतियों के बीच) के 1996-97 में 3.22 प्रतिशत से संकुचित होकर 2006-07 में 0.72 प्रतिशत पर आ जाने के फलस्वरूप प्रतिफल वक्र के समतल रहने की प्रवृत्ति जारी है। इसका कारण था दीर्घावधिक दरों में गिरावट और अल्पावधिक दरों की समानुपातिक स्थिरता, क्योंकि स्फीतिकारी अपेक्षाएं सुस्थिर रहीं। निवल ब्याज मार्जिन संभवतः इसलिए पश्चता के साथ प्रतिफल स्प्रेड का अनुसरण करता रहा है, क्योंकि उधार देने और जमा/उधार (लेने की) दरें बाज़ार के उतार-चढ़ावों से तुरंत समायोजित नहीं हो पातीं। एक वर्ष की पश्चता के साथ प्रतिफल स्प्रेड और निवल ब्याज मार्जिन के बीच सह-सम्बन्ध लगभग 0.68 था (चार्ट)।

चार्ट : प्रतिफल स्प्रेड और निवल ब्याज मार्जिन

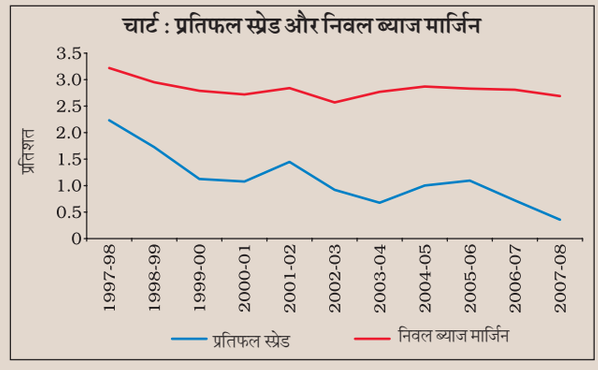

9.39 भारत में बैंकों के निवल ब्याज मार्जिन के निर्धारकों का पता लगाने हेतु किए गए अनुभवजन्य अभ्यास से यह पता चलता है कि परिचालन व्यय निवल ब्याज मार्जिनों के मुख्य निर्धारक तत्व होते हैं। प्रावधानीकरण के परिणामस्वरूप भी निवल ब्याज मार्जिनों में वृद्धि होती है। दूसरे शब्दों में, अधिक अनर्जक आस्तियों वाले बैंकों को अपेक्षाकृत बड़े प्रावधान करने की आवश्यकता होती है, जो अंततः अपेक्षाकृत अधिक निवल ब्याज मार्जिनों में परिवर्तित हो जाता है। उक्त विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि विविधीकरण से निवल ब्याज मार्जिनों में कमी आती है। इसका अभिप्राय यह है कि बेहतर ढंग से विविधीकृत बैंकों का निवल ब्याज मार्जिन अपेक्षाकृत कम होगा। आर्थिक वृद्धि पश्चता के साथ निवल ब्याज मार्जिनों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। इसके अलावा, हरफिंडहल सूचकांक- संकेन्द्रण का एक माप - के गुणांक से यह पता चलता है कि संकेन्द्रण में कमी (प्रतिस्पर्धा में वृद्धि) के फलस्वरूप प्रत्याशानुसार निवल ब्याज मार्जिनों में कमी आती है, यद्यपि गुणांक सांख्यिकीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नहीं था। यह इसलिए हो सकता है, क्योंकि बैंक उत्पादों की दृष्टि से प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिन्हें अन्य बातों के साथ-साथ परिपक्वता, ऋण के आकार, अनुग्रह अवधि और शोधन (चुकौती) की दृष्टि से विभेदित किया जाता है। इसलिए, बैंक ब्याज दरों में कमी किए बिना भी उनके उत्पादों को बेचना जारी रख सकते हैं। इस प्रकार, समग्र निवल ब्याज मार्जिन पर बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा का प्रभाव आनुपातिक रूप से कमज़ोर लगता है (बॉक्स IX.5)।

9.40 विभिन्न देशों के साक्ष्य से यह पता चलता है कि भिन्न-भिन्न देशों के विविध बैंकिंग क्षेत्रों में निवल ब्याज मार्जिनों में व्यापक भिन्नताएं मौजूद हैं (चार्ट IX.12)। 2000 वाले दशक के प्रथमार्ध में सभी विकसित देशों में निवल ब्याज मार्जिनों में सामान्यतया कमी आई। हालांकि, अमरीका, इंग्लैंड, कनाडा, जापान, जर्मनी और फ्रांस जैसे उन्नत देशों में आम तौर

चार्ट IX.12: चुनिंदा देशों में बैंकों के निवल ब्याज मार्जिन - 2006

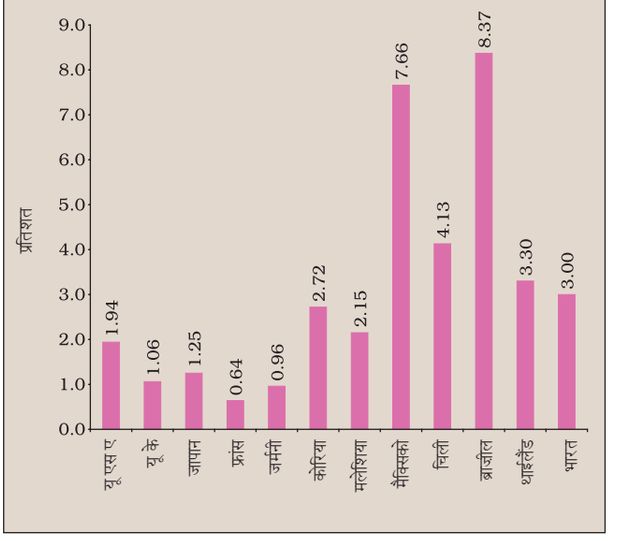

पर निवल ब्याज मार्जिन दो से कम था। हाल की गिरावट के बावजूद, भारतीय बैंकों के निवल ब्याज मार्जिन का समग्र स्तर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित दर की अपेक्षा थोड़ा अधिक था। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में निवल ब्याज मार्जिन उन्नत देशों के मुकाबले काफी अधिक थे, जिनमें ब्राज़ील का अंश 8.37 प्रतिशत था, जिसके बाद मैक्सिको (7.66 प्रतिशत) और इंडोनेशिया (5.90 प्रतिशत) का स्थान था। ब्राज़ील में अंतर के अधिक होने का कारण वह ऋण कार्यक्रम था, जिसमें बैंकों के लिए उनके ऋणों का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बाज़ार की ब्याज दरों से कम दर पर चुनिंदा अधिक जोखिमपूर्ण, उच्च लागत वाले उधारकर्ताओं को आवंटित करना आवश्यक होता है। बैंक चुनिंदा बाज़ारों में हुई उनकी हानियों को

बॉक्स IX.5
भारत में निवल ब्याज मार्जिन के निर्धारक

साहित्य से यह पता चलता है कि निवल ब्याज मार्जिन प्रतिस्पर्धा अथवा औद्योगिक संकेन्द्रण, अनर्जक आस्तियों के स्तर, परिचालन व्ययों और सकल देशी उत्पादों में वृद्धि द्वारा महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित होते हैं। यह भी तर्क दिया जाता है कि बैंकिंग क्रियाकलापों में अपेक्षाकृत अधिक विविधीकरण भी न्यून निवल ब्याज मार्जिन में योगदान करता है। अपेक्षाकृत अधिक गैर-निधिक आय वाले बैंक उनकी निधि-आधारित गतिविधियों को प्रति-आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं, जिसके फलस्वरूप निवल ब्याज मार्जिन कम हो जाता है। इन पहलुओं का अनुभव के आधार पर पता लगाने के उद्देश्य से 1995-96 से 2006-07 तक की अवधि हेतु पैनल-पश्चगमन आरंभ किया गया था। संकेन्द्रण को हरफिन्डियल सूचकांक (संकेन्द्रण में कमी से प्रतिस्पर्धा में वृद्धि का पता चलेगा) द्वारा मापा गया, विविधीकरण का पता कुल आय की तुलना में अन्य आय के अनुपात से लगाया गया, जबकि वर्ष के दौरान किए गए प्रावधानीकरण का उपयोग आस्ति की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने हेतु किया गया। परिवर्तियों को अनुमान लगाने के पहले अन्तर निकाल कर स्थिर किया गया। अनुमानित परिणामों से यह पता चलता है कि निवल ब्याज मार्जिन परिचालन व्ययों, सकल देशी उत्पाद में वृद्धि और प्रावधानीकरण सम्बन्धी अपेक्षाओं द्वारा महत्त्वपूर्ण और सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। जैसी कि आशा थी, विविधीकरण का स्तर निवल ब्याज मार्जिन से ऋणात्मक रूप से जुड़ा होता है। जहां तक संकेन्द्रण का सम्बन्ध है, परिणाम परम्परागत समझदारी के प्रतिकूल हैं। अपेक्षाकृत अधिक संकेन्द्रण अनुपात को निवल ब्याज मार्जिन से सकारात्मक रू प से सम्बद्ध पाया गया, यद्यपि वह सांख्यिकीय दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं था (सारणी)।

सारणी : आश्रित परिवर्ती : निवल ब्याज मार्जिन

परिवर्ती	गुणांक	मानक त्रुटी	सांख्यिकी	संभा.
कुल आय की तुलना में अन्य आय	-0.04	0.009	-3.91	0.00
परिचालन व्यय	0.57	10.50	5.43	0.00
संकेन्द्रण	0.002	0.002	1.41	0.166
प्रावधानीकरण	0.25	0.039	6.53	0.000
सकल देशी उत्पाद वृद्धि दर (-1)	0.02	0.008	2.51	0.017
आर- स्वेयर्ड	**0.65**	**डर्बिन-वाटसन स्टैट**		**2.21**

गैर-चुनिंदा बाज़ार में अननुपातिक रूप से अधिक स्प्रेड प्रभारित करते हुए प्रतितुलित करते हैं (सूजा सुब्रीन्हों, 2007)। हालांकि, भारत में औसत निवल ब्याज मार्जिन थाईलैंड, कोरिया और फिलीपीन्स जैसे कतिपय देशों के साथ तुलनीय था (तालिका 9.12)।

कुल आय की तुलना में अन्य परिचालन आय

9.41 यद्यपि, कुल आय की तुलना में अन्य परिचालन आय (गैर-ब्याजगत आय) के अनुपात को स्वतः किसी लेखांकन माप के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता, इसका उपयोग तुलनपत्र में शामिल न की जाने वाली मदों में एक्सपोज़रों जैसे आय के अन्य स्रोतों के बढ़ते महत्त्व तथा शुल्कों एवं कमीशन जैसे आय के गैर-परंपरागत स्रोतों को दर्शाने के लिए किया गया है। इस प्रकार यह अनुपात एक तरह से बैंकों के परिचालनों के विविधीकरण का संकेतक होता है। विदेशी बैंकों को छोड़कर सभी बैंक समूहों का अनुपात चार भिन्न-भिन्न चरणों से होकर गुज़रा है (सारणी 9.13)। 1991-92 से 1995-96 तक के पहले चरण में मुख्यतः उत्फुल्ल प्राथमिक पूंजी बाज़ार के कारण आय के गैर-ब्याजगत स्रोतों में तीव्र गति से वृद्धि हुई, क्योंकि बैंक व्यापारी बैंकिंग क्रियाकलापों से पर्याप्त आय अर्जित करने में समर्थ हुए। 1996-97 से 2000-01 तक के दूसरे चरण में मुख्यतः मंद पूंजी बाजार के कारण शुल्क और कमीशन पर आधारित आय में कमी के कारण गैर-ब्याजगत आय में वृद्धि की प्रवृत्ति रुक गई। 2001-02 और 2003-04 तक की अवधि वाले तीसरे चरण में, जब बैंकों में अधिक ब्याज प्रदान करने वाली सरकारी प्रतिभूतियों को बेच दिया तथा भारी मात्रा में ट्रेडिंग संबंधी लाभ अर्जित किया, तो आय की तुलना में गैर-ब्याजगत आय का अनुपात तेज़ी से बढ़ गया। हालांकि, 2004-05 से 2006-07 तक के चौथे चरण में कुल आय की तुलना में अन्य परिचालनगत आय का अनुपात घट गया, क्योंकि कुछ बैंक को ब्याज दरों में वृद्धि हो जाने के कारण सरकारी प्रतिभूतियों में व्यापारिक हानि वहन करनी पड़ी। हालांकि, विदेशी बैंकों के कुल आय की तुलना में गैर-ब्याजगत आय के अनुपात में अपेक्षाकृत कम उतार-चढ़ाव परिलक्षित हुए। कुल मिलाकर, सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के अनुपात में 1991-92 और 2006-07 की अवधि के बीच सुधार परिलक्षित हुआ।

9.42 निजी क्षेत्र के नए बैंकों और विदेशी बैंकों दोनों ही के मामले में कुल आय में अन्य आय का अंश सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों की तुलना में महत्त्वपूर्ण रूप से अधिक रहा। यह मुख्यतः सार्वजनिक क्षेत्र के तथा निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों की तुलना में विदेशी और निजी क्षेत्र के नये बैंकों के तुलनपत्रेतर एक्सपोज़रों के बड़े आकार के कारण हुआ (चार्ट IX.13)।

9.43 भारत में बैंकों की अन्य परिचालनगत आय का महत्त्व मुख्यतः गैर परम्परागत क्रियाकलापों में बैंकों के प्रवेश के कारण बढ़ गया। हालांकि,

सारणी 9.12: चुनिंदा देशों में वाणिज्य बैंकों के निवल ब्याज मार्जिन

(प्रतिशत)

देश	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं								
यू एस ए	2.81	3.28	3.32	1.94	2.80	2.54	2.27	1.94
कनाडा	*	2.12	2.24	2.47	2.36	2.19	1.95	1.76
यू.के.	*	1.30	1.33	1.42	0.86	1.36	1.15	1.06
इटली	2.35	2.33	2.50	2.24	2.14	2.25	1.65	2.03
फ्रांस	0.88	1.00	0.64	0.67	0.87	0.99	0.72	0.64
जर्मनी	1.13	1.08	1.18	1.20	1.13	1.02	0.94	0.96
जापान	1.44	1.30	1.43	1.32	1.30	1.24	1.23	1.25
उभरती अर्थव्यवस्थाएं								
मैक्सिको	5.59	6.73	6.37	5.42	5.07	5.71	7.17	7.66
चिली	4.65	4.48	4.61	4.97	3.33	4.12	4.21	4.13
कोरिया	2.11	2.20	2.13	2.53	2.84	2.96	3.00	2.72
थाईलैंड	0.92	1.72	1.93	2.11	2.29	2.77	3.08	3.30
फिलीपीन्स	4.24	5.49	3.85	4.77	4.93	3.65	4.08	3.91
मलेशिया	*	3.17	3.02	2.86	2.67	2.45	2.25	2.15
इंडोनेशिया	-3.67	2.31	3.55	4.07	4.90	5.90	5.78	5.90
ब्राज़ील	9.19	7.83	7.92	9.02	9.52	8.56	8.69	8.37
रूसी महासंघ	6.18	5.72	5.98	5.05	4.85	5.07	5.04	5.10
चीन	2.23	2.10	2.12	2.30	2.33	2.35	2.22	2.30
मेमो:								
श्रेणी	**(-)3.67 - 9.19**	**1.00 - 7.83**	**0.64 - 7.92**	**0.67 - 9.02**	**0.86 - 9.52**	**0.99 - 8.56**	**0.72 - 8.69**	**0.64 - 8.37**
भारत	**2.92**	**3.14**	**2.95**	**3.13**	**3.30**	**3.29**	**3.22**	**3.00**

*: आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं अथवा यदि उपलब्ध हैं तो उनके नमूने बहुत छोटे हैं और इसलिए उनके विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया।

स्रोत : बैंक स्कोप।

सारणी 9.13: भारत में वाणिज्य बैंकों की कुल आय में अन्य आय का अंश

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	12.31	9.73	10.74	9.62	*	9.62	10.69	22.72	11.82
1992-93	12.87	9.88	11.04	10.76	*	10.76	11.03	7.86	10.73
1993-94	14.44	11.88	12.83	12.88	*	12.88	12.84	18.20	13.34
1994-95	15.40	11.17	12.77	13.85	*	13.85	12.84	19.89	13.48
1995-96	16.79	10.85	13.13	14.10	16.02	14.46	13.25	18.31	13.72
1996-97	14.41	10.54	12.01	12.18	17.01	13.40	12.16	18.64	12.79
1997-98	14.72	11.60	12.75	14.66	21.09	16.59	13.21	21.98	14.08
1998-99	14.39	10.44	11.91	11.04	14.43	12.25	11.95	19.35	12.67
1999-2000	14.19	11.62	12.59	14.95	18.09	16.15	13.07	20.72	13.75
2000-01	13.60	11.16	12.09	11.43	14.13	12.65	12.17	20.93	12.96
2001-02	13.44	14.50	14.10	20.29	20.75	20.51	15.06	25.20	15.93
2002-03	16.37	16.68	16.56	20.93	23.96	22.88	17.81	25.43	18.34
2003-04#	21.05	19.97	20.38	21.01	23.94	22.88	20.87	29.76	21.49
2004-05	17.71	16.17	16.74	12.39	23.11	19.51	17.25	29.65	18.10
2005-06	16.19	12.26	13.71	11.25	21.60	18.68	14.77	30.41	16.02
2006-07	12.16	10.47	11.04	12.10	19.58	17.86	12.73	27.80	14.09

* : निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त वर्ष से उपलब्ध हुए।

: वर्ष 2003-04 में कुल आय की तुलना में गैर-ब्याजगत आय का अनुपात तीव्र गति से बढ़ा, जब बैंकों ने अधिक ब्याज देने वाली सरकारी प्रतिभूतियों को बेचा और भारी मात्रा में व्यापारिक लाभ अर्जित किया।

स्रोत : भारत में बैंकों से सम्बन्धित सांख्यिकीय सारणी (भारिबैंक) से परिकलित।

यह विकसित विश्व में अमरीका, फ्रांस और कनाडा और उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं में ब्राजील तथा रूस की तुलना में अब भी कम है (सारणी 9.14 और चार्ट IX.14)।

9.44 प्रथम दृष्ट्या, ऐसा लगता है कि कुल आय की तुलना में अन्य परिचालनगत आय के अंश का निर्धारण करने में आर्थिक विकास का स्तर निर्णायक कारक नहीं है। ब्राज़ील और रूसी महासंघ के बैंकों

चार्ट IX.13: कुल आय की तुलना में अन्य परिचालनगत आय - 2006-07

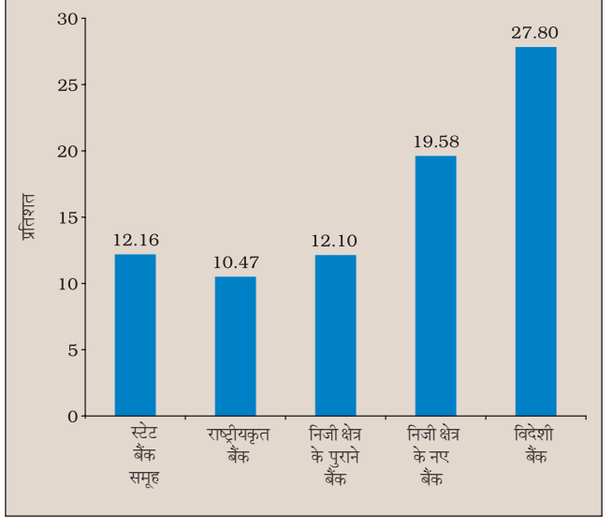

चार्ट IX.14: चुनिंदा देशों में बैंकों की कुल आय की तुलना में अन्य आय का अनुपात - 2006

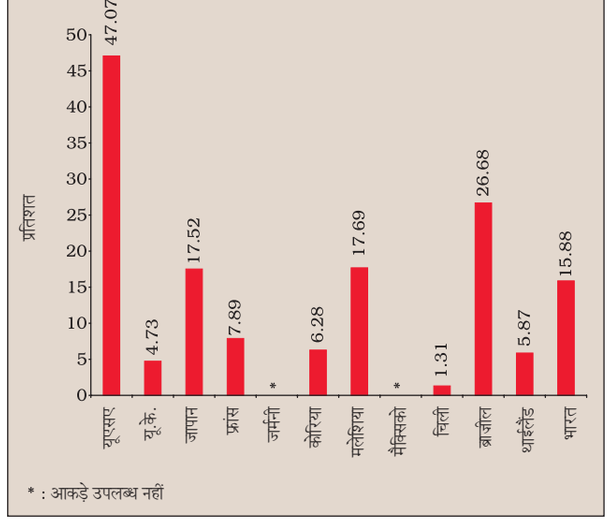

सारणी 9.14: चुनिंदा देशों में वाणिज्य बैंकों की कुल आय की तुलना में अन्य परिचालनगत आय का अनुपात

(प्रतिशत)

देश	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं								
यू एस ए	15.22	15.81	15.09	45.11	38.74	42.84	43.16	47.07
कनाडा	*	55.80	53.64	48.89	28.26	24.64	24.70	24.39
यू.के.	*	43.29	40.48	33.89	7.49	2.40	-0.10	4.73
इटली	6.51	4.92	7.77	10.47	13.10	5.31	5.85	5.30
फ्रांस	2.30	2.67	3.40	3.12	3.52	17.01	18.35	17.52
जर्मनी	13.25	11.86	10.42	13.19	-3.34	8.94	10.92	7.89
जापान	*	*	*	*	*	*	*	*
उभरती अर्थव्यवस्थाएं								
मैक्सिको	*	*	*	*	*	*	*	*
चिली	1.89	1.44	1.32	1.21	1.91	2.39	4.07	1.31
कोरिया	23.14	18.18	16.64	5.39	3.84	5.04	6.56	6.28
थाईलैंड	27.43	8.79	9.84	8.78	8.74	6.35	5.81	5.87
फिलीपीन्स	9.92	6.44	13.29	10.47	11.71	13.71	10.15	12.29
मलेशिया	*	8.32	9.82	11.17	11.49	13.65	16.05	17.69
ब्राज़ील	32.36	26.38	29.71	25.62	19.25	26.68	25.19	26.68
रूसी महासंघ	30.61	23.35	21.15	20.26	23.76	15.54	22.79	34.88
चीन	5.59	3.94	3.16	3.58	4.44	5.27	5.13	3.90
मेमो:								
श्रेणी	**1.89-32.36**	**1.44-55.80**	**1.32-53.64**	**1.21-48.89**	**(-)3.34-38.74**	**2.39-42.84**	**(-)0.10-43.16**	**1.31-47.07**
भारत	**11.47**	**8.98**	**4.30**	**5.85**	**7.21**	**10.56**	**12.91**	**15.88**

*: आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं अथवा यदि उपलब्ध हैं तो उनके नमूने बहुत छोटे हैं और इसलिए उनके विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया।

स्रोत : बैंक स्कोप।

की आय का एक बड़ा हिस्सा कई एक उन्नत देशों की तुलना में अन्य स्रोतों से ही उद्भूत था (सारणी 9.14)। दूसरी ओर कुल आय की तुलना में परिचालनगत आय का अनुपात, जो यू. के. कोरिया और थाईलैंड में अधिक था, हाल के वर्षों में कम हो गया।

प्रति कर्मचारी कारोबार

9.45 अब तक प्रयुक्त विविध प्रकार के अनुपात कार्य-निष्पादन का मूल्यांकन कुल अर्जक आस्तियों के अनुपात के रूप में लागत अथवा प्रतिलाभ की दृष्टि से किया करते थे, जिससे श्रमिकों की उत्पादकता का प्रत्यक्ष रूप से पता नहीं चल पाता था। बैंक द्वारा प्रदत्त सेवाओं के मूल्य-निर्धारण जैसे विविध प्रकार के अन्य पहलुओं के प्रभाव से वंचित श्रमिक उत्पादकता की प्रवृत्ति को समझने के लिए मूल्यांकन कार्य प्रति कर्मचारी कारोबार और प्रति शाखा कारोबार जैसे अनुपातों का प्रयोग करते हुए भी किया जा सकता है। भारत में वाणिज्यिक बैंकों के प्रति कर्मचारी कारोबार (जमाराशियां जोड़ें ऋण) में ग्यारह गुने से भी अधिक वृद्धि हुई और वह 1991-92 के 46.66 लाख रुपये से बढ़कर 2006-07 में 521.94 रुपये तक पहुँच गया (सारणी 9.15)। प्रति कर्मचारी कारोबार में वृद्धि की यह प्रवृत्ति सभी बैंक समूहों में परिलक्षित हुई। प्रति कर्मचारी कारोबार में वृद्धि की यह प्रवृत्ति अन्य बैंक समूहों की तुलना में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों में 1990 वाले दशक के प्रारंभिक दिनों में उनके अत्यंत कम आधार के कारण अधिक मुखर रही। हालांकि, इस वृद्धि के बावजूद, इन बैंक समूहों की उत्पादकता अब भी विदेशी और निजी क्षेत्र के नए बैंकों की उत्पादकता के आधे से भी कम है। नए निजी क्षेत्र के नए बैंकों का प्रति कर्मचारी कारोबार प्रारंभ से ही अन्य बैंक समूहों की तुलना में महत्त्वपूर्ण रू प से अधिक था तथा उन्होंने अपनी यह अग्रणी स्थिति 2002-03 तक के उस समय तक बनाए रखी, जब विदेशी बैंकों का प्रति कर्मचारी कारोबार निजी क्षेत्र के नए बैंकों से अधिक हो गया। वर्ष 2006-07 के दौरान विदेशी बैंकों का प्रति कर्मचारी कारोबार सर्वाधिक था, उसके बाद निजी क्षेत्र के नए बैंकों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों और स्टेट बैंक समूह का स्थान था (चार्ट IX.15)।

9.46 ऐसा लगता है कि निजी क्षेत्र के नये बैंकों के प्रवेश से, आक्रामक विपणन रणनीतियों और संमिश्र उत्पादों की शुरुआत किए जाने के अलावा अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण निर्मित करते हुए सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों को प्रति कर्मचारी कारोबार को विस्तारित करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। गहन प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप बैंकिंग उत्पादों में विस्तार हुआ, बैंकिंग की बैंक रहित क्षेत्रों में पैठ बनी, कोर बैंकिंग सोल्यूशन जैसी प्रौद्योगिकी द्वारा सुयोग्य रूप से समर्थित आक्रामक विपणन रणनीतियों के माध्यम से कारोबार विस्तार संभव हुआ। अन्य बचत उत्पादों की अपेक्षाकृत कम पैठ के साथ ही अपेक्षाकृत अधिक आर्थिक वृद्धि और उच्चतर सकल देशी बचतों के

सारणी 9.15: भारत में वाणिज्य बैंकों का प्रति कर्मचारी कारोबार

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	42.99	46.37	45.15	33.48	*	33.48	44.42	199.47	46.66
1992-93	47.28	48.24	47.91	43.49	*	43.49	47.65	233.66	50.32
1993-94	49.65	41.69	44.10	55.26	*	55.26	44.66	287.39	47.57
1994-95	56.58	60.10	58.87	73.68	*	73.68	59.72	326.96	63.40
1995-96	65.65	67.52	66.86	83.39	734.57	99.74	68.89	393.63	73.42
1996-97	72.51	76.86	75.30	102.24	794.18	129.76	78.72	448.24	84.09
1997-98	84.43	91.91	89.20	124.12	908.73	165.91	94.14	480.99	100.04
1998-99	102.45	107.67	105.78	138.78	793.78	193.95	111.57	504.81	117.72
1999-2000	122.11	126.18	124.71	169.53	976.01	255.23	133.93	627.00	140.92
2000-01	158.83	160.18	159.69	196.62	758.99	296.39	170.58	720.19	179.43
2001-02#	181.54	197.59	191.57	218.10	651.21	333.86	204.10	773.40	213.97
2002-03	205.09	221.05	215.09	266.19	834.88	445.68	236.45	909.68	247.02
2003-04	232.90	255.74	247.22	316.86	898.08	527.85	275.17	952.50	286.90
2004-05	284.04	318.92	305.96	362.03	870.97	578.65	335.98	966.11	348.27
2005-06	337.79	383.07	366.61	419.53	904.30	670.67	405.91	955.41	419.77
2006-07	435.52	490.21	470.99	486.02	818.02	694.07	506.77	995.09	521.94

*: निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त हुए वर्ष से उपलब्ध हुए।
#: बैंक विलयन के आंकड़े समायोजित किए गए हैं।
स्रोत: भारत में बैंकों से सम्बन्धित सांख्यिकीय सारणी (भा.रि.बैंक) से परिकलित।

भी परिणामस्वरूप जमाराशियों और ऋणों में वृद्धि हुई। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को 2000 वाले दशक के प्रारंभिक दिनों में लागू की गई स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना के जरिए कार्यबल को युक्तियुक्त बनाने और उन परंपराओं के लागू किए जाने, जिनके द्वारा कुछ नैमित्तिक कार्यों की आउटसोर्सिंग किए जाने की शुरुआत हुई, का भी लाभ प्राप्त हुआ। बैंकों ने जनशक्ति प्रधान बैंकिंग की अपेक्षा उन्नत प्रौद्योगिकियों के अनुरूप मानवीय पूंजी प्रधान प्रक्रियाओं के माध्यम से बैंकिग सेवाएं सृजित करने पर ध्यान केन्द्रित किया । विदेशी बैंकों के मामले में भी यह वृद्धि देखी जा सकती थी, किन्तु वह उतनी तीव्र नहीं थी, जितनी कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के मामले में थी । निजी क्षेत्र के नए बैंकों और विदेशी बैंकों, दोनों ही के प्रति कर्मचारी कारोबार में वृद्धि पिछले दो वर्षों के दौरान कम हो गई, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में उसके बढ़ने का क्रम जारी रहा।

चार्ट IX.15: प्रति कर्मचारी कारोबार - 2006-07

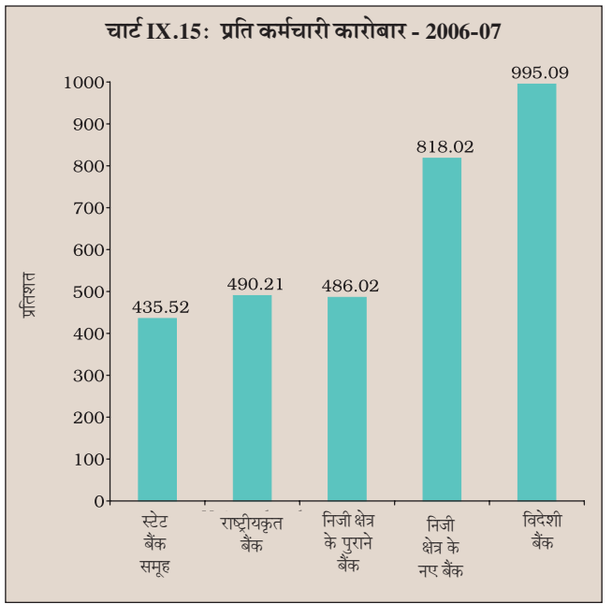

9.47 हालांकि, प्रति इकाई श्रम लागत की दृष्टि से कारोबार के मामले में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की स्थिति, निजी क्षेत्र के नये बैंकों को छोड़कर अन्य बैंक समूहों के साथ अनुकूल रूप से तुलनीय थी (सारणी 9.16)। 1996-97 और 2006-07 के बीच वाली अवधि में निजी क्षेत्र के नये बैंकों और विदेशी बैंकों दोनों ही के मामले में संभवतया इन बैंकों में श्रम लागतों में हुई तीव्र वृद्धि के कारण यह अनुपात कम हो गया, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के मामले में इस अनुपात में मुख्यतः कम मज़दूरी वाले उत्पादक श्रमिकों के कारण स्थिर वृद्धि परिलक्षित हुई। निजी क्षेत्र के नए बैंक अन्य सभी बैंक समूहों से काफी अधिक आगे थे। वर्ष 2006-07 के दौरान प्रति इकाई श्रम लागत कारोबार निजी क्षेत्र के नए बैंकों के मामले में सर्वाधिक था, उनके बाद राष्ट्रीयकृत बैंकों, निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों, स्टेट बैंक समूह और विदेशी बैंकों का स्थान था।

सारणी 9.16: भारत में वाणिज्य बैंकों का प्रति इकाई श्रम लागत कारोबार

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	64.50	72.85	69.74	62.26	*	62.26	69.35	141.27	71.60
1992-93	60.99	71.31	67.37	69.01	*	69.01	67.45	149.62	70.01
1993-94	60.90	69.41	66.26	79.01	*	79.01	66.93	133.01	69.43
1994-95	53.04	66.74	61.41	83.79	*	83.79	62.60	128.84	64.96
1995-96	47.90	57.41	53.73	75.91	438.90	89.62	55.72	114.77	57.95
1996-97	53.02	60.29	57.57	86.87	452.83	108.14	60.49	107.19	62.60
1997-98	58.00	65.44	62.68	94.40	435.09	122.35	66.35	115.95	68.50
1998-99	59.66	64.89	62.95	91.73	396.06	124.98	66.73	101.14	68.29
1999-2000	65.02	67.47	66.58	93.10	421.85	136.24	71.50	99.73	72.81
2000-01	59.05	61.74	60.74	107.68	373.74	159.15	66.43	104.41	68.02
2001-02	76.28	75.81	75.98	104.16	271.37	148.20	81.70	101.71	82.70
2002-03	78.24	80.27	79.54	108.57	252.48	163.76	87.39	119.73	88.77
2003-04	78.26	84.68	82.31	115.79	241.71	170.72	91.35	118.23	92.56
2004-05	87.41	93.02	91.01	125.53	243.76	182.12	100.54	118.49	101.37
2005-06	85.71	108.58	99.67	119.68	234.47	181.88	110.32	105.38	110.02
2006-07	106.58	133.76	123.52	133.67	210.90	183.23	133.05	89.94	129.37

* निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त हुए वर्ष से उपलब्ध हुए।

स्रोत: भारत में बैंकों से सम्बन्धित सांख्यिकीय सारणी (भा.रि.बैंक) से परिकलित।

प्रति शाखा कारोबार

9.48 प्रति कर्मचारी कारोबार की भांति ही निरंतर रूप से वृद्धि हुई। 1990 वाले दशक के प्रारंभिक दिनों से बैंकिंग उद्योग के मामले में और सभी बैंक समूहों के मामले भी प्रति शाखा कारोबार में लगातार वृद्धि हुई। इसका कारण नए कारोबार का विस्तार, कुछ बैंकों द्वारा शाखाओं का युक्तियुक्तकरण तथा एटीएमों में साझेदारी जैसी नयी कारोबार रणनीतियों का प्रचलन हो सकता है ताकि लागतों में किफायत की जा सके और प्रौद्योगिकी से लाभ उठाया जा सके। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के मामले में प्रति शाखा कारोबार में बढ़ोत्तरी उतनी तीव्र नहीं थी, जितनी कि वह प्रति कर्मचारी कारोबार के मामले में थी, जिसमें हुई वृद्धि कुछ हद तक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा लागू की गई स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजनाओं के कारण थी। विदेशी और निजी क्षेत्र के नये बैंकों का प्रति शाखा कारोबार, जो पहले से ही अधिक था, सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों की तुलना में अपेक्षाकृत तीव्र गति से बढ़ा। इसके कारण विविध बैंक समूहों के बीच समानुपातिक उत्पादकता स्तरों में प्रतिशाखा कारोबार से मापा गया अंतर और बढ़ गया।

9.49 वर्ष 2006-07 के दौरान विदेशी बैंकों का प्रति शाखा कारोबार निजी क्षेत्र के नये बैंकों की तुलना में लगभग 3.5 गुना और स्टेट बैंक समूह तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों की तुलना में लगभग 15 गुना था (सारणी 9.17, चार्ट IX.16)। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के अपेक्षाकृत कम प्रति शाखा कारोबार का कारण ग्रामीण शाखाओं की बड़ी मात्रा हो सकता है, जहाँ लेन-देन का आकार बहुत छोटा होता है। दूसरी ओर विदेशी और देशी निजी क्षेत्र के नये बैंक व्यापक तौर पर शहरी क्षेत्रों में परिचालन करते हैं तथा ऊंची निवल हैसियत वाले व्यक्तियों और बड़ी कम्पनियों के खातों का प्रबंधन करते हैं। यह प्रति शहरी/महानगरीय शाखा कारोबार के आकार से भी स्पष्ट हो जाता है, जो सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की तुलना में विदेशी बैंकों और निजी क्षेत्र के बैंकों के मामले में महत्त्वपूर्ण था (सारणी 9.18)।

आस्तियों पर प्रतिलाभ:

9.50 आस्तियों पर प्रतिलाभ (आओए) इस बात का संकेत देता है कि कोई व्यावसायिक इकाई (वर्तमान मामले में बैंक) उसकी आस्तियों की प्रति इकाई से कितना लाभ सृजित कर सकती है। इस अनुपात का अपेक्षाकृत अधिक होना अपेक्षाकृत अधिक लाभप्रदता और इसलिए उत्पादकता का संकेतक होता है। बासेल II मानदंडों के अनुसार, आस्ति पर प्रतिलाभ (आरओए) एक प्रतिशत से अधिक होना चाहिए (घोष, सी.आर. और अन्य; 2004)।

9.51 भारत में बैंकिंग प्रणाली में बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा के बावजूद, आस्तियों पर प्रतिलाभ में महत्त्वपूर्ण रू प से बढ़ोत्तरी हुई और वह 1991-92 के 0.39 प्रतिशत से बढ़कर 2003-04 में 1.13 प्रतिशत हो गया, यद्यपि उसके बाद वाले तीन वर्षों में यह 0.90 प्रतिशत पर स्थिर होने से पहले उसमें कुछ उतार-चढ़ाव हुए हैं (सारणी 9.19)। लाभप्रदता अनुपात में हुई यह महत्त्वपूर्ण बढ़ोत्तरी उस समय और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है, जब बैंक की मध्यस्थता लागत में उसी अवधि में गिरावट आई हो।

सारणी 9.17: भारत में वाणिज्य बैंकों का प्रति शाखा कारोबार

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	10.53	8.27	8.93	4.87	*	4.87	8.59	149.96	9.12
1992-93	11.52	9.03	9.76	6.01	*	6.01	9.45	179.39	10.08
1993-94	12.09	9.72	10.42	7.46	*	7.46	10.16	208.37	10.92
1994-95	13.84	11.34	12.08	9.86	*	9.86	11.88	160.22	12.72
1995-96	16.15	12.89	13.86	11.44	35.85	13.09	13.79	278.06	14.84
1996-97	17.91	14.29	15.36	13.86	45.57	16.69	15.49	312.23	16.72
1997-98	20.85	16.72	17.94	16.62	55.00	20.87	18.23	334.71	19.59
1998-99	24.92	19.23	20.90	19.04	66.34	25.24	21.32	349.04	22.75
1999-2000	29.03	22.12	24.15	22.35	95.61	32.46	25.01	389.20	26.58
2000-01	34.64	25.32	28.06	25.96	111.12	39.82	29.26	423.81	31.13
2001-02#	38.47	28.93	31.73	27.35	133.27	46.71	31.73	461.81	35.32
2002-03	43.08	32.05	35.27	33.88	182.42	65.33	38.35	672.42	40.56
2003-04	48.23	36.45	39.87	38.79	201.82	77.41	43.94	712.28	46.45
2004-05	58.05	44.53	48.42	43.11	220.23	88.92	53.00	759.19	55.81
2005-06	64.39	50.94	54.78	45.87	271.19	109.31	61.31	803.45	64.74
2006-07	77.14	62.78	66.83	52.31	293.96	133.16	75.04	1004.10	79.39

* : निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त हुए वर्ष से उपलब्ध हुए।

: बैंक विलयन के आंकड़े समायोजित किए गए हैं।

स्रोत : भारत में बैंकों से सम्बन्धित सांख्यिकीय सारणियों (भा.रि.बैंक) से परिकलित।

9.52 बैंक समूहों में स्टेट बैंक समूह और राष्ट्रीयकृत बैंकों के मामले में इस अनुपात में महत्त्वपूर्ण रूप से सुधार हुआ। राष्ट्रीयकृत बैंकों का अनुपात सुधारों के प्रारंभिक वर्षों में विवेकसम्मत मानदंडों को लागू किए जाने के बाद

चार्ट IX.16: विविध बैंक समूहों का प्रति शाखा कारोबार - 2006-07

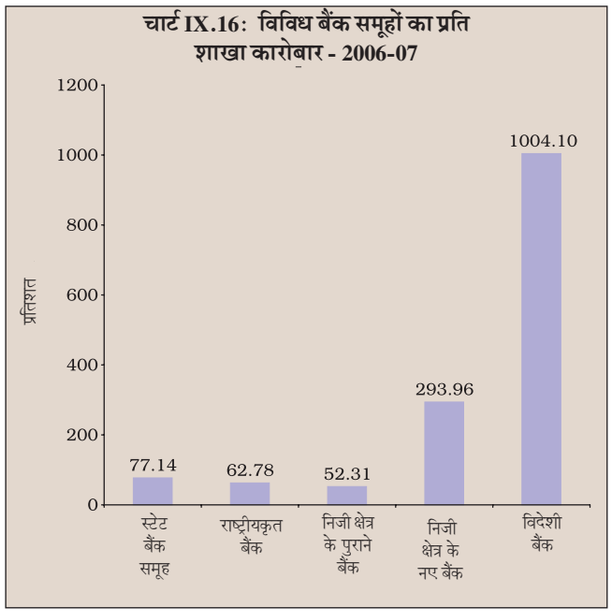

ऋणात्मक हो गया था, जिनसे भारी मात्रा में अनर्जक आस्तियों तथा बैंकों द्वारा अपेक्षित भारी प्रावधानीकरण की आवश्यकता का पता चलता है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ बैंकों को निवल हानियां उठानी पड़ीं। 1991-92 के 3 बैंकों के मुकाबले 1992-93 में 13 बैंकों ने हानि वहन करने की रिपोर्ट दर्ज की। सभी बैंकों के आस्ति पर प्रतिलाभ में 1990 वाले दशक में भारी उतार-चढ़ाव हुए। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का आस्ति पर प्रतिलाभ (आरओए) 1997-98 के दौरान अनर्जक आस्तियों में गिरावट के कारण अपेक्षाकृत कम प्रावधान किए जाने के कारण कुल आस्तियों की तुलना में निवल लाभ में वृद्धि के कारण महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़ गया। दूसरी ओर, नए निजी बैंकों के अनुपात में वर्ष के दौरान उनके निवेश संविभाग के बाजार मूल्य को बही में अंकित किए जाने पर हुई हानियों के लिए अपेक्षाकृत अधिक प्रावधान किए जाने के कारण गिरावट आ गई। हालांकि, निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के आस्ति पर प्रतिलाभ में 1990 वाले दशक के अंतिम तीन वर्षों के दौरान तीव्र गिरावट आई। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के बैंकों का आस्ति पर प्रतिलाभ प्रायः अभिसरित हो गया, जबकि विदेशी बैंकों का आस्ति पर प्रतिलाभ निरंतर अधिक बना हुआ है, जिससे तुलनपत्र में शामिल न की जाने वाली मदों के कारोबार से हुए लाभ का पता चलता है (चार्ट IX.17)।

9.53 सम्पूर्ण विश्व में फैले बैंकों के आस्ति पर प्रतिलाभ में महत्त्वपूर्ण रूप से भिन्नता मौजूद है। हालांकि अत्यधिक उन्नत देशों और कुछ उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में यह अनुपात एक से कम था। ब्राज़ील और रूस

सारणी 9.18: भारत में वाणिज्य बैंकों की प्रति शहरी/ महानगरीय शाखा कारोबार [4]

(करोड़ रुपयों में)

वर्ष	देशी बैंक			विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	निजी बैंक		
1	2	3	4	5	6
1991-92	22.23	15.26	7.48	225.43	18.06
1992-93	26.79	17.44	8.84	245.52	20.85
1993-94	28.79	19.40	12.57	267.57	23.14
1994-95	32.86	22.82	20.45	322.15	27.64
1995-96	36.53	24.05	24.96	359.54	30.02
1996-97	36.26	25.82	31.51	373.72	32.19
1997-98	41.07	30.19	37.22	408.11	37.20
1998-99	47.99	34.89	44.58	428.64	42.72
1999-00	56.42	39.91	57.61	501.18	49.88
2000-01	65.39	45.64	66.14	541.85	57.22
2001-02	73.79	52.03	93.77	580.69	67.23
2002-03	77.47	59.40	119.27	588.71	76.81
2003-04	92.61	68.44	141.04	689.86	90.23
2004-05	110.33	83.07	151.11	701.24	106.06
2005-06	128.31	97.29	180.08	896.41	125.54
2006-07	154.95	116.51	218.43	1094.53	151.39

स्रोत : मूल सांख्यिकी विवरणी 7।

के बैंकों ने संभवतः कम प्रतिस्पर्धा के कारण इन बैंकों के स्प्रेड औसत से अधिक होने के कारण आस्ति पर प्रतिलाभ का अपेक्षाकृत उच्च स्तर दर्शाया (सारणी 9.20 और चार्ट IX.18)।

चार्ट IX.17: विविध बैंक समूहों की आस्तियों पर प्रतिलाभ - 2006-07

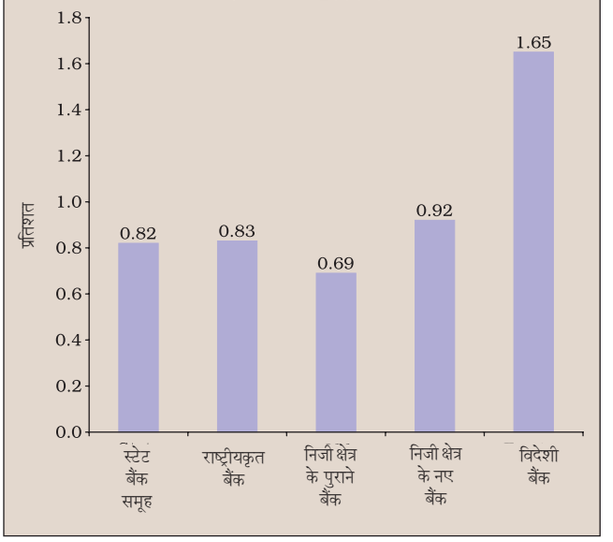

इक्विटी पर प्रतिलाभ

9.54 इसके पूर्व यथाविश्लेषित आस्ति की तुलना में प्रतिलाभ अनुपात कुछ विदेशी बैंकों के मामले में ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्ति दर्शा सकता है, क्योंकि वे तुलनपत्र में शामिल न की जाने वाली मदों में एक्सपोजरों से भारी लाभ

सारणी 9.19 : भारत में वाणिज्य बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	0.21	0.33	0.28	0.57	*	0.57	0.30	1.56	0.39
1992-93	0.22	-1.71	-0.99	0.34	*	0.34	-0.92	-2.70	-1.07
1993-94	0.25	-1.98	-1.15	0.58	*	0.58	-1.05	1.72	-0.84
1994-95	0.54	0.10	0.25	1.16	*	1.16	0.31	1.87	0.43
1995-96	0.42	-0.36	-0.07	1.03	1.89	1.20	0.03	1.59	0.15
1996-97	0.82	0.41	0.56	0.93	1.84	1.15	0.62	1.20	0.66
1997-98	1.04	0.62	0.77	0.80	1.60	1.04	0.80	0.97	0.81
1998-99	0.51	0.37	0.42	0.46	1.05	0.67	0.45	1.01	0.50
1999-2000	0.80	0.44	0.57	0.84	0.97	0.90	0.62	1.24	0.66
2000-01	0.55	0.33	0.42	0.62	0.81	0.71	0.46	1.00	0.50
2001-02	0.77	0.69	0.72	1.08	0.44	0.66	0.71	1.35	0.76
2002-03	0.91	0.98	0.96	1.17	0.88	0.99	0.96	1.59	1.00
2003-04	1.02	1.19	1.12	1.16	0.84	0.95	1.09	1.64	1.13
2004-05	0.91	0.85	0.87	0.19	1.13	0.83	0.86	1.29	0.89
2005-06	0.86	0.80	0.82	0.54	1.00	0.87	0.83	1.54	0.88
2006-07	0.82	0.83	0.83	0.69	0.92	0.87	0.84	1.65	0.90

*: निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त हुए वर्ष से उपलब्ध हुए।
स्रोत: भारत में बैंकों से सम्बन्धित सांख्यिकीय सारणियों (भा.रि.बैंक) से परिकलित।

[4] शहरी समूह में ऐसे केन्द्र शामिल हैं जिनकी जनसंख्या 1 लाख और अधिक है किन्तु 10 लाख से कम है। महानगरीय समूह में ऐसे केन्द्र शामिल हैं जिनकी जनसंख्या 10 लाख और उससे अधिक है ।

सारणी 9.20: चुनिंदा देशों में वाणिज्य बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ

(प्रतिशत)

देश	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं								
यू एस ए	0.84	0.97	0.87	0.77	1.33	1.72	1.26	0.99
कनाडा	*	0.72	0.68	0.52	0.75	0.85	0.71	0.95
यू.के.	*	0.90	0.68	0.65	0.37	0.63	0.54	0.53
इटली	0.68	0.55	0.13	0.05	0.35	0.66	0.60	0.74
फ्रांस	0.28	0.43	0.11	0.13	0.20	0.54	0.48	0.54
जर्मनी	0.23	0.68	-0.19	-0.36	-0.26	0.09	0.33	0.48
जापान	0.13	-0.04	-0.64	-0.64	-0.12	0.13	0.56	0.50
उभरती अर्थव्यवस्थाएं								
मैक्सिको	1.42	1.12	0.90	0.53	1.50	1.09	2.14	2.53
चिली	0.82	1.07	1.32	1.13	1.32	1.30	1.35	1.38
कोरिया	-1.21	-0.39	0.70	0.51	0.02	0.80	1.14	0.98
थाईलैंड	-5.72	0.07	1.47	0.23	0.69	1.24	1.31	0.68
फिलीपीन्स	0.39	0.71	0.54	1.25	1.61	1.10	1.25	1.22
मलेशिया	*	1.18	0.68	1.03	1.10	1.03	1.02	0.99
इंडोनेशिया	-9.42	0.44	0.86	1.30	1.66	2.32	1.52	1.56
ब्राज़ील	1.62	0.65	1.02	2.32	1.90	1.76	2.04	1.85
रूसी महासंघ	2.00	3.69	2.07	1.83	2.35	2.19	2.60	2.33
चीन	0.17	0.17	0.21	0.30	0.49	0.57	0.55	0.62
मेमो:								
श्रेणी	**(-)9.42 - 2.00**	**(-)0.39 - 3.69**	**(-)0.64 - 2.07**	**(-)0.64 - 2.32**	**(-)0.26 - 2.35**	**0.09 - 2.32**	**0.33 - 2.60**	**0.48 - 2.53**
भारत	**0.83**	**0.54**	**0.72**	**0.98**	**1.20**	**0.91**	**0.90**	**0.85**

*: आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं अथवा यदि उपलब्ध हैं तो उनके नमूने बहुत छोटे हैं और इसलिए उनके विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया।
स्रोत : बैंक स्कोप।

कमा सकते हैं। अतः कुल इक्विटी पूंजी की तुलना में कर पश्चात निवल लाभ के रूप में परिभाषित इविटी पर प्रतिलाभ का उपयोग लाभप्रदता की एक वैकल्पिक माप के रूप में किया जाता है। हालांकि, इस उपाय के

चार्ट IX.18: चुनिंदा देशों में बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ - 2006

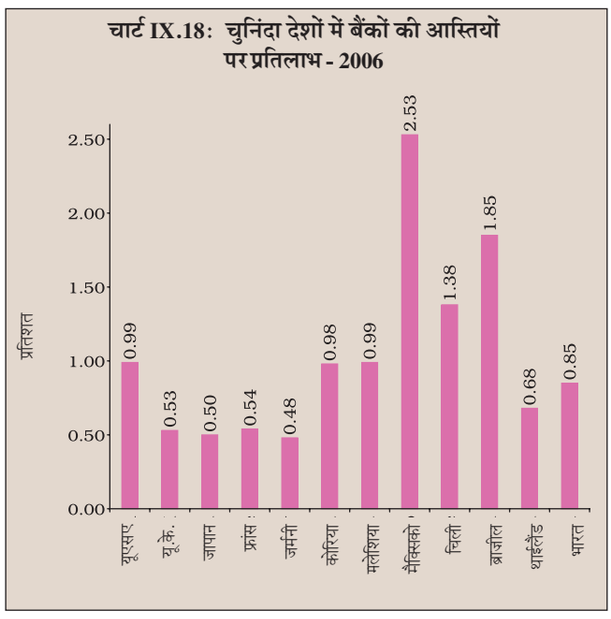

फलस्वरूप होने वाली हानि यह होती है कि उनकी आस्ति का आकार समान होने पर भी विभिन्न बैंकों की इक्विटी में महत्त्वपूर्ण रूप से भिन्नता हो सकती है। हालांकि, विविध प्रकार के देशी बैंक समूहों को इस समस्या का सामना नहीं करना पड़ता, क्योंकि उनकी इक्विटी का स्तर (उनकी जोखिम-भारित आस्तियों के प्रतिशत के रूप में) महत्त्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं होता। इक्विटी पर प्रतिलाभ किसी व्यावसायिक इकाई द्वारा उसके इक्विटी निवेशकर्ताओं के लिए सृजित लाभ को दर्शाता है। इस अनुपात का व्यापक तौर पर उपयोग इक्विटी निवेशकों द्वारा उनके निर्णयन में किया जाता है। उक्त अनुपात का अपेक्षाकृत अधिक मूल्य अपेक्षाकृत अधिक लाभप्रदता, और इसलिए, उत्पादकता दर्शाता है।

9.55 भारतीय बैंकों के मामले में इक्विटी पर प्रतिलाभ में आस्ति पर प्रतिलाभ जैसी ही प्रवृत्ति दिखाई पड़ी। सभी वाणिज्यिक बैंकों के इक्विटी पर प्रतिलाभ में 1991-92 से लेकर 2006-07 तक की अवधि में उनकी लाभप्रदता और भारत में प्रचलित पूंजी की स्थिति के अनुरूप व्यापक रूप से उतार-चढ़ाव हुए हालांकि, आस्ति पर प्रतिलाभ के ठीक विपरीत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का इक्विटी पर प्रतिलाभ विदेशी बैंकों के साथ भी तुलनीय था। वास्तव में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, निजी क्षेत्र के नए बैंकों और विदेशी बैंकों का इक्विटी पर प्रतिलाभ 2006-07 में लगभग 14-15 प्रतिशत के स्तर पर अभिसरित रहा, जबकि निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों का प्रतिलाभ कुछ हद तक पिछड़ गया (सारणी 9.21 और चार्ट IX.19)। वर्ष 2000-01 के दौरान

सारणी 9.21 : भारत में वाणिज्य बैंकों की इक्विटी पर प्रतिलाभ

(प्रतिशत)

वर्ष	देशी बैंक						समस्त देशी बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के समस्त बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1991-92	12.72	10.45	11.02	26.77	*	26.77	11.62	42.26	14.77
1992-93	12.55	-52.44	-36.41	13.62	*	13.62	-34.04	-47.00	-36.10
1993-94	7.44	-33.14	-22.91	19.04	*	19.04	-21.44	24.44	-16.55
1994-95	15.23	1.31	4.28	29.76	*	29.76	5.41	19.73	7.07
1995-96	11.21	-5.46	-1.31	18.09	13.01	16.12	0.55	15.23	2.53
1996-97	17.02	6.16	9.37	15.51	19.50	16.88	10.17	10.73	10.25
1997-98	20.04	8.93	12.21	13.88	19.15	15.88	12.62	8.58	12.07
1998-99	11.10	6.26	7.78	8.41	16.66	11.70	8.24	10.96	8.59
1999-2000	17.25	7.98	11.10	15.19	14.23	14.73	11.66	12.97	11.83
2000-01	12.77	6.44	8.65	11.49	14.79	13.09	9.32	11.53	9.61
2001-02	17.20	12.98	14.45	18.56	7.19	10.99	13.69	14.61	13.81
2002-03	19.50	18.34	18.75	19.56	13.93	15.86	18.12	14.15	17.59
2003-04	20.25	21.22	20.88	19.26	13.52	15.46	19.68	15.30	19.13
2004-05	17.32	14.55	15.46	3.18	14.66	11.50	14.53	10.51	14.02
2005-06	15.82	13.68	14.38	8.13	12.39	11.38	13.55	12.62	13.43
2006-07	15.30	14.65	14.86	10.32	13.57	12.81	14.30	13.86	14.24

* : निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त वर्ष से प्राप्त हुए।

स्रोत : भारत में बैंकों से सम्बन्धित सांख्यिकीय सारणियों (भा.रि.बैंक) से परिकलित।

निजी क्षेत्र के नए बैंकों को छोड़कर सभी बैंक समूहों में निवल लाभों में कमी हो जाने के कारण इक्विटी पर प्रतिलाभ भारी मात्रा में कम हो गया। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के मामले में यह कमी विशेष रूप से अन्य बातों के साथ-साथ उक्त अवधि के दौरान स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति से सम्बन्धित भुगतानों के कारण निर्मित भारी मज़दूरी बिलों के कारण आई।

9.56 विभिन्न देशों के बैंकों के 1999 से लेकर 2006 तक के बीच की अवधि की इक्विटी पर प्रतिलाभ व्यापक रूप से भिन्न-भिन्न हैं । वर्ष 2006 के दौरान हुए अनुपात में 8.10 (थाईलैंड) और 19.21 (मैक्सिको) के बीच अंतर रहा। भारतीय बैंकों का इक्विटी पर प्रतिलाभ (आरओई) अमरीका, इटली, जर्मनी और कोरिया तथा इंडोनेशिया जैसी कुछ उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं के बैंकों के साथ तुलनीय था। ब्राज़ील और रूस में इक्विटी पर प्रतिलाभ कई एक अन्य देशों की तुलना में काफी अधिक थे, जिससे, जैसा कि इसके पहले उल्लेख किया गया है, इन देशों के बैंकों द्वारा प्राप्त किए गए उच्च स्तर के स्प्रेडों का पता चलता है (सारणी 9.22 और चार्ट IX.20)।

चार्ट IX.19: विविध बैंक समूहों की इक्विटी पर प्रतिलाभ - 2006-07

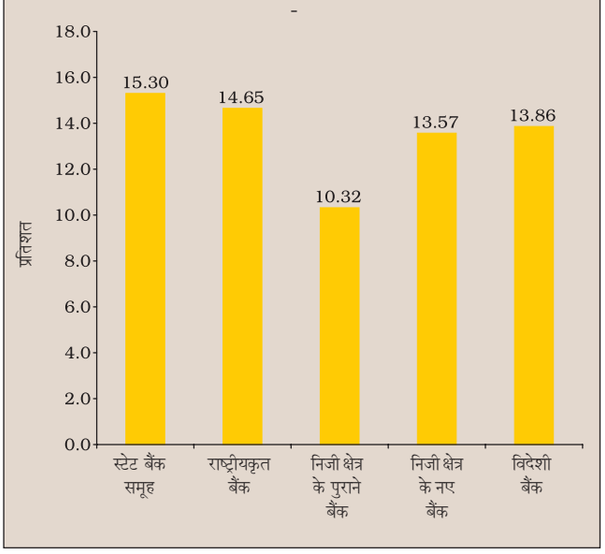

9.57 संक्षेप में विविध प्रकार के लेखांकन मापों के विश्लेषण से सुधारोत्तर अवधि में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता/उत्पादकता में हुए महत्त्वपूर्ण सुधार का पता चलता है, यद्यपि विविध बैंक समूहों में आए इस सुधार के स्तर भिन्न-भिन्न थे। विशेषतः सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के कार्य-निष्पादन में सुधार के प्रारंभिक वर्षों में गिरावट आ गई थी, क्योंकि 8 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को 1992-93 में तथा 6 बैंकों को 1993-94 में निवल हानि वहन करनी पड़ी थी। हालांकि, उसके बाद, विशेषतः 2001-02 के आरंभ से कार्य-निष्पादन में क्रमिक रूप से सुधार हुआ। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सुधार मध्यस्थता लागतों में देखने में आया, जिसमें पिछले कुछ वर्षों में महत्त्वपूर्ण रूप से गिरावट आई है, जिससे गहन होते प्रतिस्पर्धात्मक दबावों के प्रभाव का पता चलता है। हालांकि इसके बावजूद बैंकों की लाभप्रदता में सुधार हुआ, जैसा कि आस्तियों पर प्रतिलाभ से पता चलता है। इसे परिचालन लागत में कटौती करते हुए तथा आय के गैर-ब्याजगत स्रोतों के आश्रय में बढ़ोत्तरी करते हुए, जिन्हें क्रमशः आय की तुलना में लागत अनुपात द्वारा और कुल आस्तियों की तुलना में गैर ब्याजगत आय द्वारा मापा गया, प्राप्त किया गया। अनर्जक

सारणी 9.22: चुनिंदा देशों में वाणिज्य बैंकों की इक्विटी पर प्रतिलाभ

(प्रतिशत)

देश	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं								
यू.एस.ए.	8.81	10.22	6.97	7.25	14.36	18.45	14.08	12.00
कनाडा	*	13.52	12.89	9.77	14.61	17.28	14.37	18.28
यू के	*	14.94	10.31	9.05	9.94	15.56	15.53	15.43
इटली	13.03	10.08	2.29	0.77	5.31	10.00	10.15	12.66
फ्रांस	6.08	7.72	2.29	2.65	3.90	14.54	13.23	14.39
जर्मनी	7.20	16.39	-3.73	-8.76	-6.31	2.61	9.17	13.34
जापान	2.57	-0.88	-15.45	-17.93	-2.88	2.95	10.79	8.83
उभरती अर्थव्यवस्थाएं								
मैक्सिको	15.60	12.04	9.05	4.77	13.27	9.86	17.27	19.21
चिली	10.91	14.52	17.45	12.92	14.55	14.88	15.44	16.68
कोरिया	-24.75	-8.95	14.10	10.88	0.56	14.99	17.76	14.86
थाईलैंड	*	1.35	27.05	3.98	9.61	16.25	15.66	8.10
फिलीपीन्स	2.48	2.78	3.01	6.79	10.51	9.43	11.25	10.65
मलेशिया	*	13.89	8.13	11.71	13.06	13.02	13.12	13.53
इंडोनेशिया	*	6.60	14.08	16.29	17.90	22.49	15.65	14.72
ब्राजील	15.87	6.96	10.49	24.72	17.70	17.39	19.73	18.00
रूसी महासंघ	17.94	27.54	13.28	11.90	15.36	14.43	18.15	17.12
चीन	2.58	2.68	4.42	24.96	65.27	71.04	13.04	11.83
मेमो :								
श्रेणी	**(-)24.75-17.94**	**(-)8.95-27.54**	**(-)15.45-27.05**	**(-)17.93-24.96**	**(-)6.31-65.27**	**2.61-71.04**	**9.17-19.73**	**8.10-19.21**
भारत	**14.18**	**9.65#**	**14.53**	**18.63**	**21.36**	**15.35**	**14.19**	**14.76**

* : आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, अथवा यदि वे उपलब्ध भी हैं तो उनके नमूने बहुत छोटे हैं और इसलिए उनके विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया।

: 2001-02 के दौरान सभी बैंक समूहों (निजी क्षेत्र के नये बैंकों को छोड़कर) के निवल लाभ में विशेषतः अधिक वेतन बिलों (उक्त अवधि के दौरान लागू की गई स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के कारण) के कारण आई कमी की वजह से इक्विटी पर प्रतिलाभ में भारी कमी आ गई थी, जबकि बैंकों की पूंजी में किसी प्रकार की तदनुरूप वृद्धि नहीं हुई थी।

स्रोत: बैंक स्कोप

आस्तियों में अवरुद्ध विगत देय राशियों की वसूली आरक्षित नकदी निधि अनुपात (सीआरआर) और सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) के रूप में सांविधिक पूर्व-क्रयों में कटौती तथा कारपोरेट कर की दरों में कटौती ने भी लाभप्रदता बढ़ाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। पिछले वर्षों के दौरान हुए महत्त्वपूर्ण सुधार के परिणामस्वरूप, विविध प्रकार के अनुपातों द्वारा यथा-निर्धारित भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता/उत्पादकता बढ़ कर वैश्विक स्तर निकट पहुँच गई।

चार्ट IX.20: चुनिंदा देशों के बैंकों की इक्विटी पर प्रतिलाभ - 2006

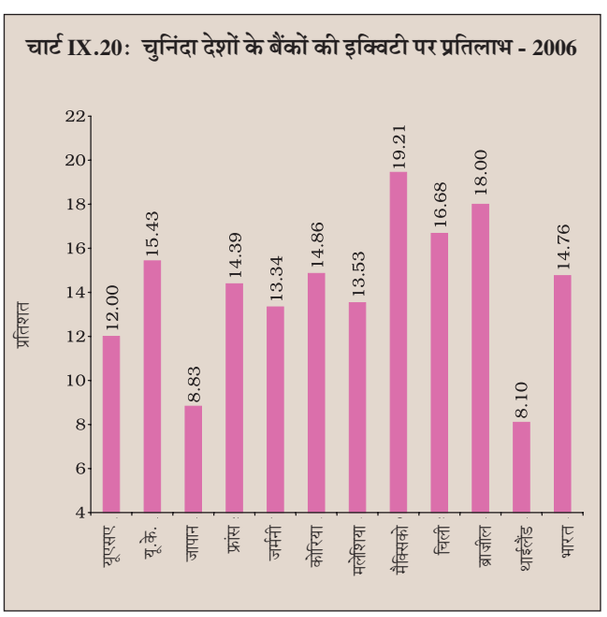

9.58 हालांकि, विभिन्न कार्यकुशलता/उत्पादकता मापों में हुआ सुधार विभिन्न बैंक समूहों के मामले में अलग-अलग था। 1991-92 और 2006-07 के बीच निवल ब्याज अंतर में सबसे बड़ी गिरावट निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के मामले में देखने में आई थी। हालांकि, लागत की तुलना में आय के मामले में सर्वाधिक सुधार प्रदर्शित करने वाला समूह राष्ट्रीयकृत बैंकों का था। प्रति कर्मचारी कारोबार में भारी वृद्धि निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के मामले में परिलक्षित हुई। निजी क्षेत्र के नये बैंकों के गैर-ब्याजगत स्रोतों में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज हुई। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने आस्ति पर प्रतिलाभ और इक्विटी पर प्रतिलाभ के मामले में सर्वाधिक सुधार दर्शाया। अधिकांश अनुपातों के सम्बन्ध में विविध बैंक समूहों का कार्य-निष्पादन अभिसरित होता लगा। 2006-07 के दौरान निजी क्षेत्र के नये बैंक मध्यस्थता लागत (निवल ब्याज मार्जिन के द्वारा मापी गई) की दृष्टि से सर्वाधिक कुशल सिद्ध हुए, उनके काफी निकट राष्ट्रीयकृत बैंक थे। यह उल्लेख करना महत्त्वपूर्ण होगा कि विदेशी बैंक समूह की जमा लागत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की अपेक्षा लगभग 100 आधार अंक कम थी। हालांकि, उनकी उधार देने की दरों में इसका प्रतिबिंबन नहीं हुआ, जिसके

परिणामस्वरूप निवल ब्याज मार्जिन बढ़ गया। तथापि आय की तुलना में परिचालन लागत का अनुपात विदेशी बैंकों के मामले में सर्वाधिक कम, तथा स्टेट बैंक समूह के मामले में सर्वाधिक था। वास्तव में, स्टेट बैंक समूह और विदेशी बैंक दो ऐसे समूह थे जिनका आय की तुलना में लागत अनुपात 1991-92 और 2006-07 की अवधि के बीच बढ़ गया। इससे काफी हद तक श्रम लागत का प्रतिबिंबन हुआ, जो दोनों ही बैंक समूहों के मामले में समान था। तथापि, स्टेट बैंक और अन्य बैंक समूहों की अपेक्षा विदेशी बैंक आमतौर पर महत्त्वपूर्ण रूप से उनकी आय का अपेक्षाकृत एक बड़ा हिस्सा तुलनपत्र में शामिल न की जानेवाली मदों से सृजित करते हैं, जिसके फलस्वरूप आय की तुलना में परिचालन लागत का अनुपात कम हो जाता है। विदेशी और निजी क्षेत्र के नये बैंकों, दोनों ही समूहों के प्रति कर्मचारी कारोबार और प्रति शाखा कारोबार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की तुलना में काफी बेहतर थे। यह इस तथ्य के बावजूद हुआ कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की श्रम उत्पादकता 15 वर्षों के अंतराल में लगभग 10 गुना बढ़ी। एक निश्चित सीमा तक यह इस तथ्य से स्पष्ट हो सकता है कि विदेशी बैंकों और निजी क्षेत्र के नये बैंकों के समूहों के ठीक विपरीत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ग्रामीण शाखाओं का भी संचालन करते हैं, जहाँ लेन-देन का आकार छोटा होता है।

9.59 वर्ष 2006-07 के दौरान विदेशी बैंक समूह का लाभप्रदता अनुपात आय के गैर-ब्याजगत स्रोतों के उच्चतर हिस्से, साथ ही उच्चतर निवल ब्याज मार्जिन के कारण सर्वाधिक था। हालांकि, 2006-07 के दौरान स्टेट बैंक समूह का इक्विटी पर प्रतिलाभ सर्वाधिक था, उसके बाद राष्ट्रीयकृत बैंकों का स्थान था (सारणी 9.23)।

सारणी 9.23 : भारत में वाणिज्य बैंकों के उत्पादकता अनुपात की एक झलक

(प्रतिशत)

अनुपात	वर्ष	देशी बैंक						देशी बैंक समस्त	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
		सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			निजी बैंक					
		स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंक	पुराने निजी बैंक	नए निजी बैंक	समस्त निजी बैंक			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
आस्तियों की तुलना में परिचालन लागत	1991-92	2.48	2.67	2.60	2.97	*	2.97	2.61	2.26	2.59
	1998-99	2.70	2.63	2.65	2.22	1.74	2.04	2.59	3.39	2.65
	2006-07	1.98	1.67	1.77	1.88	2.11	2.06	1.84	2.78	1.91
आय की तुलना में लागत अनुपात	1991-92	47.44	67.51	58.41	58.96	*	58.96	58.44	30.91	55.30
	1998-99	62.41	68.29	65.94	65.13	48.69	58.96	65.26	56.61	64.26
	2006-07	52.80	49.36	50.58	50.72	52.59	52.17	50.98	44.64	50.15
अर्जक आस्तियों की प्रति इकाई श्रम लागत	1991-92	2.41	2.34	2.36	2.86	*	2.86	2.38	1.08	2.30
	1998-99	2.70	2.52	2.58	1.83	0.39	1.30	2.44	1.37	2.35
	2006-07	1.51	1.23	1.32	1.26	0.71	0.84	1.21	1.56	1.23
अर्जक आस्तियों की प्रति इकाई गैर-श्रम लागत	1991-92	1.02	1.05	1.04	1.17	*	1.17	1.05	2.18	1.12
	1998-99	1.09	0.91	0.98	1.07	1.88	1.36	1.02	3.27	1.20
	2006-07	0.79	0.70	0.73	0.96	1.80	1.60	0.93	2.36	1.03
मध्यस्थता लागत	1991-92	5.92	5.66	5.77	6.13	*	6.13	5.79	13.28	6.24
	1998-99	3.49	4.23	3.96	3.86	4.36	4.03	3.98	6.32	4.19
	2006-07	2.97	3.32	3.20	3.63	3.61	3.61	3.30	5.50	3.43
निवल ब्याज मार्जिन (स्प्रेड)	1991-92	3.80	2.86	3.22	4.01	*	4.01	3.26	3.90	3.30
	1998-99	2.85	2.78	2.81	2.17	2.01	2.11	2.73	3.52	2.79
	2006-07	2.79	2.58	2.65	2.74	2.36	2.45	2.60	3.74	2.69
कुल आय की तुलना में अन्य आय (गैर-ब्याजगत)	1991-92	12.31	9.73	10.74	9.62	*	9.62	10.69	22.72	11.82
	1998-99	14.39	10.44	11.91	11.04	14.43	12.25	11.95	19.35	12.67
	2006-07	12.16	10.47	11.04	12.10	19.58	17.86	12.73	27.80	14.09
प्रति कर्मचारी कारोबार (लाख रुपए में)	1991-92	42.99	46.37	45.15	33.48	*	33.48	44.42	199.47	46.66
	1998-99	102.45	107.67	105.78	138.78	793.78	193.95	111.57	504.81	117.72
	2006-07	435.52	490.21	470.99	486.02	818.02	694.07	506.77	995.09	521.94
प्रति शाखा कारोबार (करोड़ रुपए में)	1991-92	10.53	8.27	8.93	4.87	*	4.87	8.59	149.96	9.12
	1998-99	24.92	19.23	20.90	19.04	66.34	25.24	21.32	349.04	22.75
	2006-07	77.14	62.78	66.83	52.31	293.96	133.16	75.04	1004.10	79.39
आस्तियों पर प्रतिलाभ	1991-92	0.21	0.33	0.28	0.57	*	0.57	0.30	1.56	0.39
	1998-99	0.51	0.37	0.42	0.46	1.05	0.67	0.45	1.01	0.50
	2006-07	0.82	0.83	0.83	0.69	0.92	0.87	0.84	1.65	0.90
इक्विटी पर प्रतिलाभ	1991-92	12.72	10.45	11.02	26.77	*	26.77	11.62	42.26	14.77
	1998-99	11.10	6.26	7.78	8.41	16.66	11.70	8.24	10.96	8.59
	2006-07	15.30	14.65	14.86	10.32	13.57	12.81	14.30	13.86	14.24

***:** निजी क्षेत्र के नए बैंकों के प्रकाशित तुलनपत्रों के पहले आंकड़े मार्च 1996 में समाप्त वर्ष से उपलब्ध हुए।
स्रोत: भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणी (भा.रि.बैंक) से परिकलित।

9.60 भारतीय बैंकिंग क्षेत्र के अधिकांश कार्यनिष्पादन संकेतक उन्नत और अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बैंकों के कार्यनिष्पादन के साथ अनुकूल रूप से तुलनीय हैं। उदाहरण के लिए भारत में आय की तुलना में लागत का अनुपात कनाडा, फ्रांस और जर्मनी जैसे कई उन्नत देशों के बैंकों से बेहतर था। इसी प्रकार, कुल आस्तियों की तुलना में परिचालन लागत की दृष्टि से भारत के बैंक मैक्सिको, चिली, थाईलैंड, फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, ब्राज़ील और रूस जैसी कतिपय उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में बेहतर स्थिति में थे। यद्यपि, 1999 और 2006 के बीच की अवधि में श्रम लागत में निरंतर गिरावट की प्रवृत्ति परिलक्षित हुई, तथापि वह चीन, कोरिया और मलेशिया जैसी कई एक उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं तथा विकसित विश्व के अधिकांश उन्नत देशों से भिन्न अर्जक आस्तियों के 1 प्रतिशत से अधिक थी। इससे यह पता चलता है कि श्रम लागत में सुधार की गुंजाइश है। दूसरी ओर, निवल ब्याज मार्जिन (एनआइएम) की दृष्टि से चीन, कोरिया और मलेशिया के बैंक भारत के बैंकों की तुलना में बेहतर स्थिति में थे। बैंकों की आय (गैर-ब्याजगत आय) में गैर-परंपरागत स्रोतों का अंशदान यू.के., इटली और जर्मनी जैसी कई एक उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की अपेक्षा भारत में अपेक्षाकृत अधिक था। इसी प्रकार, वर्ष 2006 में भारत में इक्विटी पर प्रतिलाभ अमरीका, इटली, जर्मनी और जापान जैसी कई एक उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के साथ ही अधिकांश उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले अपेक्षाकृत अधिक था।

IV. भारत में बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता और उत्पादकता की माप- आर्थिक माप

9.61 पिछले खण्ड में कार्य-कुशलता/उत्पादकता को परंपरागत लेखांकन मापों का उपयोग करते हुए मापा गया था। हालांकि, इस प्रकार की माप की सीमाएं होती हैं क्योंकि किसी एक अनुपात का चुनाव किसी बैंक के कार्यनिष्पादन के विविध आयामों के सम्बन्ध में सुस्पष्ट सूचना नहीं प्रदान करता, जिसमें बहुविध आउटपुट का निर्माण करने हेतु बहुविध इनपुट का उपयोग किया जाता है। इसके अलावा, ये माप कार्य-कुशलता और उत्पादकता में सुस्पष्ट रीति से विभेद भी नहीं करते । इस समस्या को उस आर्थिक माप के माध्यम से बेहतर ढंग से हल किया जा सकता है, जिसमें बैंकिंग परिचालनों के सभी पहलुओं को एक ही माप में शामिल कर लिया जाता है।

9.62 आर्थिक मापों (परिशिष्ट IX.1 देखें) की कतिपय तकनीकों में इस अध्याय में प्रयुक्त आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (डीईए) दृष्टिकोण में अन्यों की अपेक्षा कतिपय लाभ निहित होते हैं। एक, यह बैंक स्तर की कार्यकुशलता के अंक उपलब्ध कराता है। दो, इसमें अन्तर्निहित प्रौद्योगिकियों के बारे में पूर्व विनिर्देशन की आवश्यकता नहीं पड़ती।

9.63 आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण दृष्टिकोण में एक श्रेष्ठ प्रथा सीमांत, जो संसाधनों के इष्टतम उपयोग के स्तर का निरूपण करता है तैयार किया जाता है तथा बैंकों की कार्यकुशलता को उस श्रेष्ठ सीमांत (बेंचमार्क) के अनुपात में मापा जाता है। यदि कोई बैंक सीमांत पर है, तो उसे एक कुशल बैंक कहा जाता है, अन्यथा उसे कम कुशल कहा जाता है। बैंक उक्त सीमांत से जितनी ही अधिक दूर होगा, उसकी कार्यकुशलता का स्तर उतना ही कम होगा (बॉक्स IX.6)। चूँकि, व्यवहार में वास्तविक आदर्श प्रौद्योगिकी प्रेक्षणीय नहीं होती, आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण व्यवहार्य प्रौद्योगिकी सीमान्त को परिभाषित करने का प्रयास करता है।

9.64 श्रेष्ठ प्रथा सीमांत का अनुमान लगाने के उद्देश्य से श्रम, अचल आस्तियों, जमाराशियों और उधारों को इनपुट माना गया है, जबकि ऋण, निवेश और तुलनपत्र में शामिल न की जाने वाली मदों के परिचालनों[5] के समकक्ष आस्तियों को आउटपुट माना गया है।

भारत में कार्य-कुशलता के अनुमान

9.65 आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण अनुमानों के अनुसार सुधारों को शुरू किए जाने के बाद सभी बैंक समूहों में कार्य-कुशलता के स्तरों में महत्त्वपूर्ण सुधार हुआ है। कार्य-कुशलता में आया यह सुधार 1992 और 1998 के बीच वाली अवधि के मुकाबले 1998 और 2007 के बीच वाली अवधि में अधिक मुखर था। 1991-92 के दौरान बैंकिंग क्षेत्र के आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण के अनुमानों के आधार पर लागत कार्य-कुशलता 0.42 थी (जिससे यह संकेत प्राप्त होता है कि प्रेक्षित इनपुट-आउटपुट पुंजों और व्यवहार्य प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखते हुए उसी स्तर के आउटपुट का निर्माण करने हेतु 58 प्रतिशत लागत कम की जा सकती थी), जो 2006-07 तक बढ़कर 0.71 हो गई (सारणी 9.24)। बैंक-समूहों की दृष्टि से 1992 और 2007 की अवधि के बीच लागत कार्य-कुशलता में अभिलाभ 1990 वाले दशक के प्रारंभिक दिनों में व्यापक रूप से कम आधार के कारण अन्य बैंक समूहों की तुलना में निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के मामले में अधिक महत्त्वपूर्ण थे। निजी बैंक समूहों द्वारा प्राप्त भारी अभिलाभों के बावजूद, जहाँ तक सम्पूर्ण कार्य-कुशलता का सम्बन्ध है, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, विशेषतः स्टेट बैंक समूह बाज़ार में अपना अग्रणी स्थान बनाए रखने में सफल रहे।

9.66 वर्ष 2006-07 के दौरान, 0.85 की कार्य-कुशलता स्तर के साथ स्टेट बैंक समूह सर्वाधिक लागत कुशल था, उसके बाद 0.83 के कार्य-कुशलता स्तर के साथ निजी क्षेत्र के नये बैंकों, 0.80 के कार्यकुशलता स्तर के साथ राष्ट्रीयकृत बैंकों, 0.66 के कार्य-कुशलता स्तर के साथ विदेशी बैंकों और 0.59 के कार्य-कुशलता स्तर के साथ निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों का स्थान था (सारणी 9.24)। दूसरे शब्दों में, निजी क्षेत्र के पुराने बैंक निरपेक्ष दृष्टि से सबसे कम लागत-कुशल बैंक थे । महत्त्वपूर्ण

5. तुलन पत्र में शामिल न किए गए परिचालनों की समतुल्य आस्ति का निर्धारण बैंको की कुल आस्तियों के साथ कुल आय की तुलना में गैर-ब्याजगत आय अनुपात को गुणा कर के किया गया है ।

बॉक्स IX.6
आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण

आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण बैंक/फर्म जैसी किसी निर्णयकर्ता इकाई (डीएमयू) की कार्यकुशलता को मापने की एक गैर-मानदंडीय पद्धति होती है। आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (डीईए) में प्रेक्षित आंकड़ों से एक श्रेष्ठ प्रथा सीमांत का निर्माण करने तथा निर्मित सीमांत के अनुरूप कार्यकुशलता मापने के लिए गणितीय योजना का उपयोग किया जाता है। आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण के सीमांत का निर्माण श्रेष्ठ प्रथा प्रेक्षणों (स्थानवार रैखिक संयोजन) के सेट को जोड़कर किया जाता है। इस प्रकार निर्णयकर्ता इकाई अथवा बैंक के लिए आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण के कार्य-कुशलता अंक को किसी निरपेक्ष मानक द्वारा परिभाषित नहीं किया जाता, अपितु उसे अन्य बैंकों से परिभाषित किया जाता है। किसी ऐसे उद्योग के मामले में जहाँ दो इनपुटों का उपयोग करते हुए एक आउटपुट निर्मित किया जाता है, इसे किसी इकाई के आइसोक्वैंट (esoquant) द्वारा भी दर्शाया जा सकता है।

आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण को समझाने का सर्वोत्तम तरीका है अनुपात के रूप वाला तरीका। प्रत्येक निर्णयकर्ता इकाई के लिए हम समस्त इनपुटों (x) की तुलना में समस्त आउटपुटों (y) के अनुपात का माप प्राप्त करना चाहेंगे, जैसे u'y/v'x, जिसमें U आउटपुट का भार तथा V इनपुट का भार होता है। इष्टतम भारों का चयन करने हेतु, हम गणितीय योजना की समस्या का विनिर्देशन करते हैं।

अधिकतम (u'y / v'x)

s.t. u'y/v'x $\leq$ 1, j=1,2……..N

u, v $\geq$ 0

इसमें u और v का इस प्रकार मूल्य ज्ञात करना शामिल होता है कि 1v निर्णयकर्ता इकाई की कार्यकुशलता का माप इस प्रतिबंध की शर्त पर अधिकतम हो जाए कि समस्त कार्यकुशलता माप आवश्यक रूप से एक से कम अथवा इसके बराबर हों। इस विशिष्ट अनुपात विन्यास के साथ एक समस्या यह होती है कि इसमें हलों की अनंत संख्या होती है। इससे बचने के लिए इस समस्या के एक समकक्ष पर्यावरणिक रूप का अनुमान लगाया जाता है। यथा

न्यूनतम Φ

s.t. $-y + Y\lambda \geq 0$,

$\Theta x - X\lambda \geq 0$

इसे निम्नलिखित परिकल्पित उदाहरण द्वारा समझाया जा सकता है : फर्म सी की तकनीकी कार्यकुशलता (φ) का मूल्यांकन करने हेतु निम्नलिखित रैखिक योजना को हल किया जाता है :

सारणी : छह फर्मों की परिकल्पित इनपुट और आउटपुट मात्राएं

फर्म	ए	बी	सी	डी	ई	एफ
आउटपुट 1	4	9	6	8	7	11
आउटपुट 2	2	4	3	6	5	8
आउटपुट 1	2	7	6	5	8	6
आउटपुट 2	3	5	7	8	4	6

Max φ

s.t. $4\lambda_A + 9\lambda_B + 6\lambda_C + 8\lambda_D + 7\lambda_E + 11\lambda_F - 6\varphi \geq 0$;

$2\lambda_A + 4\lambda_B + 3\lambda_C + 6\lambda_D + 5\lambda_E + 8\lambda_F - 3\varphi \geq 0$

$2\lambda_A + 7\lambda_B + 6\lambda_C + 5\lambda_D + 8\lambda_E + 6\lambda_F \leq 6$

$3\lambda_A + 5\lambda_B + 7\lambda_C + 8\lambda_D + 4\lambda_E + 6\lambda_F \leq 7$

$\lambda_A, \lambda_B, \lambda_C ..... \lambda_F \geq 0$; Φ free

फर्म सी की आउटपुट मात्राएं असमानताओं की बाईं ओर Φ के सहगुणांक के रूप में दिखाई देती हैं, जहां उसकी इनपुट मात्राएं बाधाओं की दाहिनी ओर दिखाई देती हैं। इस समस्या का इष्टतम हल निम्नानुसार है :

$\lambda^*_A = 1$; $\lambda^*_F = 0.667$; $\lambda^*_B = \lambda^*_C = \lambda^*_D = 0$; $\varphi^* = 1.889$

इसका अर्थ यह हुआ कि यदि हम फर्म एफ के 66.7 प्रतिशत इनपुट-आउटपुट बंडलों को फर्म ए के इनपुट-आउटपुट बंडलों के साथ मिलकर किसी संदर्भ फर्म (उदाहरण के लिए 'सी') का निर्माण करते हैं, तो यह नयी फर्म x 1 की 6 इकाइयों और x 2 की 7 इकाइयों का उपयोग करते हुए y 1 की 11.33 इकाइयों और y2 की 7.33 इकाइयों का निर्माण करेगी। इस संभाव्य आउटपुट बंडल की फर्म सी के वास्तविक आउटपुट स्तरों से तुलना किए जाने पर यह पता चलता है कि आउटपुट y 2 को 1.889 के एक कारक द्वारा विस्तारित किया जा सकता है, जबकि आउटपुट y2 को 2.444 के कारक द्वारा बढ़ाया जा सकता है। इसे इष्टतम हल में φ^* द्वारा मापा जाता है। इसलिए फर्म सी की तकनीकी कार्य-कुशलता का माप निम्नानुसार है:

$$TE(C) = 1/1.889 = 0.529$$

आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण को सर्वप्रथम परिचालन अनुसंधान सामग्री में चार्न्स, कूपर और रॉड्स (सीसीआर मॉडल, यूरोपियन जर्नल ऑफ ऑपरेशन्स रिसर्च : 1978) (रे; 2004) द्वारा लागू किया गया था। यद्यपि मूल सीसीआर मॉडल केवल भारी मात्रा में स्थिर प्रतिलाभों की विशिष्टता वाली प्रौद्योगिकियों पर ही लागू होता था, बैंकर, चार्न्स और कूपर (बीसीसी) (प्रबंधन विज्ञान, 1984) में सीसीआर मॉडल को उन प्रौद्योगिकियों तक विस्तारित कर दिया जो भारी मात्रा में परिवर्ती प्रतिलाभ दर्शाती हैं।

यद्यपि, प्रथमदृष्ट्या आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण अपेक्षाकृत एक नयी पद्धती लगता है, तथापि अर्थशास्त्र में आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण का बौद्धिक समर्थन किए जाने की परंपरा 1950 वाले दशक से ही आरंभ हो गई थी। डेब्रू (1951) ने संसाधन उपयोग के सह-गुणांक को सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की तकनीकी कार्य-कुशलता के एक माप के रूप में परिभाषित किया था तथा इकाई से इस माप के किसी भी विचलन को संसाधनों के अकुशल उपयोग के कारण समाज को होने वाली अति भार वाली क्षति के रूप में माना गया था। फैरेल (1957) ने फर्मों के नमूनों के वास्तविक इनपुट-आउटपुट आंकड़ों का उपयोग करते हुए एक रैखिक कार्यक्रम मॉडल की रचना की। उन्होंने प्रेक्षित इनपुट-आउटपुट समूहों के समावेश वाले शंकु की उत्तल पोत खोल द्वारा निर्धारित अन्तर्निहित उत्पादन संभाव्यता का मोटा अनुमान लगाया। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले के कृषि अर्थशास्त्रियों के एक दल ने फैरेल के माप में और सुधार किया। ऐग्नर और चू ने उत्पादन सीमांत के मानदंडीय विनिर्देशन को बनाए रखा, किन्तु प्रतिबंधित प्रेक्षित आंकड़े इस कार्य के पीछे निहित असत्य को उजागर कर देते हैं। उन्होंने गणितीय योजना का उपयोग करते हुए विनिर्दिष्ट कार्य को आंकड़ों के यथासंभव निकट लाने का प्रस्ताव रखा।

दूसरे शब्दों में, अर्थशास्त्र में रैखिक योजना का उपयोग करते हुए कार्यकुशलता के गैर-मानदंडीय विश्लेषण के पीछे सामग्री में आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण को औपचारिक रूप से लागू किए जाने के पहले एक लम्बा इतिहास निहित है।

सन्दर्भ :

बैंकर, आर.डी. ए .चार्न्स और डब्ल्यू.डब्ल्यू.कूपर, 1984, 'सम मॉडेल्स फार एस्टीमेटिंग टेक्निकल एण्ड स्केल इन-एफिसिएन्सीज इन डेटा एन्वेलपमेंट एनालिसिस,' मैनेजमेंट साइंस, 30(9): 1078-1092.

चार्न्स, ए. डब्ल्यू.डब्ल्यू.कूपर और ई. रॉड्स, 1978, ''मेजरिंग दि इफिसियेन्सी ऑफ डिसीजन मेकिंग यूनिट्स यूरोपियन जर्नल ऑफ ऑपरेशनल रिसर्च, 2(4): 429-444.

डेब्रू, जी, 1951, 'दि कोएफिसिएंट ऑफ रिसेर्स यूटीलाइजेशन'' इकॉनॉमेट्रिका, 19:273-92.

फैरल, एम.जे.1957, ''दि मेजरमेंट ऑफ प्रोडॅक्टिव एफिसिएंसी '' जर्नल ऑफ रॉयल स्टैटिस्टिकल सोसाइटी, 120(ए), 253-81.

रे, एस. 2004, डाटा एन्वेलपमेंट एनालिसिस, टेकनीक्स फॉर आपरेशन्स रिसर्च एण्ड इकॉनॉमिक्स.

सारणी 9.24 : बैंक समूहवार कार्य-कुशलता के स्तर

बैंक समूह	कार्य-कुशलता के स्तर				कार्य-कुशलता की वृद्धि दर (प्रतिशत में)		
	कार्यकुशलता का प्रकार	1991-92*	1997-98	2006-07	1992 से1998तक	1998 से 2007तक	1992 से 2007 तक
1	2	3	4	5	6	7	8
स्टेट बैंक समूह	लागत	0.52	0.57	0.85	10.62	48.53	64.30
	तकनीकी	0.70	0.75	0.95	7.49	26.89	36.38
	निर्धारक	0.74	0.76	0.89	3.07	17.13	20.73
राष्ट्रीयकृत बैंक	लागत	0.53	0.60	0.80	11.71	34.82	50.61
	तकनीकी	0.69	0.76	0.93	10.31	22.10	34.69
	निर्धारक	0.77	0.78	0.86	1.59	10.21	11.96
पुराने निजी बैंक	लागत	0.29	0.42	0.59	44.98	40.52	103.72
	तकनीकी	0.49	0.52	0.72	4.72	40.08	46.70
	निर्धारक	0.59	0.82	0.81	37.99	-0.39	37.46
नए निजी बैंक	लागत	0.45	0.53	0.83	18.84	57.15	86.76
	तकनीकी	0.56	0.60	0.95	7.62	57.31	69.30
	निर्धारक	0.84	0.88	0.88	5.02	-0.45	4.55
विदेशी बैंक	लागत	0.43	0.50	0.66	16.34	31.11	52.54
	तकनीकी	0.51	0.61	0.79	19.58	29.89	55.33
	निर्धारक	0.84	0.83	0.83	-1.42	-0.59	-2.01
समस्त बैंक	लागत	0.42	0.51	0.71	20.80	39.65	68.70
	तकनीकी	0.57	0.63	0.84	9.53	33.38	46.09
	निर्धारक	0.73	0.82	0.84	12.03	3.22	15.64

*: नए निजी बैंकों के मामले में आंकड़े 1996-97 से सम्बन्धित हैं।

रूप से विदेशी बैंकों को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की तुलना में कम कार्यकुशल पाया गया।

9.67 जहाँ तक विदेशी बैंक समूह के मामले में देखने में आई कार्यकुशलता के अपेक्षाकृत कम स्तरों का सम्बन्ध है, यह उल्लेखनीय है कि 0.37 के सर्वाधिक कम स्तर से लेकर 1.0 के अधिकतम स्तर जैसे अलग-अलग स्तरों वाला यह एक अत्यधिक विषम जातीय समूह है। इसके अलावा, इस समूह में शामिल बहुत कम कार्य-कुशलता स्तर वाले बैंक बहुत छोटे आकार तथा सीमित कारोबारी परिचालन वाले बैंक भी हैं। इन बहिर्वासी (कम कार्य-कुशलता वाले) बैंकों को छोड़कर विदेशी बैंक समूह का औसत कार्य-कुशलता स्तर, जिसका एक साथ मिला देने पर इस समूह के समग्र आकार (कुल आस्तियों की दृष्टि से) के 20 प्रतिशत से अधिक अंश नहीं होता, 1997-98 में 0.66 से अधिक और 2006-07 में लगभग 1.0 था। कुल 28 विदेशी बैंकों में से 2006-07 में 9 बैंकों का कार्य-कुशलता स्तर 1.0 था, 1997-98 में केवल एक विदेशी बैंक का कार्य-कुशलता अंक 1.0 था, जो संयोगवश किसी भी समूह में 1.0 कार्य-कुशलता अंक रखने वाला एकमात्र बैंक था। दूसरी ओर, सार्वजनिक क्षेत्र के सभी 28 बैंक 0.8 और 1.0 वाली कार्य-कुशलता श्रेणी में थे, जिनमें से 5 बैंकों का कार्य-कुशलता स्तर 1.0 था। सार्वजनिक क्षेत्र के 24 बैंकों ने 1997-98 के 0.60 - 0.79 स्तर तक के कार्य-कुशलता अंक की तुलना में 2006-07 में 0.80 - 1.0 का स्तर प्राप्त कर लिया। निजी क्षेत्र के छ: नए बैंकों में से तीन बैंक 1.0 वाले कार्य-कुशलता स्तर में थे। निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों में से किसी ने भी 1.0 का कार्य-कुशलता स्तर नहीं प्राप्त किया था। उद्योग के जिन कुल 17 बैंकों ने 2006-07 में 1.0 प्रतिशत का कार्य-कुशलता स्तर दर्ज किया था, उनमें से 9 विदेशी बैंक समूह से, निजी क्षेत्र के नये बैंक और स्टेट बैंक समूह प्रत्येक से 3 और राष्ट्रीयकृत बैंक समूह से 2 बैंक थे (सारणी 9.25)।

9.68 आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (डीईए) के माध्यम से निर्मित लागत कार्य-कुशलता अनुमानों को तकनीकी और निर्धारक कार्य-कुशलता में विश्रृंखलित किया जा सकता है। तकनीकी कार्य-कुशलता से आशय है, किसी बैंक की एक निश्चित निविष्टि (इनपुट) समूह से अधिकतम आउटपुट प्राप्त करने की योग्यता, जबकि निर्धारक कार्य-कुशलता से आशय होता है बैंक की इनपुटों के सम्बन्धित मूल्यों को ध्यान में रखते हुए उनका इष्टतम मात्रा में उपयोग करने की योग्यता। समग्र कार्य-कुशलता में प्राप्त अधिकांश अभिलाभ निर्धारक कार्य-कुशलता (1991-92 में 0.73 से 2006-07 में 0.84) के बजाय तकनीकी कार्य-कुशलता (1991-92 में 0.57 से 2006-07 में 0.84) में हैं। तकनीकी और निर्धारक कार्य-कुशलता की दृष्टि से सापेक्ष्य अभिलाभ विभिन्न बैंक समूहों के कार्य-निष्पादन के प्रति और अधिक अंतर्दृष्टि उपलब्ध कराते हैं (चार्ट IX.21)। महत्त्वपूर्ण रूप से विदेशी और निजी बैंकों के मामले में प्राप्त अभिलाभ केवल तकनीकी कार्य-कुशलता तक ही सीमित थे। इन बैंकों की निर्धारक कार्य-कुशलता 1990 वाले दशक के आरंभ से हमेशा अधिक रही है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के मामले में ये अभिलाभ तकनीकी और निर्धारक,

सारणी 9.25 : कार्य-कुशलता की आवृत्ति का वितरण

कार्य-कुशलता अंक	स्टेट बैंक समूह			राष्ट्रीयकृत बैंक			निजी क्षेत्र के पुराने बैंक			निजी क्षेत्र के नए बैंक			विदेशी बैंक		
	1991-92	1997-98	2006-07	1991-92	1997-98	2006-07	1991-92	1997-98	2006-07	1991-92	1997-98	2006-07	1991-92	1997-98	2006-07
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
0-0.19	0	0	0	0	0	0	0	0	0	–	0	0	0	0	0
0.20-0.39	0	0	0	0	0	0	6	4	0	–	0	0	5	4	2
0.40-0.59	0	0	0	3	0	0	16	13	5	–	3	0	11	16	4
0.60-.0.79	7	7	0	15	17	0	2	7	8	–	5	0	4	10	6
0.80-1.00	1	1	8	1	2	20	0	0	6	–	0	6	1	5	16
जिसमें से :															
1.0	0	0	3	0	0	2	0	0	0	–	0	3	1	1	9
मेमो : औसत शीर्ष 5	0.74	0.78	0.98	0.78	0.8	0.98	0.63	0.65	0.89	–	0.64	0.97	0.71	0.88	1

दोनों ही प्रकार की कार्य-कुशलता में वितरित किए गए हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की निर्धारक कार्य-कुशलता में हुए अभिलाभों का कारण विगत अनर्जक आस्तियों की वसूली तथा ऋण जोखिम परिवेश में सुधार हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप सुधारोत्तर अवधि में वृद्धिशील अनर्जक आस्तियों में तीव्र गिरावट आई। निर्धारक कार्य-कुशलता में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा प्राप्त काफी अभिलाभ भी इस बात के संकेतक हो सकते

चार्ट IX.21: कार्य कुशलता में बैंक समूहवार प्रवृत्तियां (1992-2007)

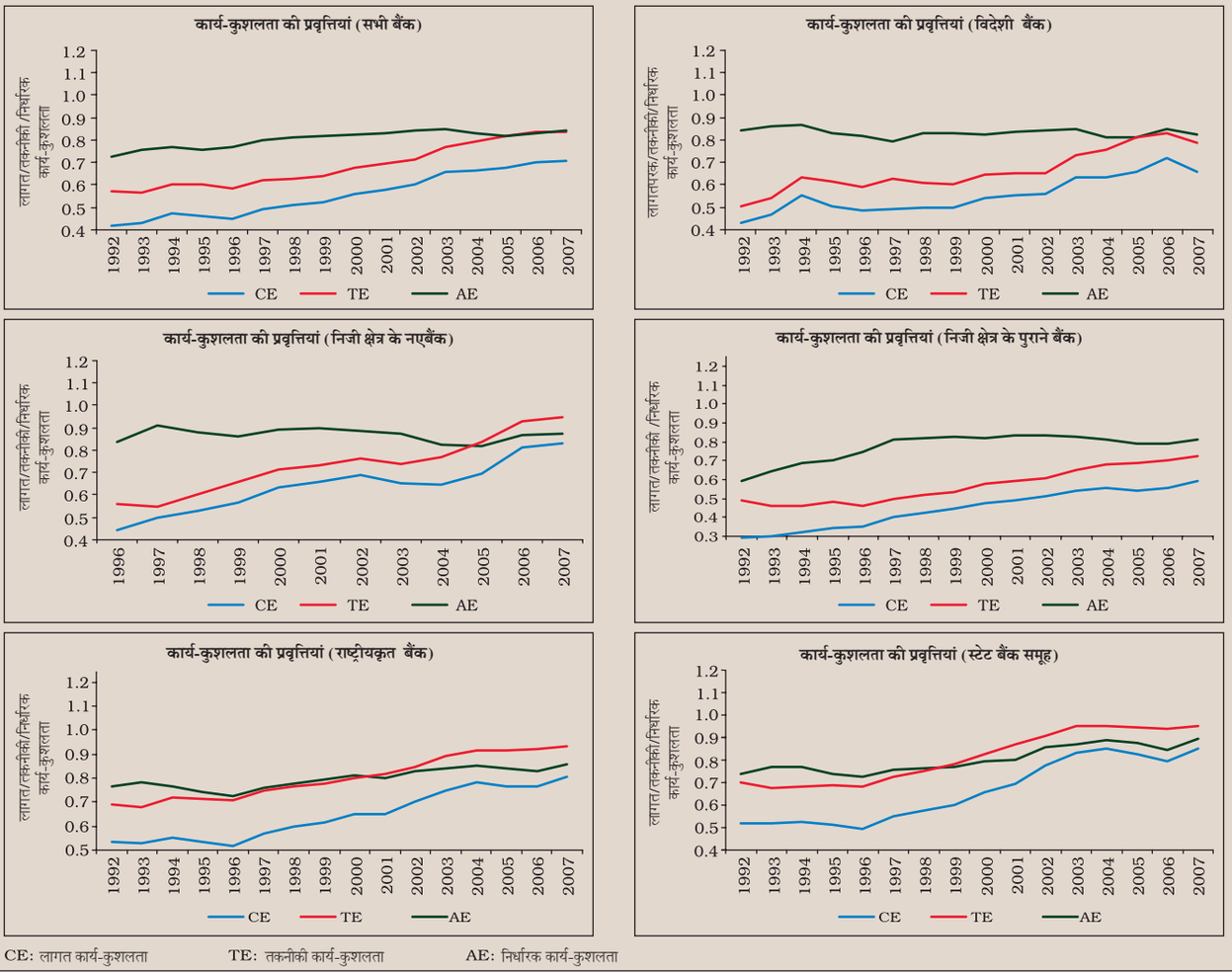

CE: लागत कार्य-कुशलता TE: तकनीकी कार्य-कुशलता AE: निर्धारक कार्य-कुशलता

हैं कि ग्रामीण और प्राथमिकता क्षेत्र उधार, जिनमें सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के कुल कारोबार के महत्त्वपूर्ण हिस्से का समावेश होता है, वाणिज्यिक रूप से सुदृढ़ और व्यवहार्य कारोबार का अंश होता है।

कार्य-कुशलता और स्वामित्व

9.69 सामग्री से यह पता चलता है कि स्वामित्व अलग-अलग बैंकों अथवा बैंक समूहों के विभेदक कार्य-निष्पादन को समझाने का एक महत्त्वपूर्ण कारक हो सकता है। भिन्न-भिन्न स्वामित्व के रूपों का सहारा लेकर निर्मित बैंकों के अलग-अलग कार्य-कुशलता स्तरों को प्रधान-एजेंट वाले ढांचे में तलाशा जा सकता है। निजी संस्थाओं में प्रबंधक पूंजी बाज़ार के अनुशासन द्वारा अधिक प्रतिबंधित होते हैं। इसके विपरीत स्वामी के नियंत्रण के अभाव में प्रबंधन अपनी कार्य-सूची को आगे बढ़ाने की दृष्टि से और स्वतंत्र हो जाता है तथा उसे कुशल होने के लिए कुछ प्रोत्साहन भी प्राप्त होते हैं। इस तर्क के आधार पर निजी क्षेत्र के बैंकों से सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकिंग संस्थाओं की तुलना में अधिक कार्य-कुशल होने की आशा की जा सकेगी।

9.70 हालांकि, भारत के मामले में साक्ष्य से यह पता चलता है कि कार्य-कुशलता के साथ स्वामित्व का कोई निश्चित संबंध नहीं होता। वर्ष 2006-07 के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के तहत स्टेट बैंक समूह सर्वाधिक कार्य-कुशल था, उसके बाद निजी क्षेत्र के नए बैंक, राष्ट्रीयकृत बैंक (सार्वजनिक क्षेत्र के तहत), विदेशी बैंक और निजी क्षेत्र के पुराने बैंक थे (सारणी 9.22 देखें)। हालांकि, कभी-कभी समेकित सूचना समूह का गठन करने वाले किसी एक बैंक के स्तर पर भारी अंतर होने के कारण भ्रामक हो सकती है। विशेष रूप से, जैसाकि इसके पहले उल्लेख किया गया है, विदेशी बैंक समूह अत्यंत विषम जातीय है। अतः स्वामित्व और कार्य-कुशलता के बीच संबंध का किसी एक बैंक के स्तर पर अधिक सुस्पष्ट ढंग से मूल्यांकन किया जा सकता है। आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण की कार्य-कुशलता के विश्लेषण से यह पता चलता है कि सर्वाधिक कार्य-कुशल बैंक सार्वजनिक और निजी क्षेत्र, दोनों ही में पाए जा सकते हैं। कुल मिलाकर सत्रह सर्वाधिक कुशल बैंक हैं जो सार्वजनिक, निजी और विदेशी बैंक समूहों से सबधित हैं। वास्तव में, समस्त 28 सबसे कम कार्य-कुशल बैंक निजी क्षेत्र में (पुराने निजी अथवा विदेशी) हैं (चार्ट IX.22 और सारणी 9.26)। इससे यह पता चलता है कि भारतीय संदर्भ में, स्वामित्व और आकार के बीच संबंध महत्त्वपूर्ण नहीं है।

भारत में बैंकों की कार्य -कुशलता में अंतर का पता कैसे चलता है?

9.71 पिछले खण्ड में हमने बैंकिंग क्षेत्र के साथ ही विविध बैंक समूहों की कार्य-कुशलता का मूल्यांकन किया है। जैसा कि कई एक अन्य देशों में होता है, विविध बैंक समूहों और अलग-अलग बैंकों की कार्य-कुशलता के स्तरों में भिन्नता पाई गई थी। अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में, सामग्री का एक ऐसा विपुल भंडार मौजूद होता है, जो इस बात का स्पष्टीकरण उपलब्ध कराता है कि देश के भीतर और विभिन्न देशों में कार्य- कुशलता के स्तर भिन्न-भिन्न क्यों हो सकते हैं (बॉक्स IX.7)।

चार्ट IX.22: कार्य -कुशलता और स्वामित्व

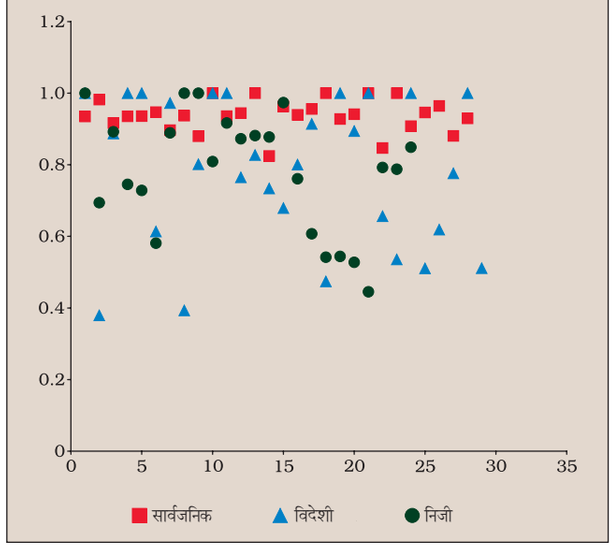

9.72 जबकि उन कारकों के बारे में कोई आम राय नहीं हैं, जो कार्य कुशलता में अंतर्निहित अंतर को स्पष्ट करें, तथापि दो विशिष्ट कारकों पर प्रायः बहस की जाती रही है, ये कारक हैं आकार और विविधीकरण अर्थात क्या बड़े और विविधीकृत बैंक अपेक्षाकृत छोटे और विशिष्टीकृत बैंकों की तुलना में अधिक कार्य-कुशल होते हैं (बॉक्स IX.7)। ये दो पहलू इस समेकन प्रक्रिया की दृष्टि से और भी महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं, जिसे कई देशों में कार्यान्वित किया जा रहा है। वास्तव में संपूर्ण विश्व में कार्यान्वित की जा रही समेकन की प्रक्रिया के पीछे निहित एक कारण है बड़े पैमाने की किफायतें लाना। इसी प्रकार बैंक गैर-परंपरागत क्रियाकलापों में विविधीकरण कर रहे हैं, ताकि वे अर्थव्यवस्था के बड़े पैमाने पर प्रसार का लाभ उठा सकें। अनुसंधानकर्ताओं ने लागतपरक कार्य-कुशलता के अभिलाभों को बहुविध उत्पाद लाइनों के संयोजन से जुड़ा पाया है। एक, इस प्रकार की सामान्य सूचना प्रणाली वाला एक विविधीकृत बैंक, जिसका उपयोग सभी उत्पाद लाइनों में किया जा सके, सूचना एकत्रित करने की लागत केवल एक बार ही वहन करता है। दो, सुपुर्दगी, विपणन और भौतिक निविष्टियों को सेवाओं के अपेक्षाकृत बड़े सेट का निर्माण करने हेतु उत्पादन में संयोजित किया जा सकता है। अंतिम बात जब विभिन्न सेवाओं में निहित जोखिम अपूर्ण रूप से सह-संबद्ध हो, तो उस स्थिति में विविधीकृत जोखिम संविभाग के माध्यम से जोखिम प्रबंधन में किफायत की संभाव्यता होती है। विविधीकृत संगठन का लाभ भी इस दृष्टि से कम अस्थिर हो सकता है कि वे अपनी जोखिम और राजस्व लाभों को कुशलतापूर्वक विशाखित कर सकते हैं। हालांकि, बड़े पैमाने पर किफायत और अर्थव्यवस्था के बड़े पैमाने पर प्रसार, दोनों ही का अनुभवजन्य साक्ष्य मिश्रित होता है।

9.73 भारत में भी, बैंक भिन्न-भिन्न आकारों वाले हैं। उनके आकार चाहे जैसे भी क्यों न हों, बैंकों ने व्यापारी बैंकिंग, बीमा और कतिपय अन्य

सारणी 9.26 : बैंकों की कार्य-कुशलता श्रेणी

क्रम सं.	कार्य-कुशलता श्रेणी	कार्य-कुशलता अंक (1- सर्वाधिक कुशल) (0- सबसे कम कुशल)	बैंक समूह	क्रम सं.	कार्य-कुशलता श्रेणी	कार्य-कुशलता अंक (1- सर्वाधिक कुशल) (0- सबसे कम कुशल)	बैंक समूह
1	2	3	4	5	6	7	8
1	1	1.000	सार्वजनिक क्षेत्र	41	25	0.894	विदेशी बैंक
2	1	1.000	सार्वजनिक क्षेत्र	42	26	0.892	निजी क्षेत्र
3	1	1.000	सार्वजनिक क्षेत्र	43	27	0.889	निजी क्षेत्र
4	1	1.000	सार्वजनिक क्षेत्र	44	28	0.888	विदेशी बैंक
5	1	1.000	सार्वजनिक क्षेत्र	45	29	0.882	निजी क्षेत्र
6	1	1.000	निजी क्षेत्र	46	30	0.881	सार्वजनिक क्षेत्र
7	1	1.000	निजी क्षेत्र	47	31	0.880	सार्वजनिक क्षेत्र
8	1	1.000	निजी क्षेत्र	48	32	0.877	निजी क्षेत्र
9	1	1.000	विदेशी बैंक	49	33	0.873	निजी क्षेत्र
10	1	1.000	विदेशी बैंक	50	34	0.849	निजी क्षेत्र
11	1	1.000	विदेशी बैंक	51	35	0.847	सार्वजनिक क्षेत्र
12	1	1.000	विदेशी बैंक	52	36	0.827	विदेशी बैंक
13	1	1.000	विदेशी बैंक	53	37	0.825	सार्वजनिक क्षेत्र
14	1	1.000	विदेशी बैंक	54	38	0.809	निजी क्षेत्र
15	1	1.000	विदेशी बैंक	55	39	0.801	विदेशी बैंक
16	1	1.000	विदेशी बैंक	56	40	0.801	विदेशी बैंक
17	1	1.000	विदेशी बैंक	57	41	0.793	निजी क्षेत्र
18	2	0.982	सार्वजनिक क्षेत्र	58	42	0.788	निजी क्षेत्र
19	3	0.974	निजी क्षेत्र	59	43	0.776	विदेशी बैंक
20	4	0.972	विदेशी बैंक	60	44	0.765	विदेशी बैंक
21	5	0.965	सार्वजनिक क्षेत्र	61	45	0.761	निजी क्षेत्र
22	6	0.963	सार्वजनिक क्षेत्र	62	46	0.745	निजी क्षेत्र
23	7	0.956	सार्वजनिक क्षेत्र	63	47	0.734	विदेशी बैंक
24	8	0.947	सार्वजनिक क्षेत्र	64	48	0.729	निजी क्षेत्र
25	9	0.946	सार्वजनिक क्षेत्र	65	49	0.694	निजी क्षेत्र
26	10	0.944	सार्वजनिक क्षेत्र	66	50	0.679	निजी क्षेत्र
27	11	0.941	सार्वजनिक क्षेत्र	67	51	0.656	विदेशी बैंक
28	12	0.939	सार्वजनिक क्षेत्र	68	52	0.619	विदेशी बैंक
29	13	0.937	सार्वजनिक क्षेत्र	69	53	0.613	विदेशी बैंक
30	14	0.936	सार्वजनिक क्षेत्र	70	54	0.607	निजी क्षेत्र
31	15	0.936	सार्वजनिक क्षेत्र	71	55	0.581	निजी क्षेत्र
32	16	0.936	सार्वजनिक क्षेत्र	72	56	0.544	निजी क्षेत्र
33	17	0.935	सार्वजनिक क्षेत्र	73	57	0.542	निजी क्षेत्र
34	18	0.930	सार्वजनिक क्षेत्र	74	58	0.536	विदेशी बैंक
35	19	0.928	सार्वजनिक क्षेत्र	75	59	0.528	निजी क्षेत्र
36	20	0.917	सार्वजनिक क्षेत्र	76	60	0.511	विदेशी बैंक
37	21	0.917	निजी क्षेत्र	77	61	0.511	विदेशी बैंक
38	22	0.914	विदेशी बैंक	78	62	0.474	विदेशी बैंक
39	23	0.908	सार्वजनिक क्षेत्र	79	63	0.445	निजी क्षेत्र
40	24	0.897	सार्वजनिक क्षेत्र	80	64	0.393	विदेशी बैंक
				81	65	0.379	विदेशी बैंक

शुल्क आधारित क्रियाकलापों[6] में विविधीकरण किया है, अतः, इस खंड में हम विशिष्ट रूप से इस बात की जांच करेंगे कि भारत में बड़े और अधिक विविधीकृत बैंक अधिक कार्य-कुशल हैं अथवा नहीं। इसके अलावा, चूंकि अनर्जक आस्तियों का स्तर बैंक के कार्य-निष्पादन में एक अवरोध होता है, इसलिए इस बात की भी जांच की गई है कि क्या बड़ी अनर्जक आस्तियों वाले बैंक कम कार्य-कुशल होते हैं। ये अन्वेषण आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण से प्राप्त तकनीकी कार्य कुशलता अंकों का उपयोग करते हुए किए गए हैं। एक ओर कार्य-कुशलता और दूसरी ओर आकार, गैर-ब्याजगत आय द्वारा मापित विविधीकरण तथा अनर्जक आस्तियों के बीच संबंध की तुलना करने हेतु प्रकीर्ण रेखाचित्र और श्रेणीगत सह-संबद्ध का उपयोग किया गया है।

कार्य-कुशलता और बैंक का आकार

9.74 जैसा कि सिद्धांत से पता चलता है, भारत में ऐसा लगता है कि आकार का बैंकों की कार्य-कुशलता से महत्त्वपूर्ण संबंध होता है। आकार और कार्य-कुशलता में उच्च स्तरीय सकारात्मक संबंध होते हैं (बॉक्स IX.8, चार्ट IX.23)। इसका अभिप्राय यह है कि सामान्य रूप से बड़े आकार वाले बैंक छोटे आकार वाले बैंकों की तुलना में अधिक कार्य-कुशल होते हैं। कुल आस्तियों द्वारा मापित आकार तथा कार्य-कुशलता के बीच श्रेणीगत सहसंबंध क्रमशः 1992,1998 और 2007 में 0.74,0.55 और 0.55 था ।

कार्य-कुशलता और विविधीकरण

9.75 आर्थिक और प्रौद्योगिक शक्तियों द्वारा उत्प्रेरित वित्तीय नवोन्मेषों ने मध्यस्थता के नये रूपों और ऋण प्रतिभूतिकरण, सहायक ऋणव्यवस्था और वित्तीय व्युत्पन्नियों जैसी परम्परागत रूप से तुलनपत्र में शामिल न की जानेवाली अन्य शुल्क-आधारित गतिविधियों का सृजन किया है। इस प्रकार तुलनपत्र में शामिल न की जाने वाली गतिविधियों को छोड़कर बैंक की कार्य-कुशलता के परंपरागत माप किसी बैंक की स्थिति का यथार्थपरक मूल्यांकन नहीं उपलब्ध करा सकते (सीम्स और क्लार्क, 1997)।[7] इन दिनों, तुलनपत्र में शामिल न किए जानेवाले एक्सपोज़रवाले भारतीय बैंकों में भी बढ़ते जा रहे हैं।

9.76 जैसा कि क्रमशः 1992, 1998 और 2007 के 0.67, 0.55 और 0.61 के श्रेणीगत सह-संबंध गुणांकों से पता चलता है, भारत में बैंकों की कार्य-कुशलता के साथ विविधीकरण में भी महत्वपूर्ण सह-संचालन होता लगता है। इस प्रकार जिन बैंकों ने विविध प्रकार की अन्य वित्तीय सेवाओं में विविधीकरण किया है और जो अधिक शुल्क-आधारित आय अर्जित करते हैं, आनुपातिक रूप से अधिक कार्य-कुशल हैं (चार्ट IX.24)।

कार्य-कुशलता और अनर्जक आस्तियां

9.77 निवल अनर्जक आस्तियों के कार्य-कुशलता के साथ नकारात्मक संबंध प्रदर्शित करने की आशा की जाती है। हालांकि भारतीय संदर्भ में जैसाकि प्रकीर्ण रेखाचित्र और श्रेणीगत सह-संबंध गुणांकों से पता चलता है, उनका कार्य-कुशलता के साथ कोई सुस्पष्ट संबंध नही दिखाई देता। श्रेणीगत सह-संबंध गुणांक ऋणात्मक होते हैं किंतु वे इतने अधिक महत्वपूर्ण नहीं होते कि उनसे दोनों परिवर्तियों के बीच कोई सुदृढ़ संबंध स्थापित हो सके(चार्ट IX.25)।

9.78 एक ऐसी कठोर विधि (पैनल न्यूनतम वर्ग अनुमान, जो विविध बैंक वर्गों के कई वर्षों तक के संबंधों को ध्यान में रखती है) के माध्यम से भारत में कार्य-कुशलता के तत्वों का पता लगाने का भी प्रयास किया गया है। उक्त विश्लेषण से इसके पूर्व वाले उन निष्कर्षों की पुष्टि हो जाती है कि कार्य-कुशलता को प्रभावित करने की दृष्टि से आकार और विविधीकरण महत्त्वपूर्ण कारक होते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि बड़े और सुविविधीकृत बैंक छोटे और उतनी अच्छी तरह से विविधीकृत न हुए बैंकों की तुलना में अधिक कार्य-कुशल होते हैं, जिससे भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में बड़े पैमाने की किफायतों और अर्थव्यवस्था के बड़े पैमाने पर प्रसार का पता चलता है। हालांकि, पश्चगमन विश्लेषण से भी अनर्जक आस्तियों के आकार और कार्य-कुशलता के बीच नकारात्मक संबंधों की पुष्टि हो जाती है (बॉक्स IX.9)।

उत्पादकता की माप

9.79 जैसा कि इसके पूर्व उल्लेख किया जा चुका है उत्पादकता इस बात की माप होती है कि बैंकिंग इकाई अपने इनपुटों को कितनी कार्य-कुशलता से आउटपुटों के रूप में बदल देती है। जब कोई फर्म किसी एकल आउटपुट का निर्माण करने हेतु किसी एकल इनपुट का उपयोग करती है, तो उसके इनपुट की तुलना में उसके आउटपुट का सहज रूप से अनुपात निकाल कर उत्पादकता के स्तर की गणना कर लेना अपेक्षाकृत सरल होता है। हालांकि, किसी ऐसे बैंक के मामले में जो कई एक इनपुटों और आउटपुटों का उपयोग करता है, इस प्रकार का अनुपात उत्पादकता की केवल एक ऐसी आंशिक माप ही उपलब्ध कराएगा, जो उपयोग में लाए गए अन्य इनपुटों में भिन्नताओं की उपेक्षा कर देगा। इस परिसीमा पर काबू पाने के लिए उत्पादकता को कुल उपादान उत्पादकता के समग्र सूचकांक का परिकलन कर के मापा जा सकता है। इस प्रकार के मामलों में उत्पादकता के सूचकांकों की गणना करने की एक पद्धति है माल्मक्विस्ट उत्पादकता सूचकांक (बॉक्स IX.10)।

9.80 बैंकिंग क्षेत्र और उसके साथ ही विविध प्रकार के बैंक समूहों के उत्पादकता अंकों से यह पता चलता है कि उत्पादकता में सभी

6 कारोबार का विविधीकरण उसी संगठन में उस समय हो सकता है, जब वह अनुमेय गैर-बैंकिंग क्रियाकलाप शुरू करे अथवा यह समूह स्तर पर भी उस समय किया जा सकता है, जब कोई बैंक गैर-बैंकिंग क्रियाकलाप आरंभ करने हेतु अलग से सहायक कम्पनियां गठित करे। इस खण्ड में विविधीकरण से आशय है, संगठन के भीतर ही ऐसे गैर-परंपरागत क्रियाकलाप आरंभ करना, जो कार्य-कुशलता के दृष्टिकोण से अधिक प्रासंगिक हों।

7 यह देखने में आया है कि तुलन पत्र में शामिल की जानेवाली मदों को हिसाब में लिए जाने के बाद कुल आस्तियों में 25 मिलियन अमरीकी डालर से अधिक वाले आकार-वर्ग के बैंको के बीच कार्य-कुशलता से सम्बंधित कोई अंतर नहीं है।

बॉक्स IX.7
विभिन्न बैंकों की कार्य-कुशलता में अंतर के कारण क्या हैं? एक अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

बैंकिंग संस्थाओं की मापित कार्य-कुशलता में अंतर व्यापक रूप से निम्नलिखित कारणों से पैदा होते हैं (i) प्रयुक्त भिन्न-भिन्न कार्य-कुशलता संकल्पनाएं; (ii) कार्य-कुशलता का अनुमान लगाने के लिए प्रयुक्त भिन्न-भिन्न माप पद्धतियां; और (iii) कई प्रकार के अन्य बहिर्जात और अन्तर्जात कारक। मापित कार्य-कुशलता में अंतर का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है, उपयोग में लाई जाने वाली कार्य कुशलता की भिन्न-भिन्न संकल्पनाएं तथा कार्य-कुशलता की जांच करने हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली माप की पद्धतियां। सभी प्रकार के अध्ययनों में कार्य-कुशलता के अनुमानों को आंकड़ों के स्रोत तथा अध्ययनों में प्रयुक्त कार्य-कुशलता की संकल्पनाओं और माप की पद्धतियों के आधार पर पर्याप्त पाया गया है। बर्जर और हम्फ्री (1997) ने 21 देशों के बहुविध समयावधियों वाले और बैंकों, बैंक शाखाओं, बचतों और ऋणों, साख संघों तथा बीमा कंपनियों सहित विविध प्रकार की संस्थाओं के आंकड़ों का उपयोग करते हुए वित्तीय संस्थाओं की कार्य-कुशलता के संबंध में 130 अध्ययनों को प्रलेखित किया है । वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि आंकड़ों के समूहों से कार्य-कुशलता को मापा जाता है, उनमें विद्यमान अंतर इस बात के निर्धारण को लगभग असंभव बना देते हैं कि इन अध्ययनों के परिणामों की दृष्टि से कार्य-कुशलता की विभिन्न संकल्पनाएं, माप की तकनीकें और अन्य कारक कितने महत्त्वपूर्ण होते हैं। हालांकि, एक अन्य अध्ययन, जिसमें तीन भिन्न-भिन्न कार्य-कुशलता संकल्पनाओं (लागत, लाभ और वैकल्पिक लाभ की कार्य-कुशलता) पर कई प्रकार की अलग-अलग कार्य-कुशलता माप पद्धतियों के प्रभाव का पता लगाया गया था, का निष्कर्ष यह था कि माप तकनीकों, विभिन्न कार्यपरक रूपों और अन्य परिवर्तियों के संबंध में अपनाए गए विकल्पों का कार्य-कुशलता पर बहुत कम प्रभाव होता है (बर्नर और मेस्टर, 1997)।

संकल्पनात्मक और माप पद्धतियों के अलावा, ये अंतर कतिपय अन्य, बहिर्जात और अंतर्जात, दोनों ही प्रकार के कारकों के कारण पैदा होते हैं। विनियामक परिवेश में अंतर विभिन्न देशों के बैंकों के कार्य-निष्पादन में महत्त्वपूर्ण कारक सिद्ध हो सकते हैं। अपेक्षाकृत कम प्रतिबंधों वाले देशों में स्थित बैंकों से अधिक प्रतिबंध वाले देशों के बैंकों की अपेक्षा अधिक कार्य-कुशल होने की आशा की जाती है। जिस बाज़ार में बैंक परिचालन करते हैं, उसकी प्रतिस्पर्धात्मक स्थितियां भी इसमें भूमिका निभाती हैं। यह आशा की जाती है कि बाज़ार की शक्ति लागतपरक कार्य-कुशलता से नकारात्मकरूप से जुड़ी होती है, किंतु वह लाभ-परक कार्य-कुशलता से सकारात्मक रूप से संबद्ध होती है। कम प्रतिस्पर्धा करके बाज़ारों में बैंक उनकी सेवाओं के लिए अपेक्षाकृत अधिक प्रभार वसूल कर सकते हैं, किंतु उन्हें लागत को कम रखने में दबाव का सामना करना पड़ सकता है। अनुभव के आधार पर यह देखने में आया है कि बैंकिंग प्रणाली जितनी ही अधिक प्रतिस्पर्धात्मक होती है, वह उतनी ही अधिक कार्य-कुशल होती है। इस प्रकार, संकल्पनात्मक और मापन पद्धति के अलावा, विनियामक परिवेश और प्रतिस्पर्धात्मक स्थितियां विश्व भर की बैंकिंग संस्थाओं की कार्य-कुशलता में अंतर का महत्त्वपूर्ण स्रोत होती लगती हैं।

सभी घरेलू बैंकों के मामले में बहिर्जात स्थितियां एक जैसी ही होंगी। अतः एक ही देश में भिन्न-भिन्न बैंकों की कार्य-कुशलता में अंतर का कारण अंतर्जात कारक हो सकते हैं। कार्य-कुशलता को प्रभावित करने वाले कुछेक महत्त्वपूर्ण कारक होते हैं वित्तीय पूंजी, आकार, प्रदान की जाने वाली सेवा की गुणवत्ता, देयताओं का विन्यास और अनर्जक ऋण। किसी बैंक के दिवालियेपन की जोखिम हानियों को अवशोषित करने हेतु उपलब्ध वित्तीय पूंजी पर आश्रित होती है । दिवालियेपन की जोखिम उस जोखिम प्रीमियम के माध्यम से बैंकों की लागत और लाभ को प्रभावित करती है, जो बैंक को गैर-बीमित ऋण हेतु भुगतान करना होता है। जोखिम के अलावा, किसी बैंक की पूंजी का स्तर ऋणों के निधीयन के स्रोत के रूप में जमाराशियों का एक विकल्प उपलब्ध कराते हुए प्रत्यक्ष रूप से लागतों को प्रभावित करता है। ऋणों पर प्रदत्त ब्याज की गणना लागत के रूप में की जाती है, किंतु प्रदत्त लाभांशों की नहीं। दूसरी ओर, इक्विटी जुटाने में जमाराशियां जुटाने की अपेक्षा विशिष्ट रूप से अधिक लागत आती है। पहले प्रभाव के प्रबल होने पर मापित लागतें उन बैंकों के मामले में अपेक्षाकृत अधिक होंगी, जो उनकी अधिकांश मात्रा का उपयोग ऋण वित्तीयन हेतु करते हैं। दूसरे प्रभाव के प्रबल होने पर इन बैंकों के लिए मापित लागतें अपेक्षाकृत कम होंगी। कुछ बैंकों के अधिक जोखिम विमुख होने पर भी (कार्य-कुशलता में) अंतर आ सकता है, क्योंकि वे वित्तीय पूंजी की अपेक्षाकृत अधिक मात्रा को रोके रख सकते हैं, वे अन्यों की अपेक्षा लाभ को अधिकतम अथवा लागत को न्यूनतम कर सकते हैं। इस प्रकार, बैंकों के पूंजी विन्यास में जिस सीमा तक अंतर होगा, वह कार्य कुशलता में उतनी ही सीमा तक का ऊर्ध्वमुखी या अधोमुखी झुकाव ला सकता है। अमरीका में किए गए कतिपय अध्ययनों से यह पता चलता है कि सुपूंजीकृत बैंक अधिक कार्य-कुशल होते हैं। यही बात विपरीत क्रम में भी लागू हो सकती है, क्योंकि कम कार्य-कुशल संस्थाओं का लाभ अपेक्षाकृत कम होता है, उनके पास अपेक्षाकृत कम पूंजी होती है।

सामान्यतया आकार बड़े पैमाने की किफायतों के कारण अपेक्षाकृत अधिक कार्य-कुशलता से संबंधित होता है। बड़े बैंक प्रौद्योगिकी को लागू करने और लागत कम करने की दृष्टि से छोटे बैंकों की अपेक्षा बेहतर स्थिति में होते हैं। सूचना संसाधन में सुधार से अपेक्षाकृत बड़े बैंकों के मामले में छोटे व्यावसायिक ऋण प्रदान करने से सबंधित लागतों में कमी लाई जा सकती है। इसी प्रकार, उन्नत स्वचालन भी बड़े बैंकों को अधिक खर्चीली ईंट और गारे वाले शाखा कार्यालय खोलने के स्थान पर एटीएम मशीनें संस्थापित करते हुए अपेक्षाकृत त्वरित गति और न्यूनतर लागत पर विस्तार करने की सुविधा प्रदान करता है। बड़े बैंक व्युत्पन्नी संविदाओं और तुलनपत्र में शामिल न किए जाने वाले अन्य क्रियाकलापों जैसे वित्तीय इंजीनियरी के नए साधनों का लाभ उठाने की दृष्टि से बेहतर स्थिति में होते हैं। बड़ा आकार विविधीकरण के लाभ भी प्रदान करता है क्योंकि वह बैंकों को लागत को सभी उत्पादों में बाटने (बड़े पैमाने की किफायत) का लाभ प्रदान करता है। आम तौर पर बड़े बैंकों के पास बड़ी पूंजी भी होती है और जैसाकि इसके पूर्व उल्लेख किया गया है, बेहतर रूप से पूंजीकृत बैंक अधिक कार्य-कुशल होते हैं। हालांकि, अनुभवजन्य साक्ष्य से आकार और कार्य कुशलता के बीच किसी सुसंगत सबंध का पता नहीं चलता। जहां एक अध्ययन में आकार और कार्य-कुशलता के बीच महत्त्वपूर्ण सकारात्मक संबंध का पता चला (बर्जर और अन्य, 1993), वहीं कुछ अन्य अध्ययनों में आकार और कार्य-कुशलता के बीच महत्त्वपूर्ण नकारात्मक संबंध परिलक्षित हुए (हर्मेलिन और वैलस, 1994, कापराकिस और अन्य, 1994)। इसके बावजूद कुछ अन्य अध्ययनों में आकार और कार्य-कुशलता के बीच महत्वहीन सबंध देखने में आए [(सेबेनॉयन और अन्य (1993); मेस्टेर(1993); और पी.एल. तिम्मे (1993)]। इसके अलावा एक अन्य अध्ययन में यह भी पता चला है कि कार्य-कुशलता संबंधी माप बड़ी फर्मों के वित्तीयन के प्रति बहुत कम संभाव्यता मान की प्रवृत्तियां दर्शाते हैं। यह पाया गया कि बैंक जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, वैसे-वैसे वे लागतों को नियंत्रित करने में भी समान रूप से समर्थ होते जाते हैं, किंतु कार्य-कुशलता के साथ राजस्व निर्माण करना अपेक्षाकृत कठिन हो जाता है।

(जारी....)

(...जारी)

इस प्रकार आकार और कार्य-कुशलता संबंधी अनुभवजन्य साक्ष्य मिले जुले हैं (बॉक्स IX.9 भी देखें)।

अंतर का एक अन्य स्रोत अनर्जक ऋणों का स्तर भी हो सकता है। अनर्जक ऋण और ऋणगत हानियां नकारात्मक आर्थिक आघातों (दुर्भाग्य) अथवा अंतर्जात चाहे वह इसलिए हों कि प्रबंधन अकुशल है (खराब प्रबंधन) या इसलिए कि उसने ऋण प्रवर्तन और निगरानी (कृपणता) की लागतों में कमी करते हुए अल्पावधिक खर्चों में कटौती करने का सोचा-समझा निर्णय लिया है, द्वारा कारित होने पर बहिर्जात होती हैं। समस्या-मूलक ऋण वाले बैंकों की लागतें अधिक और लाभ कम होते हैं, जो खराब प्रबंधन की परिकल्पना से सुसंगत होते हैं। कृपणता की परिकल्पना -जिसके तहत अनर्जक ऋणों को ऋण की निगरानी और उस पर नियंत्रण रखने हेतु कम प्रयास किए जाने का विकल्प चुनते हुए कम लागतों से संबद्ध किया जा सकता है - का सामान्य रूप से आंकड़ों द्वारा समर्थन नहीं किया गया अथवा उसके परिणाम खराब प्रबंधन के प्रभावों द्वारा अभिभूत हो गए। इसका तात्पर्य यह है कि कृपणता की परिकल्पना के बारे में अधिक साक्ष्य मौजूद नहीं हैं। इस प्रकार मोटे तौर पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि कम अनर्जक ऋणों वाले बैंक अधिक कार्य कुशल होते हैं।

गुणवत्ता में गैर-मापित अंतर भी मौजूद होते हैं, क्योंकि बैंकिंग आंकड़ों में बैंकों के आउटपुट में विद्यमान विजातीयता पूरी तरह से शामिल नहीं होती। उदाहरण के लिए वाणिज्यिक ऋण अन्य बातों के साथ-साथ आकार, चुकौती कार्यक्रम, जोखिम, सूचना की पारदर्शिता, संपार्श्विकों के प्रकार तथा प्रवृत्त की जानेवाली प्रसंविदा की दृष्टि से अलग-अलग प्रकार के होते हैं। इन अंतरों द्वारा ऋण के प्रवर्तन, चालू निगरानी और नियंत्रण तथा वित्तीयन खर्चों के रूप में बैंक द्वारा वहन की जाने वाली लागतों को प्रभावित किए जाने की संभावना होती है। उत्पाद की गुणवत्ता में गैर-मापित अंतरों को लागत की अकुशलता में अंतरों के रूप में गलत ढंग से मापा जा सकता है। कम से कम इस स्पष्टीकरण का एक अंश सेवा की गुणवत्ता अथवा बाज़ार की शक्तियों के अलग-अलग स्तरों में निहित हो सकता है। तात्पर्य यह है कि यदि कुछ बैंक इस प्रकार की गुणवत्ता वाली सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, जिनकी मांग अधिक है और इसलिए वे अधिक मूल्य वसूल करने में समर्थ हैं अथवा यदि कुछ बैंक बाज़ार की शक्तियों का प्रयोगकर ऋण की अपेक्षाकृत अधिक कीमतों के माध्यम से पर्याप्त रूप से लाभ बढ़ाने में समर्थ हैं, तो इससे कार्य-कुशलता में अधिक बढ़ोत्तरी होगी।

इस बात के प्रमाण सीमित ही हैं कि अधिक संकेंद्रित बाज़ारों में परिचालन करने वाले बैंक कम कार्य-कुशल होते हैं। विलयन और अभिग्रहण के प्रभाव के संबंध में अनुभवजन्य निष्कर्ष भी मिश्रित ही हैं। सभी विलयनों से कार्य-कुशलता और लाभप्रदता में असंदिग्ध रूप से सुधार नहीं हुआ है (रॉड्स, 1995)। तथापि, इस तथ्य से कि कुछ मामलों में विलयनों/समामेलनों की गतिविधियों के परिणामस्वरूप कार्य-कुशलता में सुधार आया है, यह पता चलता है कि विलयन और समामेलन गतिविधि एक ऐसा कारक है जो कार्य-कुशलता में अंतर को स्पष्ट कर सकता है। अनुभवजन्य निष्कर्षों से यह पता चलता है कि कई स्तरों वाली नियंत्रक कंपनियों के अधिक जटिल ढांचे से बैंक की कार्य-कुशलता को कोई हानि नहीं होती। उक्त साक्ष्य से यह भी पता चलता है कि सब कुछ सामान होने के बावजूद सार्वजनिक रूप से जिन बैंको में ट्रेडिंग होती है, वे अधिक कार्य-कुशल हैं। प्रबंधकीय योग्यता और कॉरपोरेट अभिशासन व्यवहारों में अंतर भी कार्य-कुशलता में विद्यमान अंतर को स्पष्ट करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते हैं।

संदर्भ :

बर्जर, ए.एन.,डी.हैंकॉक और डी.बी.हम्फ्री, 1993, ''बैंक एफिसिएन्सी डिराइव्ड फ्रॉम दि प्रॉफिट फंक्शन'' जर्नल आफ बैंकिंग एण्ड फाइनैन्स, 17, 317-47।

बर्जर, ए.एन., हम्फ्री, डी.बी., (1997), एफिसिएन्सी ऑफ फाइनैन्सियल इन्स्टीट्यूशन्स, इंटरनेशनल सर्वे एण्ड डाइरेक्शन्स फॉर फ्यूचर रिसर्च. यूरोपियन जर्नल ऑफ ऑपरेशनल रिसर्च 98।

बर्जर ए.एन., और एल.जे.मेस्टर, 1997, ''इनसाइड दि ब्लैक बॉक्सःव्हाट एक्सप्लेन्स डिफरेन्सेज इन दि एफिसिएन्सीज ऑफ फाइनैन्सियल इंस्टीट्यूशन्स'', जर्नल ऑफ बैंकिंग एण्ड फाइनैन्स.21:895-947।

सेबेनेयॉन, ए.एस.,कूपरमैन, ई.एस.,रजिस्टर, सी.ए.हडगिन्स, एस.सी, 1993. दि रिलेटिव एफिसिएन्सी ऑफ स्टॉक वर्सेज म्यूच्युअल एस एण्ड एल : ए, स्टॉकैस्टिक फ्रन्टियर एप्रोच, जर्नल ऑफ फाइनैन्सियल सर्विसेज रिसर्च 7।

हर्मैलिन,बी.ई., वैलेस, एन.ई.,1994. दि डिटर्मिनैंट्स ऑफ एफिसिएन्सी एण्ड साल्वेन्सी इन सेविंग्स एण्ड लोन्स. आर एण्ड जर्नल ऑफ इकॉनॉमिक्स, 25।

कपराकिस, ई.आइ.,मिलर, एस.एम.,नौलस, ए.जी., 1994, शार्ट रन कॉस्ट इनएफिसिएन्सी ऑफ कॉमर्सियल बैंक्स : ए फ्लेक्सिबल स्टॉकैस्टिक फ्रन्टियर एप्रोच, जर्नल ऑफ मनी, क्रेडिट एण्ड बैंकिंग 26 ।

मेस्टर एल.जे. 1993, एफिसिएन्सी इन दि सेविंग्स एण्ड लोन इंडस्ट्री, जर्नल ऑफ बैंकिंग एण्ड फाइनैन्स 17।

पी.आइ.एल., टिम्मे, एस.जी., 1993 कॉरपोरेट कन्ट्रोल एण्ड बैंक एफिसिऐन्सी, जर्नल ऑफ बैंकिंग एण्ड फाइनैन्स.17।

रॉड्स, स्टीफेन ए. (1998) : एफिसिएन्सी इफेक्ट्स ऑफ बैंक मर्जर्स, ऐन ओवरव्यू ऑफ केस स्टडीज़ ऑफ नाइन मर्जर्स, जर्नल आफ बैंकिंग एण्ड फाइनैन्स, 22, 273-291।

स्तरों पर वृद्धि हुई है। उत्पादकता परिवर्तन, जो 1997-98 तक क्रमिक रूप में था, में 1997-98 के बाद गति आई। 1991-92 के स्तरों से तुलना करने पर भारतीय बैंकों की उत्पादकता में हुई वृद्धि 1997-98 तक की अवधि के दौरान 5.5 प्रतिशत की दर से थी, जबकि 2006-07 तक उसमें 43.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अलग-अलग बैंक समूहों की दृष्टि से सर्वाधिक बढ़ोत्तरी विदेशी बैंकों के मामले में (70.6 प्रतिशत) देखने में आई, उसके बाद निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों (44.7 प्रतिशत) और राष्ट्रीयकृत बैंकों (35.4 प्रतिशत) का स्थान था (सारणी 9.27)।

9.81 मामक्विस्ट उत्पादकता सूचकांक पर आधारित उत्पादकता से संबंधित अनुमानों को दो पारस्परिक रूप से अनन्य एवं विस्तृत घटकों में विभाजित किया जा सकता है : तकनीकी कार्य-कुशलता में परिवर्तन अर्थात एक निश्चित इनपुट हेतु आउटपुट में परिवर्तन और समय के साथ ही प्रौद्योगिकी में बदलाव अर्थात प्रौद्योगिकी सुधार अथवा तकनीकी प्रगति (नवोन्मेष)। तकनीकी कार्य-कुशलता तथा तकनीकी प्रगति से संबंधित प्रवृत्तियों से यह पता चलता है कि 1991-92 और 1997-98 के बीच वाली अवधि में बैंकिंग क्षेत्र और स्टेट बैंक समूह को छोड़कर सभी बैंक समूहों की तकनीकी कार्य-कुशलता में सुधार हुआ।

बॉक्स IX.8
क्या आकार महत्वपूर्ण होता है ? विभिन्न देशों के अनुभवजन्य साक्ष्य

उत्पादन लागत सिद्धान्त में एक सुविख्यात संकल्पना बड़े पैमाने पर किफायतें (लागत संकल्पना) अथवा किफायतों से प्रतिलाभ (उत्पादन संकल्पना) लागू किए जाने से सम्बन्धित होती है, जिसका तात्पर्य यह है कि क्या उत्पादन बढ़ने पर उत्पादन लागत में कमी (बड़े पैमाने पर किफायतें) आती है अथवा वृद्धि (बड़े पैमाने की फिजूलखर्ची) होती है अथवा वह अपरिवर्तित रहती है। पिछले वर्षों में अनुसंधानों में इस संकल्पना की बैंकिंग सेवाओं के उत्पादन पर प्रयोज्यता की संभावनाओं का पता लगाने का प्रयास किया गया है। अपेक्षाकृत बड़े बैंकों के किफायतों के प्रति अधिक कार्य-कुशल होने के पीछे निहित अभिप्रेरण को बड़े बैंकों में मौजूद संसाधनों की दृष्टि से अधिक कार्य-कुशल संगठन में तलाशा जा सकता है। उदाहरण के लिए छोटे बैंको में जहाँ कार्य की मात्रा को देखते हुए विशेषज्ञता की अनुमति नहीं दी जा सकती, उन्हीं मशीनों और कामगारों को आवश्यक रूप से प्रायः विभिन्न प्रकार के कार्यों में नियोजित किया जा सकता है, जैसे कि टेलर अंशकालिक रूप से चेकों की छंटाई अथवा लेखों की लेखा-परीक्षा का कार्य कर सकते हैं। दूसरी ओर, बड़े बैंक कार्यों का बंटवारा कर सकते हैं, ताकि कर्मचारियों और मशीनों का उपयोग उनके परिचालनों के किसी रूप में किया जा सके। इसी प्रकार, कम्प्यूटरों जैसे कुछ प्रकार के प्रौद्योगिकी नवोन्मेष आर्थिक रूप से बड़े बैंकों के लिए अधिक व्यवहार्य हो सकते हैं । कोलारी और जर्दकूही (1987) का कहना है कि बड़ी संख्याओं का महत्त्व एक निश्चित आकार वाली अर्थव्यवस्थाओं में महत्त्वपूर्ण होता है। बड़े बैंकों के लिए यह आवश्यक नहीं होता कि छोटे बैंकों के जितनी मात्रा में नकद शेष रखें और इसलिए उस सीमा तक बड़ी संख्याओं वाला कानून लेन-देन की मांग को समतल बना देता है। मर्फी ने अमरीकी बैंकिंग उद्योग में बड़े पैमाने की किफायतों के स्रोतों की जांच की और यह बताया कि चेकिंग खातों के संसाधन के मामले में बड़े पैमाने की किफायतें आंशिक रूप से विभिन्न प्रकार के उपकरणों का उपयोग किए जाने से तथा आंशिक रूप से श्रमिकों और मशीनों की विशेषज्ञता से उद्भूत होती हैं।

बड़े पैमाने की किफायतों का पहला व्यवस्थित अध्ययन अल्हाडेफ द्वारा आरंभ किया गया, जिसने 1938-50 की अवधि के आंकड़ों का उपयोग करते हुए विभिन्न आकार वाले कैलीफोर्नियाई शाखा और यूनिट बैंकों की लागतों की तुलना की। उक्तअध्ययन से यह पता चला है कि शाखा बैंकों ने यूनिट बैंकों की तुलना में प्रति डॉलर संसाधनों से अपेक्षाकृत अधिक उत्पादन किया। हालांकि, इन प्रारंभिक अध्ययनों की उत्पादन की माप के रूप में अर्जक आस्तियों जैसे अनन्य माप का उपयोग किए जाने हेतु आलाचना की गई, जिससे बड़े बैंकों की औसत इकाई लागत बढ़ जाती थी। स्कवीगर और मैकगी (1961) तथा ग्रैमली (1962) ने बैंकों के उत्पादन की माप के रूप में कुल आस्तियों का उपयोग किया और पाया कि छोटे बैंकों की अपेक्षा बड़े बैंकों को लागत-लाभ प्राप्त होता है। बेन्स्टन ने बैंकिंग में कॉब डगलास लागत फलन को नियत करते हुए बड़े पैमाने की किफायतों का पता लगाया। बेल और मर्फी (1968) ने शाखा व्यवस्था को यूनिट बैंकिंग परिचालनों की अपेक्षा अधिक महंगी पाया। ग्रीनबाम (1997) इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि बैंकों की आस्तियां 10 मिलियन यूएस डॉलर से अधिक हो जाने के बाद प्रति यूनिट अधिक उपरि लागतों, अधिक लेन-देन लागतों, पर्याप्त विशेषज्ञता के अभाव और सीमित विविधीकरण के कारण बड़े पैमाने की किफायतें सामान्यतया समाप्त हो गईं। हालांकि, 1980 वाले दशक के प्रारंभिक दिनों में अब तक उपयोग में लाए जा रहे कॉब डगलस उत्पादन फलन दृष्टिकोण के अधिक सुदृढ़/मीमांसात्मक विकल्प के रूप में ट्रांस्लॉग कार्यपरक व्यवस्था उभर कर सामने आ गई, क्योंकि इसमें यू-आकार वाले लागत वक्र को अपनाए जाने तथा संभाव्य किफायतों की गणना किए जाने की सुविधा थी। वेन्स्टन और अन्यों ने अमरीकी बैंकों के मामले में यू-आकार वाले लागत वक्रों का पता लगाया। 50 मिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक की जमाराशियों वाले अमरीकी यूनिट बैंकों ने बड़े पैमाने की फिजूलखर्चियां दर्ज कीं। जबकि शाखा व्यवस्था के माध्यम से परिचालन करने वाले बैंकों में छोटी किफायतें हुईं। व्हाइट ने कनाडा में ऋण संघों (क्रेडिट यूनियनों) की उत्पादन प्रौद्योगिकी की जांच की और यह पाया कि बड़ी बहु-विध क्रेडिट यूनियनें छोटी एकल उत्पाद वाली क्रेडिट यूनियनों की तुलना में अधिक कार्य-कुशल थीं।

तथापि, बड़े पैमाने की किफायतों का सिद्धान्त उन बैंकों की संख्या से सम्बन्धित होता है, जो वर्तमान लागत और मांग की स्थितियों में परिचालन कर सकते हैं। तथापि, यह बैंकों के मौजूदा आकार वितरण के सम्बन्ध में बहुत कम जानकारी देता है।

सन्दर्भ:

बेल, एफ. डब्ल्यू. और एन.बी.मर्फी, 1968, ''इकॉनॉमीज ऑफ स्केल एण्ड डिवीजन ऑफ लेबर इन कॉमर्शियल बैंकिंग'', सदर्न इकॉनॉमिक जर्नल, 131-139, अक्तूबर।

ग्रैमली, एल.ई. 1962 ए स्टडी ऑफ स्केल इकॉनॉमीज़ इन बैंकिंग, फेडरल रिज़र्व बैंक ऑफ कन्सास सिटी, संयुक्त राज्य अमरीका।

ग्रीनबॉम, 1967, ''ए स्टडी ऑफ बैंक कॉस्ट'' नेशनल बैंकिंग रिव्यू, 415-434, जून ।

कोलारी और जर्दकूही, 1987, बैंक कॉस्ट, स्ट्रक्चर एण्ड पर्फार्मेन्स, लेक्सिंगटेन बुक्स, मास, संयुक्त राज्य अमरीका।

मर्फी, 1972 ''कॉस्ट ऑफ बैंकिंग ऐक्टिविटीज : इंटरैक्शन बिटवीन रिस्क ऐण्ड ऑपरेटिंग कॉस्ट : ए कमेन्ट'', जर्नल ऑफ मनी, क्रेडिट एण्ड बैंकिंग, 4 अगस्तः 14-15।

स्कवीगर और मैक गी, 1961, ''शिकागो बैंकिंग'', जर्नल ऑफ बिज़नेस, 34(3): 203-366।

हालांकि, विश्लेषण की अवधि को 2006-07 तक बढ़ा दिए जाने पर यह प्रवृत्ति उलटी हो जाती है। 1997-98 और 2006-07 के बीच उद्योग की तकनीकी कार्य-कुशलता में तीव्र वृद्धि हो जाने के फलस्वरूप सभी बैंक समूह इसे (तकनीकी कार्य-कुशलता) प्राप्त कर पाने में पीछे रह गए। कम्प्यूटरीकरण, जो मुख्यतः हार्डवेयरों की संस्थापना तक ही सीमित था, की दिशा में किए गए प्रयास व्यापक रूप से बही खातों और उनके समाधान में ही सरलीकृत थे। सूचना प्रौद्योगिकी की आधारभूत सुविधा प्रौद्योगिकी द्वारा प्रेरित थी न कि व्यवसाय अथवा ग्राहक आवश्यकताओं द्वारा । फलतः उस आधारभूत सुविधा, जिसकी स्थापना की गई थी, का उपयोग ग्राहकों द्वारा उस सीमा तक नहीं किया गया, जो 'ब्रेक-ईवन' की दृष्टि से आवश्यक होती है। इसलिए परिणामजन्य बढ़ते हुए लाभ बैंकों को नहीं मिल सके (भारतीय रिज़र्व बैंक, 2003; विश्व बैंक 2002)। हालांकि बढ़े हुए संभाव्य उत्पादन स्तरों तक अपेक्षाकृत धीमी पहुंच का निर्वचन सावधानीपूर्वक किए जाने की आवश्यकता है। इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि कार्य-कुशलता के स्तरों (तक पहुँच) में आई सुस्पष्ट कमी बढ़े हुए संभाव्य उत्पादन स्तरों के

चार्ट IX.23: कार्य-कुशलता और आकार

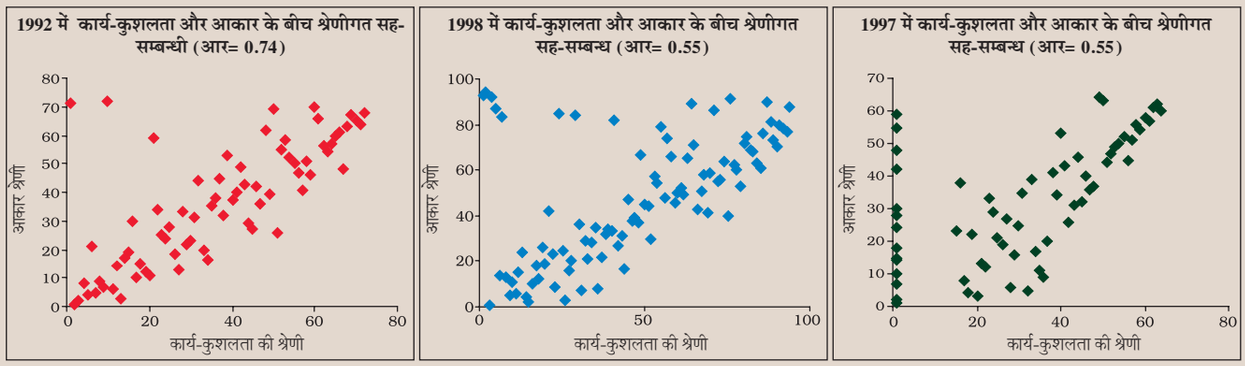

समक्ष थी। अन्यथा, जैसाकि कार्य-कुशलता से सम्बन्धित पूर्ववर्ती खण्ड में दर्शाया गया है, स्थिर बेंचमार्क अथवा सीमांत के साथ तुलना किए जाने पर कार्य-कुशलता अथवा उपयोगिता के स्तरों में महत्त्वपूर्ण सुधार हुआ (सारणी 9.25 तथा चार्ट IX.26)।

9.82 संक्षेप में कार्य-कुशलता और उत्पादकता के आर्थिक माप लेखांकन मापों के माध्यम से प्राप्त परिणामों की पुष्टि करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि 1991-92 से लेकर 2006-07 तक की अवधि हेतु सभी बैंकों के मामले में महा सीमांत से मापे जाने पर सभी बैंकों में कार्य-कुशलता में सुधार आया है तथा कार्य-कुशलता में हुए इन अभिलाभों में से अधिकांश सुधार लागू किए जाने के कुछ वर्षों के बाद अर्थात् 1997-98 के बाद उद्भूत हुए।

9.83 1991-92 में कार्य-कुशलता के स्तरों से शुरुआत किए जाने पर निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के मामले में कार्य-कुशलता अभिलाभों को सर्वाधिक पाया गया। हालांकि, चूँकि सुधारों की अवधि की शुरुआत में उनकी कार्य-कुशलता के स्तर बहुत ही कम थे, वे अब भी अन्य बैंक समूहों के मुकाबले काफी पीछे बने हुए हैं। आज की स्थिति के अनुसार एक समूह के रूप में निजी सेल के नए बैंक सर्वाधिक कार्य-कुशल हैं, उनके बाद स्टेट बैंक, राष्ट्रीयकृत बैंकों, विदेशी बैंकों और निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के समूहों के स्थान हैं। विदेशी बैंक समूह में, कतिपय ऐसे बैंक मौजूद है, जिसकी कार्य-कुशलता के अंक बहुत कम हैं, जिसने एक समूह के रूप में विदेशी बैंकों के समग्र कार्य-कुशलता अंक में कमी ला दी। अन्यथा, सर्वाधिक कार्य-कुशल सत्रह बैंकों में से नौ बैंक विदेशी बैंकों की श्रेणी में से थे। महत्त्वपूर्ण रूप से विदेशी और निजी बैंकों के मामले में हुए अभिलाभ केवल तकनीकी कार्य-कुशलता तक ही सीमित थे। इन बैंकों की निर्धारक कार्य-कुशलता 1990 वाले दशक के प्रारंभिक दिनों से ही हमेशा अधिक रही है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के मामले में ये अभिलाभ तकनीकी और निर्धारक कार्य-कुशलता, दोनों ही में बंटे हुए हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की निर्धारक कार्य-कुशलता में अपेक्षाकृत अधिक अभिलाभ का कारण विगत अनर्जक आस्तियों की वसूली तथा ऋण जोखिम परिवेश में हुआ सुधार हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप सुधारोत्तर अवधि में वृद्धिशील अनर्जक आस्तियों में तीव्र गिरावट आई है।

9.84 उक्त विश्लेषण में आकार और विविधीकरण के साथ कार्य-कुशलता में सकारात्मक और महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध भी देखने में आए हैं। इसका तात्पर्य यह है कि बड़े और विविधीकृत बैंक सामान्य रूप से अधिक कार्य-कुशल पाए गए। इन परिणामों से यह भी पता चलता है कि कार्य-कुशलता पर अनर्जक आस्तियों का ऋणात्मक प्रभाव होता है।

चार्ट IX.24: कार्य-कुशलता और अन्य आय

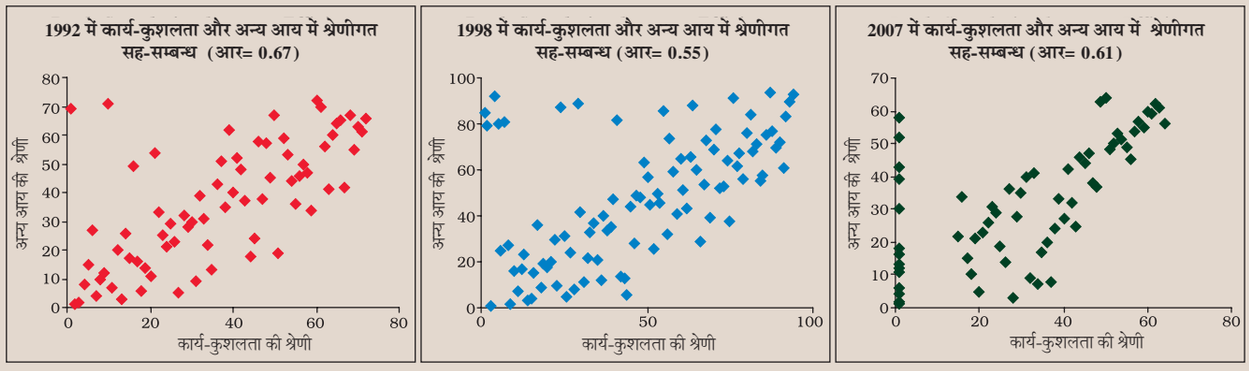

चार्ट IX.25: कार्य-कुशलता और अनर्जक आस्तियां

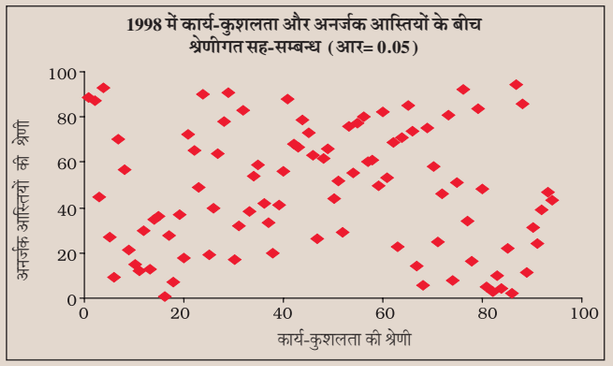

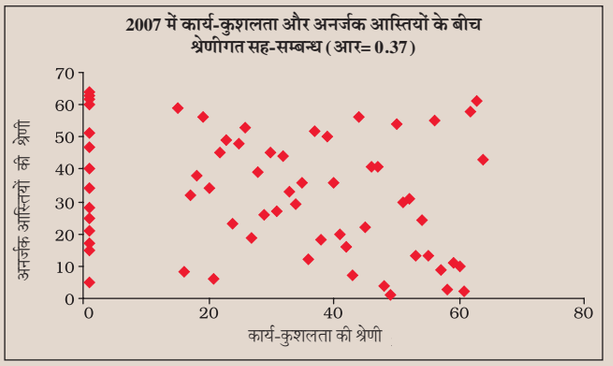

9.85 उक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि कार्य-कुशलता के स्तरों का बैंकों के स्वामित्व से कोई निश्चित सम्बन्ध नहीं होता, यथा-भारत में सार्वजनिक अथवा निजी क्षेत्र के बैंक। सार्वजनिक और निजी दोनों ही क्षेत्रों में सर्वाधिक कार्य-कुशल और सब से कम कार्य-कुशल बैंक मौजूद हैं।

बॉक्स IX.9
भारत में बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता के निर्धारक तत्त्व

समग्र स्तर पर और बैंक समूह स्तर पर बैंक की कार्य-कुशलता के निर्धारक तत्वों का पता लगाने के उद्देश्य से 1996-2006 की अवधि हेतु पैनल में अल्पतम वर्ग मॉडल का उपयोग किया गया था। महा-सीमांत से परिकलित सभी बैंकों की तकनीकी कार्य-कुशलता का उपयोग आश्रित परिवर्ती के रूप में किया गया था, जबकि कुल आस्तियों (बैंक के आकार के संकेतक के रूप में), निवल अग्रिमों की तुलना में निवल अनर्जक आस्तियों के अनुपात (प्रबंधन की गुणवत्ता के एक प्राक्सी के रूप में) तथा कुल आय की तुलना में अन्य आय के अनुपात (विविधीकरण के माप के रूप में) का उपयोग व्याख्यात्मक परिवर्तियों के रूप में किया गया था। हौसमान जांच के अनुसार, अनुमान लगाने हेतु यादृच्छिक प्रभाव मॉडल को लागू किया गया।

पिछले कई वर्षों के सम्बन्धों को ध्यान में रखने वाले पैनल में अल्पतम वर्गों के अनुमान से पता चलता है कि कुल आस्तियों में वृद्धि, जो बैंक के आकार के लिए एक प्रॉक्सी होती है, तकनीकी कार्य-कुशलता को बढ़ा देती है। कुल आस्तियों में एक यूनिट (1 करोड़ रुपए) की वृद्धि होने पर तकनीकी कार्य-कुशलता के अंक में 0.0003 की वृद्धि हो जाती है। बैंक समूहों की दृष्टि से भी आकार को विशेषतः निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों और विदेशी बैंकों के मामले में कार्य-कुशलता पर काफी सकारात्मक प्रभाव रखने वाला पाया गया (सारणी)। सामग्री से भी यह पता चलता है कि बैंकों के बीच मौजूद तकनीकी कार्य-कुशलता में अन्तरों को केवल मात्रा में मौजूद अंतरों की दृष्टि से ही नहीं स्पष्ट किया जा सकता। प्रौद्योगिकीय, प्रबन्धकीय और तुलनपत्र में शामिल न की जाने वाली मदों का भी तकनीकी कार्य-कुशलता पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव होता है। 1996-2006 की अवधि के लिए पैनल अनुमानों से यह पता चलता है कि प्रबन्ध की गुणवत्ता में गिरावट (निवल अनर्जक ऋणों में वृद्धि द्वारा निरूपित) तकनीकी कार्य-कुशलता के स्तर में कमी ला देती है। स्वाभाविक रूप से, अनर्जक आस्तियों के कम हो जाने पर बैंक मूर्त (प्रावधानों) और अमूर्त पूंजी (मानवीय पूंजी) सहित उपलब्ध संसाधनों को अनर्जक आस्तियों पर निगरानी रखने से हटाकर अधिक उत्पादक उपयोगों में पुनर्नियोजित कर सकते हैं, जिससे बैंकों की कार्य-कुशलता के स्तर में वृद्धि हो सकती है। यह व्यापक रूप से घटिया प्रबन्धन के सिद्धान्त का समर्थन करता है। हालांकि, बैंक समूहवार अनुमानों से किसी समरूप स्थिति का पता नहीं चलता। जहां अशोध्य ऋणों का सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (स्टेट बैंक और राष्ट्रीयकृत बैंकों) के मामले में कार्य-कुशलता पर महत्त्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव पड़ा, वहीं निजी (पुराने और नये) बैंकों तथा विदेशी बैंकों के मामले में परिवर्ती को महत्त्वहीन पाया गया। इसका कारण इन बैंकों में मौजूद बेहतर जोखिम प्रबन्धन प्रथाएं हो सकती हैं, जो उनके तुलन-पत्रों को स्वच्छ रखने में उनकी सहायता करती हैं।

सारणी : पैनल पश्चगमन के परिणाम (बैंक समूहवार)

(अवधि : 1996-2000)

आश्रित परिवर्ती	स्थिर	कुल आस्तियां	निवल अनर्जक आस्तियां	कुल आय की तुलना में अन्य आय
समस्त बैंक	0.675	0.0003 *	-0.0046 *	0.003 *
	(43.33)	(10.92)	(-5.47)	(8.87)
स्टेट बैंक समूह	0.839	0.0005 *	-0.019 *	0.006 *
	(17.46)	(2.29)	(-7.52)	(2.78)
राष्ट्रीयकृत बैंक	0.719	0.0003 *	-0.006 *	0.006 *
	(36.68)	(8.04)	(-4.75)	(6.69)
पुराने निजी बैंक	0.493	0.004 *	-0.002	0.004 *
	(25.25)	(12.42)	(-1.296)	(4.28)
नये निजी बैंक	0.628	0.0005 *	0.007	0.001 *
	(16.14)	(7.39)	(0.95)	(2.58)
विदेशी बैंक	0.533	0.002 *	-0.001	0.004 *
	(18.59)	(7.09)	(-0.913)	(6.69)

टिप्पणियां : कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े 'टीट सांख्यिकीय है।

* 1 प्रतिशत के स्तर पर महत्त्वपूर्ण

इसी प्रकार विविधीकरण को भी बैंकों की कार्य-कुशलता पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव रखने वाला पाया गया। इस प्रकार, शुल्क और उपभोक्ता आधारित क्रियाकलापों और तुलनपत्र में शामिल न की जाने वाली मदों में एक्सपोज़र को बड़े पैमाने पर लाभदायक होते पाया गया । इससे यह पता चलता है कि तुलनपत्र में शामिल न किए जाने वाले क्रियाकलापों को छोड़कर परम्परागत बैंक कार्य-कुशलता माप किसी बैंक की स्थिति का यथोचित मूल्यांकन नहीं उपलब्ध करा सकते।

बॉक्स IX.10
मामक्विस्ट उत्पादकता सूचकांक

सामग्री में प्रयुक्त कुल उपादान उत्पादकता के तीन प्रचलित माप हैं - टॉर्नक्विस्ट, फिशर और मामक्विस्ट सूचकांक)।

टॉर्नक्विस्ट और फिशर आउटपुट और इनपुट के सूचकांकों का निर्माण करने हेतु मात्रात्मक आंकड़ों के साथ मूल्य सूचना का उपयोग करते हैं। आउटपुट और इनपुट के मात्रात्मक सूचकांकों का अनुपात टीएफपी सूचकांक होता है। तथापि, ये दोनों ही उत्पादकता में परिवर्तन के वर्णनात्मक माप होते हैं। इन दोनों में से किसी भी माप के लिए फर्म के समक्ष उपस्थित अन्तर्निहित उत्पादन प्रौद्योगिकी की जानकारी की आवश्यकता नहीं होती।

इसके विपरीत, केव्स, क्रिस्टेन्सेन और डीवर (1982) द्वारा प्रवर्तित मामक्विस्ट उत्पादकता सूचकांक (एमपीआइ) एक ऐसा नियामक माप है, जो प्रौद्योगिकी को निरूपित करने वाले एक उत्पादन सीमांत की रचना करता है तथा उत्पादकता की तुलना के लिए भिन्न-भिन्न इनपुट-आउटपुट में मूल्यांकित समनुरूपी दूरवर्ती कार्यों का उपयोग करता है अर्थात दो समयावधियों में आउटपुट और इनपुट की मात्रा की तुलना करता है। सूचकांक इस बात का पता लगाता है कि आउटपुट को अवधि 1 के स्तर पर ही बनाए रखने हेतु अवधि 2 में इनपुट को किस सीमा तक घटाया जा सकता है। सूचकांक की गणना करने के लिए, दो में से किसी भी अवधि को सन्दर्भ बिन्दु के रूप में लिया जा सकता है। अवधि 1 में प्रौद्योगिकी को सन्दर्भ के रूप में लिए जाने तथा परिकलित मूल्य सूचकांक के अधिक होने की स्थिति में उत्पादकता में अभिलाभ (वृद्धि) होने का संकेत प्राप्त होता है। दूसरी ओर, 1 से कम सूचकांक उत्पादकता में कमी का संकेत करता है। एक इनपुट और एक आउटपुट के मामले का उपयोग करते हुए एक उदाहरण इसके नीचे प्रस्तुत चार्ट में दर्शाया गया है।

चार्ट : मामक्विस्ट सूचकांक का परिकलन

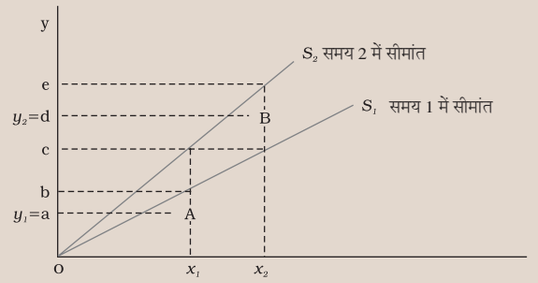

बिन्दु A और B क्रमशः 1 और 2 अवधियों में प्रेक्षणों का निरूपण करते हैं। S1 और S2 मूल केन्द्र से किरणें क्रमशः 1 और 2 अवधियों के उत्पादन सीमांतों का निरूपण करती हैं। सीमांत S1 (अवधि 1) की तुलना में A में उत्पादन की सापेक्ष कार्य-कुशलता d(y1, x1)= 0a/0b है। किन्तु S2 सीमांत (अवधि 2) के साथ तुलना किए जाने पर यह d2(y1, x1)=0a/0c होती है। सीमांत S2 की तुलना में B में उत्पादन की सापेक्ष कार्यकुशलता d2(y2, x2)=0d/0e होती है। S1 सीमांत की तुलना में सापेक्ष कार्यकुशलता d1(y2, x2)= 0d/0c होती है। कुल उपादान उत्पादकता परिवर्तन का मामक्विस्ट सूचकांक क्रमशः अवधि 1 और 2 के लिए प्रौद्योगिकी पर आधारित दोनों सूचकांकों का ज्यामितीय औसत होता है। दूसरे शब्दों में :

M = [{d1(y1,x1) d2(y1,x1)}/{d1(y2,x2) d2(y1,x1)}]1/2 .....(1)

समतुल्य रूप से

M=[d1(y1,x1)/d2(y2,x2)] [d2(y2,x2) d2(y1,x1)/d1(y2,x2) d1(y1,x1)]1/2 .....(2)

जिसमें, यह दूरवर्ती फलन और मालक्विस्ट उत्पादकता सूचकांक में m का मूल्य है। एक से अधिक मूल्य (अर्थात M>(1) उत्पादकता वृद्धि का संकेत करता है, एक से कम मूल्य (अर्थात M<1) उत्पादकता में गिरावट का संकेत करता है और M=1 उत्पादकता में किसी प्रकार के परिवर्तन नहीं होने का द्योतन करता है। M में परिवर्तन दो तत्वों का निरूपण करता है, यथा -

M = ET

जिसमें

M = मालक्विस्ट उत्पादकता सूचकांक

E = तकनीकी कार्यकुशलता में परिवर्तन अर्थात t और t+1 (वर्गावार कोष्ठक के बाहर वाला शब्द) अवधि के बीच और एक निश्चित इनपुट के लिए आउटपुट में परिवर्तन।

T = (उत्पादन प्रौद्योगिकी में दोनों अवधियों (दोनों अनुपातों) के बीच उत्पादन प्रौद्योगिकी में प्रौद्योगिकीय परिवर्तन (प्रौद्योगिकीय सुधारों) का एक माप।

संदर्भ:

मैथ्यूज, के. और एम.इस्माइल, 2006 ''एफिसिएन्सी एण्ड प्रोडक्टिविटी ग्रोथ ऑफ डोमिस्टिक एण्ड फॉरेन कॉमर्शियल बैंक्स इन मलेशिया'', क्रेडिट बिज़नेस स्कूल वर्किंग पेपर श्रृंखला ।

9.86 बैंकिंग क्षेत्र और विविध बैंक समूहों की उत्पादकता में 1991-92 और 2006-07 के बीच सुधार आया। हालांकि, अधिकांश अभिलाभ 1997-98 से लेकर उसके बाद वाली अवधियों में फलीभूत हुए। उत्पादकता के वृद्धि मूलतः तकनीकी प्रगति (नवोन्मेषों) से उद्भूत हुई, जबकि, विशेषतः सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक प्रणाली में बढ़ी हुई प्रौद्योगिकीय सक्षमता को आत्मसात/अवशोषित करने में पीछे रह गए।

V. भारत में बैंकिंग क्षेत्र की सुदृढ़ता

9.87 किसी देश के वित्तीय विनियामक की मुख्य भूमिका प्रणालीगत जोखिम को अर्थात् उस जोखिम को सीमित रखने की होती है, जो कुछ संस्थाओं से सम्बन्धित समस्याओं के उन अन्य संस्थाओं तक फैल जाने से पैदा होता है, जो अन्यथा शोधक्षम और अर्थ-सुलभ होती हैं। विनियामक इस कार्य को यह सुनिश्चित करते हुए पूरा करता है कि संस्थाएं स्वयं

सारणी 9.27 : कुल उपादान उत्पादकता परिवर्तन

(आधार : 1991-92=100)

समूह	टीएफपी में परिवर्तन का सूचकांक		तकनीकी कार्यकुशलता में परिवर्तन का सूचकांक		प्रौद्योगिकीय परिवर्तन सूचकांक	
	1997-1998	2006-2007	1997- 1998	2006-2007	1997-1998	2006-2007
1	2	3	4	5	6	7
स्टेट बैंक समूह	97.60	112.32	98.34	58.45	99.21	191.86
राष्ट्रीयकृत बैंक	103.50	135.43	122.73	67.77	84.35	199.88
निजी क्षेत्र के पुराने बैंक	104.34	144.72	130.52	75.34	79.97	192.14
निजी क्षेत्र के नए बैंक*	115.12	116.14	123.64	68.51	93.10	169.47
विदेशी बैंक	112.05	170.56	113.67	94.81	98.58	179.86
समस्त	105.46	143.52	118.25	76.77	89.19	186.93

*** निजी क्षेत्र के नए बैंकों के मामले में आधार वर्ष 1995-96 था, अन्य सभी समूहों के मामले में यह 1991-92 था।**

उनके परिचालनों अथवा बाज़ार में होने वाले किसी प्रकार के अवरोधक उतार-चढ़ावों, दोनों ही से उद्भूत होने वाली अप्रत्याशित जोखिमों का सामना करने हेतु सुदृढ़ हों अथवा पर्याप्त रूप से पूंजीकृत हों। तथापि, वित्तीय क्षेत्र के बढ़ते वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप वित्तीय सुदृढ़ता की संकल्पना व्यापक हो गई है। शोध-क्षमता के अलावा, आज सुदृढ़ प्रबन्धन के लिए यह आवश्यक हो गया है कि बैंकों में इस प्रकार की प्रणालियां और

चार्ट IX.26: उत्पादकता में बैंक-समूहवार प्रवृत्तियां : 1991-92 - 2006-07

tfpch: टीएफपी में परिवर्तन effch: तकनीकी कार्यकुशलता में परिवर्तन techch: प्रौद्योगिकीय परिवर्तन

कार्यविधियां लागू हों जिनमें बाज़ार और मूल्य में होने वाले परिवर्तनों के प्रति बढ़ी हुई गति से प्रतिक्रिया होने तथा उन संकटों से त्वरित गति से उबरने की सुविधा प्राप्त हो, जो प्रणाली अथवा अलग-अलग बैंकों को प्रभावित करते हैं। इसके लिए पुनः यह आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक बैंक विभिन्न प्रकार के परिचालनों से पैदा होने वाली जोखिमों का मूल्यांकन करें तथा उन्हें विश्लेषणों, मान्यताओं और मानदंडों के मॉडलों के रूप में विभाजित करने में समर्थ हो, जिनके आधार पर जोखिम एक्सपोज़र का अनुमान लगाया जाता है। उदाहरण के लिए तुलनपत्र में शामिल न किए जाने वाले लेन-देन में उन प्रतिपक्षियों की वित्तीय सुदृढ़ता से अवगत होना महत्त्वपूर्ण होता है जिनके साथ बैंक लेन-देन करता है।

9.88 नए वित्तीय लिखतों के प्रचुरोद्भवन और वित्तीय मध्यवर्तियों के सीमापार क्रियाकलापों के परिणामस्वरूप विनियामकों को बैंकिंग प्रणाली की वित्तीय सुदृढ़ता से सम्बन्धित पहलुओं पर अधिक से अधिक ध्यान देना पड़ रहा है। अविनियमन, बाज़ार में होने वाले उतार-चढ़ावों, विदेशी मुद्रा की दर और ब्याज दर की अस्थिरता ने अदला-बदली (स्वैप), ऑप्शंस फ्यूचर्स और विदेशी मुद्रा के वायदा सौदों के साथ ही साथ समर्थक प्रतिबद्धताओं और साख पत्रों की मंजूरी, जिन्हें सामूहिक रूप से तुलनपत्र में शामिल न की जाने वाली मदों के रूप में जाना जाता है, जैसे नए वित्तीय लिखतों के लिए उर्वर भूमि उपलब्ध करा दी है। इस प्रकार की लिखतों से संस्था को लेखांकन हानि तों से, जो वित्तीय स्थिति के विवरण में मान्य रकम से बढ़ जाती है, की जोखिम का सामना करना पड़ता है। वह तुलनपत्रेतर प्रक्रियाओं में निहित कई प्रकार के अज्ञात तत्वों के कारण जोखिम को विभिन्न संदर्भ स्तरों को अंतरित कर देती है और फलतः नयी किस्म की जोखिम प्रबन्धन प्रथाओं की मांग सृजित कर देती है। इसी प्रकार, आज बैंक परिचालन अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तारित हो गए हैं, जिससे उनके जोखिम एक्सपोज़र की परिधि अधिक परंपरागत परिचालन जोखिम के अलावा प्रतिस्पर्धा के नए नियमों, ग्राहकों के व्यवहारपरक जोखिम, तक विस्तृत हो गई है। विभिन्न बाजारों और अर्थव्यवस्थाओं के वित्तीय परिचालनों के बढ़ते एकीकरण को ध्यान में रखते हुए, किसी एक बाज़ार अथवा अर्थव्यवस्था में होने वाली किसी घटना का घरेलू वित्तीय प्रणालियों पर संभाव्य डॉमिनो प्रभाव हो सकता है। इस प्रकार वित्तीय रूप से सुदृढ़ संस्थाओं के महत्त्व को इस समय के जितना अधिक कभी नहीं महसूस किया गया था। अतएव इस खंड में हम देश की बैंकिंग संस्थाओं की वित्तीय सुदृढ़ता का जोखिम-भारित आस्ति की तुलना में पूंजी के अनुपात की दृष्टि से मूल्यांकन करते हैं। चूंकि आस्ति की घटिया गुणवत्ता में बैंक की पूंजी की स्थिति में कमी लाने की संभाव्यता निहित होती है, इसलिए बैंकिंग संस्थाओं की आस्ति की गुणवत्ता का भी मूल्यांकन किया गया है।

जोखिम भारित आस्ति की तुलना में पूंजी की अनुपात

9.89 पूंजी पर्याप्तता अनुपात किसी बैंक के जोखिम भारित ऋण एक्सपोजरों के अनुपात में उसकी पूंजी की रकम को मापता है तथा वह बैंकों की वित्तीय सुदृढ़ता को मापने का सर्वाधिक व्यापक रूप में प्रयुक्त होने वाला माप होता है। यह किसी बैंक के परिचालनों से पैदा होने वाली अप्रत्याशित हानियों का सामना करने में उसकी सक्षमता का निर्धारण करता है। जोखिम भारांकन प्रक्रिया में बैंकों द्वारा धारित विविध प्रकार के ऋण एक्सपोजरों की जोखिमपूर्णता को सुरुचिपूर्ण ढंग से ध्यान में रखा जाता है और उसमें ऋण जोखिम तुलनपत्रेतर संविदाओं के प्रभाव को शामिल किया जाता है। किसी बैंक का पूंजी पर्याप्तता अनुपात जितना ही अधिक होता है, दिवालिया होने के पहले अप्रत्याशित हानियों को अवशोषित करने की उसकी सक्षमता भी उतनी ही अधिक होती है। इस प्रकार, वह संभाव्य हानियों के लिए एक ''कुशन'' उपलब्ध कराती है, जो बैंक के जमाकर्ताओं अथवा अन्य उधारदाताओं को संरक्षित रखता है।

9.90 भारत में सभी बैंक समूहों की जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात में पिछले वर्षों में बढ़ोत्तरी हुई है (सारणी 9.28)। राष्ट्रीयकृत बैंकों और निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों का जोखिम भारित आस्ति की तुलना में पूंजी का अनुपात, जो मार्च, 1996 के अंत में बहुत कम था, क्रमिक रूप से बढ़कर मार्च 2007 के अंत तक 12 प्रतिशत से अधिक हो

सारणी 9.28 : भारत में वाणिज्य बैंकों का जोखिम भारित आस्ति की तुलना में पूँजी का अनुपात

(प्रतिशत)

मार्च के अंत में समूह	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	निजी क्षेत्र के पुरानेबैंक	निजी क्षेत्र के नये बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
1	2	3	4	5	6	7
1996	11.33	5.73	6.20	22.01	12.98	6.71
1997	11.64	7.45	8.07	14.39	14.67	8.70
1998	14.63	9.99	9.52	13.38	15.14	5.90
1999	12.72	10.43	9.55	11.67	16.10	12.92
2000	12.29	10.35	12.99	13.04	16.16	13.12
2001	12.94	10.32	14.21	11.94	16.17	13.07
2002	13.19	10.77	12.00	10.30	14.37	11.51
2003	14.01	12.14	13.19	8.80	18.53	12.28
2004	13.57	13.23	14.38	11.30	19.82	13.89
2005	12.06	13.10	12.16	12.46	17.42	14.07
2006	11.90	12.19	5.54	12.36	15.75	12.61
2007	12.42	12.01	13.66	12.17	13.80	12.88

स्रोत : भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियों (भारिबैंक) से परिकलित।

गया। दूसरी ओर, स्टेट बैंक समूह, निजी क्षेत्र के नये बैंकों और विदेशी बैंकों का जोखिम भारित आस्ति की तुलना में पूंजी का अनुपात 8 से 9 तक (31 मार्च 2000 से 9 प्रतिशत) के निर्धारित स्तर से हमेशा ही अधिक था। निजी क्षेत्र के नये बैंकों के मामले में एक बैंक ने महत्त्वपूर्ण रूप से कम जोखिम भारित आस्ति की तुलना में पूंजी के अनुपात की रिपोर्टिंग की थी, जिसने उक्त समूह के औसत को मार्च 2003 के अंत में घटा दिया था। हालांकि, आगे चलकर उक्त बैंक अपेक्षाकृत सुदृढ़ बैंक में विलयित हो गया, जिससे कुल मिलाकर प्रणाली की शक्ति बढ़ गई।

9.91 विभिन्न देशों के साथ तुलना किए जाने पर यह पता चलता है कि 2006 के अंत में विभिन्न देशों के बीच आस्तियों की तुलना में पूंजी के अनुपात में 5 प्रतिशत से 16 प्रतिशत[8] के बीच काफी भिन्नता मौजूद थी (सारणी 9.29)। 2006 के अंत में अधिकांश देशों की बैंकिंग प्रणाली में कुल आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात 8 प्रतिशत से अधिक था। अधिकांश विकसित देशों के बैंकों का कुल आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात 5 और 9 प्रतिशत के बीच था। दूसरी ओर मैक्सिकों, चिली, ब्राज़ील और रूसी महासंघ जैसे विकासशील देशों के बैंकों का कुल आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात पर्याप्त रूप से अधिक स्तर पर था। 8.29 प्रतिशत के स्तर पर भारत का कुल आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात कतिपय उन्नत और उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं के साथ अनुकूल रूप से तुलनीय था।

आस्ति की गुणवत्ता

9.92 किसी बैंक की आस्ति की गुणवत्ता के घटिया होने पर उसकी वित्तीय सुदृढ़ता गंभीर रूप से क्षत हो सकती है। अनर्जक आस्तियों के लिए प्रावधानीकरण/बट्टे खाते डालना आवश्यक हो जाता है, जिससे बैंकों की लाभप्रदता तथा उनकी पूंजी स्थिति को सुदृढ़ बनाने की उनकी योग्यता प्रभावित हो जाती है। प्रावधानीकरण/बट्टे खाते डाले जाने के परिणामस्वरूप निवल हानि होने की स्थिति में, बैंक की पूंजीगत स्थिति में भी ह्रास आ सकता है। अतएव, सुदृढ़ पूंजीगत स्थिति के अलावा, यह आवश्यक होता है कि बैंक आस्ति की गुणवत्ता को उच्चस्तरीय बनाए रखें। भारत में वाणिज्यिक बैंकों की अनर्जक आस्तियां पिछले वर्षों में क्रमिक रूप से कम हुई हैं (सकल अनर्जक आस्तियां मार्च 1997 के अंत के 15.7 प्रतिशत के स्तर से घटकर मार्च 2007 के अंत में 2.5 प्रतिशत और निवल अनर्जक आस्तियां मार्च 1997 के 8.1 प्रतिशत से घटकर मार्च 2007 के अंत में 1.0 प्रतिशत)। आस्ति की गुणवत्ता के मामले में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सुधार राष्ट्रीयकृत बैंकों के मामले में देखने में आया, जिनके बाद निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों और स्टेट

सारणी 9.29 : चुनिंदा देशों में वाणिज्य बैंकों की कुल आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात

(प्रतिशत)

देश	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं								
यू एस ए	8.63	9.01	12.58	10.17	9.82	9.03	9.63	8.9
कनाडा	*	7.27	7.02	6.86	6.62	6.39	6.3	6.49
यू.के.	*	7.66	8.46	9.03	4.82	6.6	6.04	5.8
इटली	6.96	7.03	6.49	6.72	7.95	9.16	8.29	8.67
फ्रांस	5.2	6.45	5.45	5.65	5.97	4.96	4.9	5.04
जर्मनी	5.31	6.17	6.25	5.78	5.88	5.37	5.63	5.22
जापान	*	*	*	*	*	*	*	*
उभरती अर्थव्यवस्थाएं								
मैक्सिको	11.07	10.77	11.35	12.05	12.27	11.68	13.36	14.41
चिली	10.16	9.93	10.03	11.33	11.56	11.22	10.9	11.36
कोरिया	6.6	6.63	7.49	7.07	7.03	7.32	7.43	7.77
थाईलैंड	10.67	10.2	9.56	9.62	10.52	9.67	10.26	10.74
फिलीपीन्स	17.37	25.73	17.46	17.48	17.21	14.39	11.86	13.14
मलेशिया	*	8.54	8.63	10.1	10.08	9.65	9.56	9.45
इंडोनेशिया	0.22	7.93	8.17	9.16	10.51	12.07	11.03	12.12
ब्राज़ील	10.3	9.33	10.38	10.81	11.64	11.75	11.92	12.38
रूसी महासंघ	11.76	12.86	14.5	15.33	15.6	16.72	15.95	15.91
चीन	6.13	5.98	4.98	3.12	3.1	5.22	5.68	6.84
मेमो:								
श्रेणी	**0.22-17.37**	**5.98-25.73**	**4.98-17.46**	**3.12-17.48**	**3.1-17.21**	**4.96-16.72**	**4.90-15.95**	**5.04-15.91**
भारत	**6.94**	**6.77**	**6.86**	**6.9**	**7.24**	**7.51**	**8.21**	**8.29**

*: आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, अथवा यदि वे उपलब्ध भी हैं, तो उनके नमूने बहुत छोटे हैं और इसलिए उनके विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया।

स्रोत : बैंक स्कोप

8 जबकि जोखिम भारित आस्ति की तुलना में पूंजी का अनुपात बैंक की वित्तीय सुदृढता का बेहतर संकेतक होता है, विभिन्न देशों में जोखिम-भारित आस्ति की तुलना में पूंजी को अनुपात से सम्बधित समय-श्रृंखला के आधार पर आंकड़े सहजता से उपलब्ध नहीं थे। इसे ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय तुलना के लिए कुल आस्तियों की तुलना में पूंजी के अनुपात पर विचार किया गया ।

चार्ट IX.27: विविध बैंक समूहों की निवल अनर्जक आस्तियां

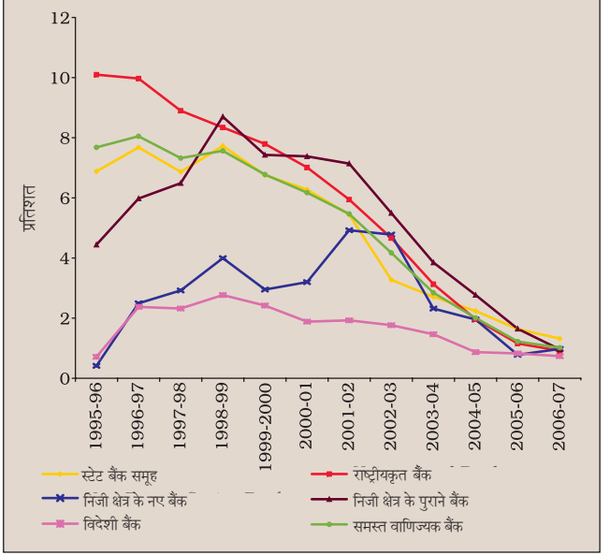

बैंक समूह का स्थान रहा। इसके फलस्वरूप, समस्त बैंक समूहों की निवल अनर्जक आस्तियों का अनुपात घटकर लगभग 1 प्रतिशत पर अभिसरित हो गया (चार्ट IX.27 और सारणी 9.30)। आस्ति की गुणवत्ता में आया सुधार सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि आय निर्धारण, आस्ति वर्गीकरण तथा प्रावधानीकरण से सम्बन्धित मानदंडों को समय-समय पर सख्त बनाया गया। आस्ति की गुणवत्ता में यह सुधार दीर्घकालिक अनर्जक आस्तियों के बारे में समझौता समाधान पर पहुंचने, कॉरपोरेट ऋणों के पुनर्विन्यास, ऋण वसूली न्यायाधिकरणों को स्थापित करने तथा न्यायपालिका की संलिप्तता के बिना ही प्राप्य राशियों की वसूली करने हेतु प्रतिभूति हित के प्रवर्तन जैसे कतिपय संस्थागत उपायों को लागू करके लाया गया।

9.93 1999-2006 की अवधि के दौरान अध्ययन किए गए लगभग सभी चुनिंदा देशों में सकल ऋणों की तुलना में क्षत ऋणों के अनुपात अर्थात कुल अग्रिमों की तुलना में अनर्जक आस्तियों के अनुपात में गिरावट आई। भारत में सकल ऋणों की तुलना में क्षत ऋणों का अनुपात इस समय फ्रांस, जर्मनी और जापान जैसे अधिकांश विकसित देशों के साथ तुलनीय है तथा वह ब्राज़ील, थाईलैंड, फिलीपीन्स, मलेशिया और इंडोनेशिया जैसी कतिपय उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में बेहतर है (सारणी 9.31)।

दक्षता और सुदृढ़ता के बीच संबंध

9.94 अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर किसी बैंक की विफलता, यदि, कोई हो, के लक्षणों का घटना-पूर्व पता लगाने में लागतपरक कुशलता के अध्ययन सहायक सिद्ध होते रहे हैं। इससे 'बेल आउट' और विनियामक हस्तक्षेप की लागतों में बचत होती रही है। बैंक विफलता के विविध पूर्वानुमान मॉडलों की रचना कैमेल्स के इर्दगिर्द की गई है, क्योंकि यह एक प्रभावी समय-पूर्व चेतावनी प्रणाली का कार्य करती है, जो कठिनाई में फंसी उन संस्थाओं की पहचान करते हुए, जिनकी शीघ्र जांच अथवा जिनमें संभाव्य हस्तक्षेप आवश्यक होता है, प्रत्यक्ष जांच प्रक्रिया की अनुपूरक बन सकती है। अध्ययनों से यह पता चला है कि विफलता की कगार पर खड़े बैंकों में कम कार्यकुशलता वाले मानदंडों के पूर्ववृत्त मौजूद होते हैं, जैसे कि अन्य बातों के साथ ही प्रति कर्मचारी कम निवल लाभ, प्रति कर्मचारी कम कारोबार, अधिक अनर्जक आस्तियां। यह किसी विफल बैंक के वृत्त अध्ययन से भी स्पष्ट हो जाता है (बॉक्स IX.11)।

9.95 आस्ति की गुणवत्ता और कार्य-कुशलता के बीच संबंध का पता लगाने वाला विशाल अनुसंधान साहित्य इसके पूर्व यथावर्णित चार वैकल्पिक सिद्धांतों का सुझाव देता है, यथा - घटिया प्रबंधन, दुर्भाग्य, कृपणता और

सारणी 9.30 : भारत में वाणिज्य बैंकों के कुल अग्रिमों के प्रतिशत के रूप में निवल अनर्जक आस्तियां

मार्च के अंत में	स्टेट बैंक समूह	राष्ट्रीयकृत बैंक	निजी क्षेत्र के पुराने बैंक	निजी क्षेत्र के नए बैंक	विदेशी बैंक	समस्त वाणिज्य बैंक
1	2	3	4	5	6	7
1996	6.88	10.10	4.44	0.41	0.71	7.68
1997	7.68	9.97	5.98	2.49	2.37	8.05
1998	6.86	8.90	6.49	2.92	2.32	7.32
1999	7.73	8.34	8.70	3.99	2.77	7.56
2000	6.76	7.80	7.43	2.95	2.42	6.78
2001	6.27	7.01	7.38	3.20	1.88	6.17
2002	5.44	5.94	7.14	4.92	1.93	5.47
2003	3.28	4.66	5.50	4.78	1.77	4.17
2004	2.71	3.13	3.85	2.32	1.46	2.84
2005	2.24	1.97	2.77	1.95	0.87	2.01
2006	1.64	1.16	1.65	0.78	0.83	1.22
2007	1.32	0.92	0.96	0.98	0.73	1.02

स्रोत : भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियों (भारिबैंक) से परिकलित।

सारणी 9.31: चुनिंदा देशों में वाणिज्य बैंकों के सकल ऋणों की तुलना में क्षतिग्रस्त ऋणों का अनुपात

(प्रतिशत)

देश	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं								
यू एस ए	1.30	1.39	1.50	1.53	1.12	1.21	0.61	0.68
कनाडा	*	1.37	1.68	1.75	1.30	0.84	0.58	0.51
यू.के.	*	1.41	2.32	3.27	2.83	0.82	1.48	1.38
इटली	7.71	4.88	4.19	4.86	4.54	4.79	6.57	5.47
फ्रांस	6.47	6.71	5.60	5.25	4.48	4.63	3.31	2.62
जर्मनी	2.27	3.18	3.53	5.12	5.11	6.19	4.28	3.83
जापान	5.92	6.34	9.96	8.31	6.71	4.46	3.20	2.84
उभरती अर्थव्यवस्थाएं								
मैक्सिको	12.33	9.42	4.90	4.89	3.27	2.62	1.84	2.00
चिनी	2.07	1.91	1.74	2.00	1.81	1.30	0.99	0.81
कोरिया	26.68	11.33	3.23	2.87	2.79	2.10	1.37	0.97
थाईलैंड	40.84	26.11	18.60	21.05	16.46	13.73	10.39	9.28
फिलीपीन्स	16.12	14.90	20.60	6.95	7.36	12.29	9.55	8.03
मलेशिया	*	10.76	13.88	12.89	11.66	9.66	7.68	6.52
इंडोनेशिया	42.02	21.28	12.69	6.94	6.04	4.39	8.29	6.79
ब्राज़ील	0.09	10.34	9.31	9.39	9.44	8.10	8.48	8.97
रूसी महासंघ	3.70	1.58	1.17	1.69	2.00	1.40	1.82	1.84
चीन	20.24	17.29	12.29	13.98	5.07	4.33	3.12	2.76
मेमो:								
श्रेणी	**0.09-42.02**	**1.37-26.11**	**1.17-20.60**	**1.53-21.05**	**1.12-16.46**	**0.82-13.73**	**0.58-10.39**	**0.51-9.28**
भारत	**12.80**	**11.40**	**10.40**	**8.80**	**7.20**	**5.20**	**3.32**	**2.55**

*: आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, अथवा यदि व उपलब्ध भी हैं, तो उनके नमूने बहुत छोटे हैं और इसलिए उनके विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया।

स्रोत : बैंक स्कोप

नैतिक संकट। दुर्भाग्य वाले सिद्धांत के अनुसार, बहिर्जात घटनाओं के कारण समस्यामूलक ऋणों में बैंक के लिए कठिनाइयां बढ़ सकती हैं, जिनसे पुनः अन्य बातों के साथ ही चूककर्ता उधारकर्ताओं पर अतिरिक्त निगरानी रखने, जब्ती की लागतों, चूक की स्थिति में संपार्श्विकों का रखरखाव करने और अंततः उन्हें बेचने तथा बैंक के पर्यवेक्षकों के समक्ष उसकी सुरक्षा और वित्तीय सुदृढ़ता के रिकार्ड का बचाव करने के

बॉक्स IX.11
कार्य-कुशलता का महत्व - एक बैंक का वृत्त अध्ययन

कार्य-कुशलता के अध्ययन के महत्व का पता एक विफल बैंक के वृत्त अध्ययन से लगाया जा सकता है। वर्तमान दशक के प्रारंभिक दिनों में एक बैंक दिवालिया हो गया। तथापि, बढती कमजोरियों के संकेत उसकी विफलता वाले वर्ष से अधिक अनर्जक आस्तियों, प्रति कर्मचारी कम कारोबार, निरंतर आधार पर घटते प्रति कर्मचारी लाभ और प्रति शाखा कारोबार के रूप में चार वर्ष पहले की अवधि में ही सुस्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे थे। उसके अंततः विफल होने के पहले डीईए मॉडल से अनुमानित लागत कार्य-कुशलता मानदंडों से भी लागतपरक कार्य-कुशलता अंक में तीव्र गिरावट का पता चला।

सारणी : बैंक की कार्य-कुशलता के मानदंड

	लाभ प्रति कर्मचारी (मिलियन अमरीकी डालर)	कारोबार प्रति कर्मचारी (मिलियन अमरीकी डालर)	कारोबार प्रति शाखा (मिलियन अमरीकी डालर)	प्रति शाखा कुल आकस्मिक देयताएं (मिलियन अमरीकी डालर)	प्रति शाखा कुल आस्तियां (मिलियन अमरीकी डालर)	कुल आस्तियों की तुलना में निवल अनर्जक आस्तियां (प्रतिशत)	डीईए के अनुसार लागतपरक कार्य-कुशलता
1	2	3	4	5	6	7	8
वर्ष 1	9.47	830.91	12684.16	9453.84	10612.92	2.15	0.69
वर्ष 2	-14.52	1258.00	15683.10	11697.00	97675.27	0.87	0.93
वर्ष 3	6.85	1008.86	17930.18	9192.73	14351.45	3.75	0.49
वर्ष 4	3.51	826.13	11994.56	3264.75	9250.03	9.23	0.42
वर्ष 5	-20.75	776.03	10733.72	3766.66	8069.46	19.77	0.38
वर्ष 6	-61.82	657.88	8820.96	2298.51	7350.16	27.99	0.37

संबंध में अतिरिक्त लागतों के कारण परिचालन लागतें बढ़ जाती हैं। इस प्रकार, इस परिकल्पना में यह आशा की जाती है कि अनर्जक ऋणों में वृद्धि के कारण लागतपरक कार्य-कुशलता में गिरावट आएगी। घटिया प्रबंधन प्रथाओं के फलस्वरूप परिकलन व्यय में वृद्धि होगी, जिसका तात्कालिक प्रभाव कम मापित लागतपरक कार्य-कुशलता के रूप में सामने आएगा। प्रबंधकीय कमियों के परिणामस्वरूप अपर्याप्त ऋण हामीदारी, निगरानी और नियंत्रण, घटिया ऋण अंकन तथा कम अथवा ऋणात्मक वर्तमान मूल्य वाले अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में ऋणों के चयन की स्थिति निर्मित हो सकती है। यह घटिया प्रबंधन परिकल्पना है और इसके तहत अल्प लागतपरक कार्य-कुशलता के कारण अपेक्षाकृत अधिक अनर्जक ऋण बनने की आशा की जाती है।

9.96 कृपणता की परिकल्पना के अनुसार कोई बैंक ऋणों की हामीदारी और उन पर निगरानी रखने हेतु समर्पित संसाधनों में बचत के कारण अल्पकालिक तौर पर लागत कुशल हो सकता है, किंतु यह भावी ऋण कार्य-निष्पादन समस्याओं की लागत पर ही संभव हो सकता है। इसलिए इस परिकल्पना के तहत अल्प लागतपरक कार्य-कुशलता ऋण की गुणवत्ता से सकारात्मक रूप से संबंधित हो सकती है। जैसाकि नाम से ही पता चलता है, नैतिक संकट की परिकल्पना, कम पूंजीवाले बैंकों की अपेक्षाकृत अधिक जोखिम वहन करने की प्रवृत्ति का संकेत करती है, जिसके परिणामस्वरूप अनर्जक ऋण अधिक हो जाते हैं। इसलिए इस परिकल्पना के अधीन कम वित्तीय पूंजी के फलस्वरूप अनर्जक ऋण अधिक हो सकते हैं।

9.97 अनुभवजन्य जांचों से यह पता चलता है कि दुर्भाग्य और घटिया प्रबंधन, दोनों ही परिकल्पनाएं भारतीय बैंकों के मामले में महत्त्वपूर्ण रूप से वैध हैं। इसका अभिप्राय यह है कि घटिया स्थूल आर्थिक कार्य-निष्पादन के परिणामस्वरूप अनर्जक आस्तियों में वृद्धि होती है तथा उसका असर कार्य-कुशलता पर पड़ता है। प्रबंधन की घटिया गुणवत्ता के परिणामस्वरूप अनर्जक ऋणों में भी बढ़ोत्तरी होती है (बॉक्स IX.12)।

9.98 संक्षेप में, सुदृढ़ता के संकेतकों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि विविध बैंक समूहों की जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी के अनुपात (सीआरएआर) में सुधारोत्तर अवधि में महत्त्वपूर्ण रूप से सुधार आया है। मार्च 2007 के अंत में बैंकिंग उद्योग का 13 प्रतिशत और विविध बैंक समूहों के मामले में 12-14 प्रतिशत के दायरे में अनुपात 9 प्रतिशत के निर्धारित स्तर की तुलना में महत्त्वपूर्ण रूप से अधिक था। सुदृढ़ होती पूंजी की स्थिति के साथ ही आस्ति की गुणवत्ता में भी महत्त्वपूर्ण बढ़ोत्तरी हुई। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की निवल अनर्जक आस्तियां अब वैश्विक स्तर पर हैं। अनुभवजन्य विश्लेषण से यह पता चला कि स्थूल आर्थिक विकास और प्रबंधन की गुणवत्ता दोनों ही बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता को प्रभावित करते हैं। इसका अभिप्राय यह हुआ कि घटिया स्थूल आर्थिक कार्य-निष्पादन और प्रबंधन की घटिया गुणवत्ता के फलस्वरूप कार्य-कुशलता में कमी आ जाती है।

VI. कार्य-कुशलता और उत्पादकता में सुधार के पीछे निहित कारक

9.99 सुधारोत्तर अवधि में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की बढ़ी हुई कार्य-कुशलता और उत्पादकता के कारक कतिपय ढांचागत परिवर्तन थे। निजी क्षेत्र के बैंकों के प्रादुर्भाव तथा समग्र ढांचे में उनके बढ़ते महत्त्व ने इसमें एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपने प्रारंभ से ही निजी क्षेत्र के नये बैंक कई एक सार्वजनिक क्षेत्र, पुराने निजी क्षेत्र और विदेशी बैंकों की तुलना में अधिक कार्य-कुशल रहे हैं। उद्योग में निजी क्षेत्र के बैंकों का

बॉक्स IX.12
भारत में कार्य-कुशलता और अनर्जक आस्तियों के संबंध

आस्ति की गुणवत्ता और कार्य-कुशलता के बीच संबंधों को स्पष्ट करने वाले चार विकल्पों वाले सिद्धांत, यथा दुर्भाग्य, घटिया प्रबंधन, कृपणता और नैतिक संकट की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति की जांच करने के उद्देश्य से तकनीकी कार्य-कुशलता (टीई) वाले जोखिम मूल्य (वीएआर) पैनल तथा परिवर्तियों के रूप में निवल अनर्जक आस्तियों (एनएनपीए) के आधार पर ग्रैंगर आकस्मिकता परीक्षण किए गए। उक्त अध्ययन की अवधि 1996-2006 थी। ग्रैंगर हेतुकता परिणामों से यह पता चलता है कि अनर्जक आस्तियों का ग्रैंगर कार्य-कुशलता का कारण बनता है तथा विपरीत स्थिति में विपरीत प्रभाव होता है, जिससे यह संकेत प्राप्त होता है कि समीक्षाधीन अवधि (1996-2006) के लिए भारतीय बैंकों के मामले में दुर्भाग्य और घटिया प्रबंधन, दोनों ही परिकल्पनाएं सत्य थीं।

सारणी: वेक्टर ऑटो पश्चगमन (Regression) के परिणाम

आश्रित परिवर्ती	तकनीकी कार्य-कुशलता	निवल अनर्जक आस्तियां
अंतररोध	**0.0659***	**1.661***
	(5.544)	(4.29)
तकनीकी कार्य-कुशलता (-1)	**0.951***	**0.033**
	(20.528)	(0.022)
तकनीकी कार्य-कुशलता (-2)	**0.027**	**-5.469***
	(0.409)	(-2.569)
तकनीकी कार्य-कुशलता (-3)	**-0.027**	**3.745***
	(-0.5)	(-2.172)
निवल अनर्जक आस्ति (-1)	**0.002**	**0.599***
	(-1.37)	(-14.62)
निवल अनर्जक आस्ति (-2)	**-0.004***	**0.132***
	(-2.843)	(-2.98)
निवल अनर्जक आस्ति(-3)	**0.008**	**-0.0184**
	(-0.652)	(-0.483)

* : 1 प्रतिशत के स्तर पर महत्त्वपूर्ण

टिप्पणी : कोष्ठक में दर्शाए गए आंकड़े 'टी' सांख्यिकियों के हैं।

जोड़ी-वार ग्रैंजर हेतुकता जांच

नमूना : 1996-2006

शून्य परिकल्पना	एफ-सांख्यिकी	पी-मूल्य
निवल आस्ति तकनीकी कार्य-कुशलता का ग्रैंजर निमित्त नहीं होती	3.04	0.028
तकनीकी कार्य-कुशलता अनर्जक आस्ति का ग्रैंजर निमित्त नहीं होती	5.73	0.001

अंश मार्च 1996 के अंत के 1.5 प्रतिशत से क्रमिक रूप से बढ़कर मार्च 2007 के अंत तक 16.9 प्रतिशत हो गया। अतः निजी क्षेत्र के बैंकों का अंश बढ़ जाने के कारण बैंकिंग क्षेत्र की समग्र कार्य-कुशलता भी बढ़ गई। इसके अलावा, बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा ने भी अन्य बैंकों पर उनके कार्य-निष्पादन को सुधारने का दबाव डाला, जिसके परिणामस्वरूप बैंकिंग क्षेत्र की समग्र कार्य-कुशलता में सुधार आ गया। बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा के कारण, विशेषतः हाल के वर्षों में बैंकों के मार्जिनों पर दबाव पड़ने लगा है। बैंकों ने परिमाणों में बढ़ोत्तरी करने, आय के गैर-ब्याजगत स्रोतों की तलाश करने और परिचालनात्मक कार्य-कुशलता में सुधार लाने के उपायों द्वारा इनका सामना करने के प्रयास किए हैं। भारत उच्चतर वृद्धि के प्रक्षेप-पथ की ओर अग्रसर हो चुका है। शक्तिशाली आर्थिक वृद्धि ने बैंकों को न केवल ऋण का परिमाण बढ़ाने में समर्थ बनाया है, अपितु इसका परिणाम उन्नत ऋण जोखिम परिवेश के रूप में सामने आया है, जिसके फलस्वरूप वृद्धिशील अनर्जक आस्तियों में तेज़ी से गिरावट आई है। बैंक ज़ोरदार स्थूल आर्थिक परिवेश तथा केंद्रीय सरकार और रिज़र्व बैंक द्वारा लागू किए गए विविध प्रकार के संस्थागत उपायों से प्रोत्साहित होकर अपनी अतिदेय राशियों की वसूली करने में भी समर्थ हुए हैं। इन कारकों ने बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता और उत्पादकता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

9.100 ऐसा लगता है कि बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता और उत्पादकता को बढ़ाने में प्रौद्योगिकी के अधिकाधिक प्रयोग ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1997-98 के बाद हुई प्रगति का प्रत्यक्ष पता कतिपय उन प्रौद्योगिक परिवर्तनों से लग जाता है, जो निरंतर आधार पर हुए हैं। इनमें भुगतान और निपटान प्रणालियों, ग्राहक सेवा, आंतरिक नियंत्रण और लेखा-परीक्षा का समावेश है। माइकर चेक समाशोधन प्रणाली से शुरुआत करते हुए भारतीय खुदरा भुगतान प्रणाली को सुधारों की अवधि के दौरान इलेक्ट्रॉनिक निधि अंतरण, इलेक्ट्रॉनिक समाशोधन प्रणाली, विशेष इलेक्ट्रॉनिक निधि अंतरण तथा उन कार्ड-आधारित प्रणालियों की शुरुआत, जिसने बैंकिंग परिचालनों में कार्य-कुशलता के स्तरों को अत्यधिक प्रभावी रूप से बढ़ा दिया है, जैसी प्रौद्योगिकीय रूप से समुन्नत और सुरक्षित प्रणालियों के प्रवर्तन के फलस्वरूप महत्त्वपूर्ण प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। तत्काल सकल भुगतान प्रणाली के प्रवर्तन ने बैंकों द्वारा किए जानेवाले नकदी प्रबंधन में सुधार लाने में सहायता की है। प्रौद्योगिकी द्वारा प्रेरित एक अन्य किफायती पहलकदमी थी - एटीएम, साझा एटीएम नेटवर्कों, स्मार्ट कार्डों, भण्डारित मूल्य कार्डों,फोन बैंकिंग और अंततः इंटरनेट और इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से आभासी बैंकिंग की शुरुआत। इन सेवाओं ने स्टाफ़ और शाखा की आधारभूत सुविधा पर होनेवाले खर्चों में कमी ला दी और प्रयुक्त प्रति इकाई निविष्टि पर लेन-देनों के परिमाण को भी बढ़ा दिया। रिज़र्व बैंक ने वित्तीय क्षेत्र को एक विश्वसनीय संचार आधार-स्तंभ उपलब्ध कराने हेतु वेरी स्माल अपर्चर टर्मिनल (वीसैट) नेटवर्क को भी प्रवर्तित कर दिया है। बैंकिंग क्षेत्र के भीतर कनेक्टिविटी को सुगम बनाने के लिए रिज़र्व बैंक, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और बैंकिंग प्रौद्योगिकी में विकास और अनुसंधान संस्थान(आइडीआरबीटी) ने सामूहिक रूप से संचार उपग्रह के आधार पर भारतीय वित्तीय नेटवर्क (INFINET) की स्थापना की। इस समय इनफिनेट को उस बहु-संलेख परत स्विचिंग प्रौद्योगिकी को स्थानांतरित किया जा रहा है, जो परिचालन में सुविधा के अलावा बड़े पैमाने वाली किफायत उपलब्ध कराती है। इस प्रकार के प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों के परिणामस्वरूप बैंकों के उत्पादन सीमांत में बहिर्मुखी बदलाव आ गया।

9.101 जहां तक बैंक समूहों का संबंध है, स्टेट बैंक समूह और राष्ट्रीयकृत बैंकों में प्रौद्योगिकी को विदेशी और निजी क्षेत्र के नए बैंकों की तुलना में काफी समय बाद अंगीकृत किया गया । इसलिए, जहां विदेशी बैंक अधिकांशतः भारतीय बैंकिंग प्रणाली के महान प्रौद्योगिकीय सीमांत को परिभाषित कर रहे थे, वहीं सार्वजनिक क्षेत्र के और राष्ट्रीयकृत बैंकों ने प्रतिस्पर्धात्मक बने रहने के लिए उक्त सीमांत का गहनतापूर्वक अनुसरण किया। कई एक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने उनकी शाखाओं को भी कंप्यूटरीकृत कर दिया तथा कोर बैंकिंग सॉल्यूशन लागू कर दिया। यद्यपि, प्रारंभिक वर्षों में इसने लागत को बढ़ा दिया, हालांकि आगे चलकर इसके परिणामस्वरूप यह लगने लगा कि इससे परिचालन लागत में कमी हो गई है और उत्तरवर्ती वर्षों में कार्य-कुशलता में भी सुधार होने लगा। आइसीआइसीआइ बैंक और एचडीएफसी बैंक जैसे निजी क्षेत्र के नये बैंक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश सहायता पाकर उनकी पहुंच प्रौद्योगिकी के सीमांतों तक बना लेने के कारण अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में थे।

9.102 भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में सुधारोत्तर अवधि के दौरान कतिपय विलयन और अभिग्रहण भी परिलक्षित हुए। इसके परिणामस्वरूप, विलयित संस्थाएं आकार की दृष्टि से बड़ी तथा बड़े पैमाने पर किफायतों का लाभ उठाने में समर्थ हो गई हैं। बैंकिंग व्यवसाय का विविधीकरण एक ऐसा अन्य कारक रहा है, जिसने वर्धित कार्य-कुशलता में योगदान किया है। आय के विविधीकरण में निहित एक महत्त्वपूर्ण तत्व था - 2001-02 से लेकर 2003-04 के दौरान खजाना परिचालनों से अर्जित व्यापारिक लाभ।

9.103 बचत जमाराशियों, 2 लाख रुपए तक के ऋणों और निर्यात ऋण को छोड़कर सभी प्रकार की ब्याज दरों को अविनियमित कर दिया गया है। ब्याज दरों के अविनियमन ने बैंकों को उत्पादों का मूल्य-निर्धारण उनमें निहित जोखिम एवं प्रतिलाभ के अवबोध को ध्यान में रखते हुए करने में समर्थ बना दिया है। इसने बैंकों को नवोन्मेषी जमा उत्पादों का शुभारंभ करने में भी समर्थ बना दिया है। 1990 वाले दशक के उत्तरार्ध और वर्तमान दशक के प्रारंभिक भाग में आरक्षित नकदी निधि अनुपात (सीआरआर) और आरक्षित चलनिधि अनुपात (एसएलआर) के रूप में सांविधिक पूर्व-क्रयों में की गई महत्त्वपूर्ण कटौतियों ने बैंकों के संसाधनों को बाज़ार में अभिनियोजित[9] किए जाने हेतु मुक्त कर दिया। इसके अलावा, सरकारी प्रतिभूतियों के मामले में नीलामी प्रणाली की शुरुआत ने भी बैंकों को उनके सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) निवेशों पर बाज़ार से संबद्ध ब्याज दरें अर्जित करने में समर्थ बना दिया। इन छूटों ने

9 आरक्षित नकदी निधि अनुपात सितंबर 2004 से आरंभ कर के क्रमिक रूप से चरणों में बढ़ाया गया। इनका बैंकों के मार्जिन पर कुछ-न-कुछ प्रभाव पड़ा होगा।

बैंकों को व्यवसाय के अधिक लाभदायक अवसरों की तलाश करने की सुविधा प्रदान की। तीव्र आर्थिक वृद्धि तथा ऋण बाज़ार के अविनियमन के फलस्वरूप आवास ऋणों, वाहन (ऑटो) ऋणों, शैक्षणिक ऋणों जैसे ऋण के नए स्रोतों का बड़े पैमाने पर विकास हुआ है तथा बैंक अपने खुदरा ऋण संविभाग को महत्त्वपूर्ण रूप से विस्तारित करने में समर्थ हुए हैं। चूंकि खुदरा ऋणों पर परंपरागत ऋणों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक ब्याज दर प्राप्त होती है, बैंक अपनी निवल ब्याजगत आय को बढ़ाने और अपने लाभों को सहारा देने में भी समर्थ हुए हैं।

9.104 बैंकों की कार्य-कुशलता पर आस्तियों और देयताओं के ढांचे का भी प्रभाव पड़ता है। बैंकों की सभी देयताओं की लागत एक ही नहीं होती। मध्यावधिक और दीर्घावधिक देयताओं की अपेक्षा अल्पावधिक देयताएं कम खर्चीली होती हैं। अल्पावधिक देयताओं की तुलना में मध्यावधिक से दीर्घावधिक देयताएं ब्याज दर के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। जैसी कि अध्याय IV में चर्चा की गई है, कुल जमाराशियों में अल्पावधिक जमाराशियां (1 वर्ष से कम की परिपक्वता अवधि वाली) 1990 के 13 प्रतिशत के स्तर से क्रमिक रूप से बढ़कर 2006 तक 40 प्रतिशत हो गईं। आस्ति पक्ष में, बैंक अब न केवल कार्यशील पूंजी वित्त हेतु ही, अपितु मध्यम और दीर्घ अवधि के उद्देश्यों के लिए भी ऋण प्रदान करते हैं, कुल ऋणों में मध्यम और दीर्घ अवधि वाले ऋणों का अंश मार्च 1995 के अंत में 17.4 प्रतिशत से बढ़कर मार्च 2007 के अंत में 53.9 प्रतिशत हो गया। बैंक जिस सीमा तक मध्यम और दीर्घ अवधि वाले ऋण प्रदान करते हैं, उन्हें उस सीमा तक नकदी प्रबंधन का दायित्व नहीं वहन करना होता, जिससे वित्तीय और प्रशासनिक, दोनों ही प्रकार की लागतें अपरिहार्य होती हैं। मध्यम और दीर्घ अवधि वाले ऋण अल्पावधिक कार्यशील पूंजी वित्त की तुलना में अधिक खर्चीले होते हैं अर्थात वे बैंकों के लिए अधिक लाभदायक होते हैं। इस प्रकार एक ओर देयताओं की परिपक्वता पर होनेवाले लाभों में कमी कर दिए जाने और दूसरी ओर आस्तियों की प्रोफाइल को बढ़ा दिए जाने के कारण बैंक अपनी लाभप्रदता में सुधार लाने में समर्थ हुए हैं। इसका आस्ति देयता प्रबंधन की दृष्टि से निहितार्थ हो सकता है और बैंकों को जोखिम और प्रतिलाभ के बीच तालमेल बिठाना पड़ सकता है। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में यह देखने में आया है कि वे बैंक जिनका परिचालन अच्छा होता है, वे जोखिम प्रबंधन में भी अच्छे होते हैं। अतएव, यह माना जाता है कि बढ़ी हुई कार्य कुशलता जोखिम प्रबंधन की कीमत पर नहीं है।

9.105 विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के कार्य-निष्पादन में आया सुधार बैंकिंग क्षेत्र को आए समग्र सुधार में एक महत्त्वपूर्ण कारक रहा है। जुलाई 1994 में बैंककारी कंपनी (उपक्रमों का अभिग्रहण और अंतरण) अधिनियम, 1970/1980 को संशोधित किए जाने के बाद सार्वजनिक क्षेत्र के प्रायः सभी बैंक सार्वजनिक हो गए हैं और उन्होंने बाज़ार से पूंजी जुटाई है। इसके पूर्व, आंशिक निजी शेयरधारिता के लिए प्रावधान के विषय-क्षेत्र को बढ़ाने हेतु अक्तूबर 1993 में एक अध्यादेश प्रख्यापित करते हुए भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआइ) अधिनियम, 1955 को संशोधित किया गया था। इसस न केवल उनका पूंजीगत ढांचा सुदृढ़ हुआ[10], अपितु उन्हें बाज़ार अनुशासन के अधीन ला दिया गया, जिसने उन्हें उनकी कार्य-कुशलता में सुधार लाने हेतु प्रोत्साहित किया। जैसाकि इसके पूर्व उल्लेख किया गया है, अच्छी तरह पूंजीकृत और सार्वजनिक रूप से क्रय-विक्रय करने वाले बैंक अधिक कार्य-कुशल होते हैं। 1990 वाले दशक के प्रारंभिक दिनों में विवेकसम्मत मानदंडों को लागू किए जाने के बाद, सार्वजनिक क्षेत्र के बारह बैंकों (कुल मिलाकर 14) ने हानि दर्ज करने की रिपोर्टिंग की। हालांकि, 1999-2000 तक, सभी हानि वहन करने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक लाभार्जन की स्थिति में वापस आने में समर्थ हो गए। इससे एक समूह के रूप में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की समग्र कार्य-कुशलता में सुधार लाने में सहायता प्राप्त हुई। 15 नवंबर 2000 और 31 मार्च 2001 के बीच की अवधि में कॉरपोरेशन बैंक को छोड़कर सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों ने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना लागू की। मार्च 2001 के पहले लगभग 12 प्रतिशत कर्मचारियों ने उक्त प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इसने बैंकों को श्रम बल को युक्तियुक्त बनाने में समर्थ बनाया। जिसका सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की उत्पादकता पर महत्त्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव हुआ।

9.106 पिछले वर्षों में कॉरपोरेट आय कर दरें भी महत्त्वपूर्ण रूप से कम कर दी गई हैं, जिसके परिणामस्वरूप बैंकिंग क्षेत्र की समग्र लाभप्रदता में सुधार हुआ।

9.107 कुल मिलाकर, कतिपय सुव्यक्त और कुछ आकस्मिक कारकों के संगम ने बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता और उत्पादकता बढ़ाने में योगदान किया।

VII. भावी दिशा

9.108 पिछले खंडों में किए गए विश्लेषण से यह पता चलता है कि पिछले वर्षों में समग्र रूप से बैंकिंग क्षेत्र और विविध बैंक समूहों की कार्य-कुशलता/उत्पादकता में महत्त्वपूर्ण रूप से सुधार आया है। हालांकि, और अधिक सुधार लाए जाने की पर्याप्त गुंजाइश मौजूद है। कुछ ऐसे क्षेत्र, जिन पर बैंकों द्वारा ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, इसके नीचे वर्णित किए गए हैं।

मध्यस्थता लागत में कमी लाए जाने की आवश्यकता

9.109 भारत में बैंकिंग क्षेत्र की मध्यस्थता लागत में महत्त्वपूर्ण से कमी आई है, जिससे बढ़ते प्रतिस्पर्धात्मक दबाव का पता चलता है। हालांकि, भारत में सामान्य रूप से बैंकों की मध्यस्थता अन्य देशों की बैंकिंग प्रणालियों की तुलना में अब भी अधिक है। जहां सभी बैंक समूहों की मध्यस्थता लागत अधिक थी, वहीं विदेशी बैंक[11] समूह के मामले में यह विशेष रूप

10 सुधारों के प्रारंभिक चरण में सरकार द्वारा कुछ बैंकों को पुनः पूंजीकृत किया गया था।

11 विदेशी बैंकों के मामले में अपेक्षाकृत अधिक निवल ब्याज मार्जिन उनके चालू खातों के विशाल अनुपात का परिणाम था, जिसने इन बैंकों को अल्प लागत वाली जमाराशियां जुटाने में समर्थ बनाया।

से अधिक थी। अधिक मध्यस्थता लागत निवेश के स्तर को प्रभावित कर सकती है तथा वृद्धि को अवरुद्ध कर सकती है। अधिक मध्यस्थता लागत के परिणामस्वरूप संसाधनों का गलत आबंटन भी हो सकता है, क्योंकि बढ़ी हुई लागत की भरपाई करने के लिए उधारकर्ता अधिक जोखिमपूर्ण परियोजनाओं का चयन कर सकता है, जिनकी परिणति अंततः बैंकिंग क्षेत्र के लिए अनर्जक आस्तियों में हो सकती है। इस प्रकार, अधिक मध्यस्थता लागत बैंकिंग क्षेत्र और अर्थव्यवस्था, दोनों ही को प्रभावित करती है। अतएव बैंकों द्वारा मध्यस्थता लागत को और घटाकर वैश्विक स्तरों पर लाने हेतु निरंतर प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

परिचालन लागत में कमी किए जाने की आवश्यकता

9.110 अधिक मध्यस्थता लागत का एक महत्त्वपूर्ण कारण है अधिक परिचालन लागत। यद्यपि बैंक परिचालन लागत को कम करने में समर्थ हुए हैं, तथापि सभी बैंक समूहों के मामले में आय के अनुपात की तुलना में परिचालन लागत अब भी अंतरराष्ट्रीय उत्तम प्रथा के अनुरूप नहीं है। सभी बैंक समूहों की आय के अनुपात की तुलना में लागत 40 प्रतिशत की सर्वोत्तम प्रथा मानदंड की तुलना में अधिक थी (घोष सी.आर, 2004)। विदेशी बैंक समूह के मामले में आय की तुलना में लागत का सबसे कम अनुपात 45 प्रतिशत था, जबकि अन्य सभी बैंक समूहों का अनुपात 50 प्रतिशत से अधिक था। मध्यस्थता लागत में कमी लाने और तब भी लाभप्रदता को बनाए रखने के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि बैंक परिचालन लागतों में कमी लाएं। प्रौद्योगिकी न केवल परिचालन लागत में कमी लाने में, अपितु उत्पादकता बढ़ाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अतः, बैंकों द्वारा प्रौद्योगिकी को श्रमिक उत्पादकता बढ़ाने और आगे चलकर परिचालन लागत में कमी लाने, दोनों ही दृष्टिकोणों के साथ देखे जाने की आवश्यकता है। स्टेट बैंक समूह की लगभग 15 प्रतिशत शाखाओं और राष्ट्रीयकृत बैंकों की 20 प्रतिशत को कंप्यूटरीकृत किया जाना अब भी शेष है। इसे जोरदार ढंग से आगे बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा शेष शाखाओं के कंप्यूटरीकरण का कार्य पूरा कर लिए जाने तथा कोर बैंकिंग सोल्यूशनों को कार्यान्वित कर दिए जाने पर गैर-श्रमिक लागतों में प्रारंभिक तौर पर वृद्धि होने की संभावना है। हालांकि, आगे चल कर इसे परिचालन लागत में कमी लाने में सहायक होना चाहिए।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में श्रमिक उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता

9.111 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के मामले में परिचालन लागत के अधिक होने का एक महत्त्वपूर्ण कारण है कम श्रमिक उत्पादकता। यद्यपि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में श्रमिक उत्पादकता में वृद्धि हुई है, तथापि वह विदेशी बैंकों और निजी क्षेत्र के नए बैंकों की तुलना में निरंतर कम बनी हुई है। अतः सरकारी क्षेत्र के बैंकों द्वारा श्रमिक उत्पादकता के विविध पहलुओं पर विचार किए जाने तथा इसमें और अधिक वृद्धि किए जाने के लिए आवश्यक उपाय किए जाने की आवश्यकता है। बैंकिंग अब एक अत्यंत जटिल कारोबार बन गया है और प्रतिस्पर्धा में अपना अस्तित्व बचाए रखने के उद्देश्य से बैंकों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे नए उत्पादों की शुरुआत करें। जोखिम प्रबंधन भी अधिकाधिक रूप से जटिल होता जा रहा है। इस प्रकार मानव संसाधन कौशलों का विकास महत्त्वपूर्ण हो जाता है और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा उनके कर्मचारियों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं पर अधिक से अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। एक अन्य, कारक, जिस पर तुरंत ध्यान दिया जाना आवश्यक है, वह है सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में वेतन ढांचा। वर्तमान में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में वेतन ढांचा उद्योग स्तर पर निर्धारित किया जाता है, किसी बैंक की भुगतान करने की क्षमता और उसकी कार्य-कुशलता का स्तर चाहे जैसा भी क्यों न हो। इस पर विचार किए जाने की आवश्यकता है।

आय के गैर-ब्याजगत स्रोतों को बढ़ाए जाने की आवश्यकता

9.112 बैंकों की आय का मुख्य स्रोत निवल ब्याजगत आय होती है, जो अर्जन को स्थिरता प्रदान करती है। हालांकि, आय के गैर-ब्याजगत स्रोत अर्जन को स्थिर रखने में सहायता कर सकते हैं। यह स्थिति विशेष रूप से तब निर्मित हो जाती है, जब आय के गैर-ब्याजगत स्रोत के क्रियाकलाप और मुख्य क्रियाकलाप नकारात्मक रूप से सह-संबद्ध होते हैं। इस समय, बैंकों की आय के गैर-ब्याजगत स्रोतों में उनकी कुल आय का एक बहुत ही छोटा सा भाग शामिल होता है। यह स्थिति विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में दिखाई देती है, क्योंकि 2006-07 में उनकी गैर-ब्याजगत आय कमोबेश 1991-92 वाले स्तर के जितनी ही थी, यद्यपि, ऐसी अवधियां (2001-02 से लेकर 2003-04 तक) भी थीं, जिनमें गैर-ब्याजगत आय का अनुपात मुख्यतः सरकारी प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय से हुए लाभों के कारण महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़ गया था। चूंकि भविष्य में निवल ब्याजगत आय मार्जिनों पर और अधिक दबाव पड़ने की आशा है, बैंकों द्वारा उनकी लाभप्रदता को बनाए रखे जाने के लिए अपेक्षाकृत नए गैर-ब्याजगत आय के स्रोत तलाशे जाने की आवश्यकता है।

समग्र कार्य-कुशलता और उत्पादकता में और अधिक सुधार लाए जाने की आवश्यकता

9.113 आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (डीईए) अनुमानों से कार्य-कुशलता अंक के 1992 के 0.42 से बढ़कर 2007 में 0.71 हो जाने के (अधिकतम प्राप्य कार्य-कुशलता स्तर 1.0 होने पर) के फलस्वरूप बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता के स्तर में पर्याप्त सुधार होने का पता चलता हैं। इस बात के भी प्रमाण मौजूद हैं कि सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंक क्रमिक रूप से अपने अधिक कार्य-कुशल सहवर्तियों (बैंकों) के स्तर तक पहुंच रहे हैं। हालांकि, बैंकिंग क्षेत्र अब भी कार्य-कुशलता के सीमांत से पीछे हैं तथा आउटपुट के वर्तमान स्तर तक का निर्माण करने हेतु इनपुट में 29 प्रतिशत तक की बचत लाने की गुंजाइश मौजूद है। अलग-अलग बैंक के स्तर पर कार्य-कुशलता के अंकों/स्तरों में पर्याप्त भिन्नता हैं, जो 0.38 के न्यूनतम स्तर से लेकर 1.0 के अधिकतम स्तर की श्रेणी में हैं। 81 बैंकों में से केवल 17 बैंक ही कार्य-कुशलता के सीमांत पर थे, जबकि

अन्य सभी बैंक कार्य-कुशलता के सीमांत से कम स्तर पर थे। इनमें से 22 बैंकों ने उनके व्यवहार्य कार्य-कुशलता स्तर के दो-तिहाई से परिचालन किया, जबकि चार बैंकों ने उद्योग के सर्वाधिक कार्य-कुशल बैंकों के स्तर के आधे से भी कम स्तर से परिचालन किया। ये बैंक निजी और विदेशी बैंक खंड में हैं। आवश्यकता है उनकी कम कार्य-कुशलता के अंतर्निहित कारणों की पहचान करते हुए उन सभी बैंकों की कार्य-कुशलता में सुधार लाने की, जो कार्य-कुशलता सीमांत से बहुत दूर है।

9.114 कार्य-कुशलता के बढ़ते स्तर के साथ ही उत्पादकता में प्रभावशाली वृद्धि भी दर्ज हुई। बैंकिंग क्षेत्र की उत्पादकता में 1991-92 से लेकर 2006-07 तक की अवधि के बीच में 40 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई, जिसमें से निजी क्षेत्र के बैंकों के मामलों में यह वृद्धि अधिक मुखरित थी। हालांकि, सामान्य रूप से उत्पादकता में हुई वृद्धि व्यापक तौर पर नवोन्मेष अथवा प्रौद्योगिकीय उन्नत्ति का परिणाम थी, तथापि इस बढ़ी हुई प्रौद्योगिकीय प्रगति को आत्मसात किए जाने में अधिकांश बैंक पीछे थे। इस बात को ध्यान में रखते हुए, वह प्रश्न जिसका पूछा जाना आवश्यक है, यह है कि क्या मात्र प्रौद्योगिकी की शक्ति पर सृजित उत्पादकता में वृद्धियां स्थिर स्वरूप वाली हैं। इसके लिए प्रक्रियाओं में उपयुक्त परिवर्तन लाए जाने तथा मानव संसाधन कौशलों पर ध्यान केंद्रित किये जाने की आवश्यकता है।

VIII. सारांश

9.115 बढ़ते वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्धा की दुनिया में, यह आवश्यक है कि वित्तीय संस्थाएं न केवल वैश्विक परंपराओं का पालन करें, अपितु यह भी कि वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक, कार्य-कुशल और वित्तीय रूप से सुदृढ़ हों। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भारत ने वित्तीय क्षेत्र के सुधारों की शुरुआत की, जिसका एक महत्त्वपूर्ण घटक बैंकिंग क्षेत्र था। ये सुधार अब डेढ़ दशक पुराने हो चुके हैं और जो प्रश्न पूछा जाना आवश्यक है वह यह है कि बैंकिंग क्षेत्र ने परिवर्तित परिचालनात्मक परिवेश के प्रति किस प्रकार का रवैया अपनाया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए इस अध्याय में भारत में बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-कुशलता, उत्पादकता और वित्तीय सुदृढ़ता का विस्तृत विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। सुधारोत्तर अवधि में समग्र बैंकिंग क्षेत्र के साथ-साथ विविध बैंक समूहों की कार्य-कुशलता, उत्पादकता और वित्तीय सुदृढ़ता के मानदंडों का मूल्यांकन करने पर बल दिया गया था। इसके अलावा, उक्त विश्लेषण में तीन विशिष्ट प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया गया है: (i) क्या निजी क्षेत्र के बैंक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों से अधिक कार्य-कुशल है? (ii) क्या बड़े आकार वाले बैंक छोटे बैंकों की अपेक्षा अधिक कार्य-कुशल हैं? (iii) क्या विविधीकृत संस्थाएं उन संस्थाओं से अधिक कार्य-कुशल हैं, जो अपने कार्य-क्षेत्रों में विशेषज्ञ हैं? उक्त विश्लेषण परंपरागत लेखांकन मापों (अनुपात विश्लेषण) और आर्थिक मापों का उपयोग करते हुए किया गया था।

9.116 लेखांकन मापों से यह पता चला कि सुधारोत्तर अवधि में बैंकिंग क्षेत्र की उत्पादकता/कार्य-कुशलता में चतुर्दिक सुधार हुआ। वित्तीय क्षेत्र के सुधारों की शुरुआत के समय अधिकांश कार्य-कुशलता अनुपातों की अत्यधिक उन्नत देशों और उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं के बैंकों के साथ अच्छे ढंग से तुलना नहीं हो पाती थी। सुधारों के प्रारंभिक वर्षों में बैंकिंग क्षेत्र, विशेषकर राष्ट्रीयकृत बैंकों, के कार्य-निष्पादन में गिरावट आ गई थी क्योंकि नए परिवेश के साथ सामंजस्य बिठाने में उन्हें समय लगा। हालांकि उसके बाद, विशेषतः 2001-02 की शुरुआत से सुस्पष्ट सुधार परिलक्षित होने लगे थे। फलतः कार्य-कुशलता/उत्पादकता और वित्तीय सुदृढ़ता से संबंधित विविध प्रकार के मानदंड बढ़कर वैश्विक स्तरों के निकट पहुंच गए। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सुधार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में दर्ज हुआ, जिसके फलस्वरूप विविध बैंक समूहों का अधिकांश मानदंडों के संबंध में कार्य-निष्पादन अब विदेशी बैंकों और निजी क्षेत्र के नए बैंकों के साथ अभिसरित हो गया।

9.117 सभी बैंक समूहों की मध्यस्थता लागत और उसके साथ ही निवल ब्याज मार्जिन में गिरावट आ गई। हालांकि इसके बावजूद बैंकिंग क्षेत्र की लाभप्रदता में सुधार आया। इस प्रकार, वह केवल अपेक्षाकृत अधिक ब्याज दर ही नहीं, अपितु अपेक्षाकृत वर्धित कार्य-कुशलता थी, जिसके फलस्वरूप लाभप्रदता में बढ़ोत्तरी हुई। जहां प्रतिस्पर्धात्मक दबावों ने बैंकों को उनके उत्पादों का बढ़िया मूल्य निर्धारण करने के लिए प्रेरित किया, वहीं जोरदार आर्थिक वृद्धि के फलस्वरूप वर्धित परिमाणों और 2002-03 से 2004-05 की अवधि में खजाना परिचालनों से हुए भारी व्यापारिक लाभों ने भी बैंकों को उनकी लाभप्रदता को बनाए रखने में समर्थ बनाया। प्रति कर्मचारी और प्रति शाखा कारोबार में सभी बैंक समूहों में महत्त्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई। इन सभी कारकों के परिणामस्वरूप सुधारोत्तर अवधि में आस्ति पर प्रतिलाभ और इक्विटी पर प्रतिलाभ बढ़ गया।

9.118 हालांकि, विविध प्रकार के लेखांकन मापों में सुधार में अलग-अलग बैंक समूहों में भिन्नता रही। लागत अनुपातों (आय की तुलना में परिचालन लागत) की दृष्टि से देशी बैंकों की तुलना में विदेशी बैंक अधिक कार्य-कुशल पाए गए। इसी प्रकार, श्रमिक उत्पादकता की दृष्टि से भी विदेशी और निजी क्षेत्र के नए बैंक अपने समकक्ष समूहों से आगे थे। सरकारी क्षेत्र के बैंकों में प्रति कर्मचारी कारोबार द्वारा प्रतिबिंबित श्रमिक उत्पादकता उद्योग के सर्वश्रेष्ठ कार्य-निष्पादकों, यथा विदेशी बैंकों और निजी क्षेत्र के नए बैंकों की लगभग आधी थी। इसके प्रत्यक्ष कारणों को लेन-देन के उस आकार में तलाशा जा सकता है, जो विदेशी और निजी क्षेत्र के बैंकों में महत्त्वपूर्ण रूप से बड़ा है, क्योंकि वे व्यापक तौर पर श्रेष्ठ (प्रीमियम) कंपनियों और अधिक निवल हैसियत वाले व्यक्तियों से व्यवहार करते हैं।

9.119 निवल ब्याज मार्जिनों और मध्यस्थता लागत की दृष्टि से क्रमशः निजी क्षेत्र के नए बैंक और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक अन्य बैंक समूहों की अपेक्षा अधिक कार्य-कुशल थे। उद्योग में विदेशी बैंकों की जमा लागत सबसे कम थी। हालांकि, इसका लाभ उधारकर्ताओं को नहीं दिया गया, जिसके फलस्वरूप निवल ब्याज अंतर अधिक था। अनुभवजन्य प्रयोग से यह पता चलता है कि निवल ब्याज मार्जिन को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक परिचालन लागत थी। गैर-ब्याजगत आय और आस्ति की गुणवत्ता निवल ब्याज मार्जिन के अन्य निर्धारक कारक थे।

9.120 आर्थिक मापों के आधार पर कार्य-कुशलता और उत्पादकता ने लेखांकन मापों अथवा वित्तीय अनुपातों की पुष्टि की। इसका तात्पर्य यह है कि 1991-92 से लेकर 2006-07 तक की अवधि हेतु बड़े सीमांत से मापे जाने पर सभी बैंक समूहों में कार्य-कुशलता में सुधार हुआ और कार्य-कुशलता में इन अभिलाभों में से अधिकांश सुधारों के कुछ वर्ष बाद अर्थात 1997-98 और उसके बाद उद्भूत हुए। उक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि भारतीय संदर्भ में स्वामित्व और कार्य-कुशलता के बीच कोई संबंध नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि अधिकांश कार्य-कुशल बैंक सभी तीनों खंडों, यथा सरकारी, निजी और विदेशी समूहों से थे। कार्य-कुशलता की दृष्टि से सबसे निचले स्तर पर रहने वाले 30 बैंकों में से अधिकांश निजी क्षेत्र से संबंधित हैं। हालांकि, इस साक्ष्य से यह पता चलता है कि आकार का कार्य-कुशलता से महत्त्वपूर्ण संबंध होता है। अर्थात बड़े बैंकों को अधिक कार्य-कुशल रूप में पाया गया। इसी प्रकार, विविधीकृत बैंक भी उतने अधिक विविधीकृत न हुए बैंकों की तुलना में अधिक कार्य-कुशल पाए गए। उक्त विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि अनर्जक आस्तियों की कार्य-कुशलता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। बैंकों में उत्पादकता में कई गुना बढ़ोत्तरी हुई, जो व्यापक तौर पर प्रौद्योगिकीय नवोन्मेषों और समर्थक नीतिगत परिवेश से प्रेरित थी। हालांकि, जहां कुछ देशी बैंक, विशेषतः सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के नए बैंक, वर्धित आउटपुट संभाव्यता प्राप्त करने में समर्थ हुए, वहीं कुछ देशी बैंक प्रौद्यागिकीय नवोन्मेषों से उद्भूत वर्धित आउटपुट संभाव्यता प्राप्त करने या उसका उपयोग करने में सफल नहीं हो पाए। कई एक ऐसे अंतर-संबद्ध कारक मौजूद हैं, जिन्होंने समर्थक नीतिगत परिवेश की पृष्ठभूमि में कार्य-कुशलता/उत्पादकता में वृद्धि को सुगम बनाया।

9.121 जोखिम भारित आस्ति की तुलना में पूंजी केअनुपात की दृष्टि से बैंकिंग क्षेत्र और उसके साथ ही सभी बैंकिंग समूहों की वित्तीय सुदृढ़ता में पिछले वर्षों में सुधार हुआ है। बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में भी महत्त्वपूर्ण सुधार हुआ है, जो अब वैश्विक स्तरों के करीब पहुंच गई है। दुर्भाग्य और घटिया प्रबंधन परिकल्पना, दोनों के साक्ष्य उपलब्ध कराते हुए उक्त विश्लेषण में यह दर्शाया गया है कि भारत में स्थूल आर्थिक कारकों के साथ-साथ प्रबंधन कौशल आस्ति की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं।

9.122 महत्त्वपूर्ण सुधारों के बावजूद, कुछ ऐसे क्षेत्र भी मौजूद हैं, जिन पर बैंकों द्वारा ध्यान दिया जाना आवश्यक है। भारत में मध्यस्थता लागत अब भी कई अन्य देशों के बैंकों की तुलना में अधिक है तथा बैंकों को इसे घटाकर वैश्विक स्तर पर लाने के प्रयास करने चाहिए। विशेष रूप से विदेशी बैंकों का निवल ब्याज मार्जिन अत्यधिक था। उनकी निधि लागत अन्य बैंक समूहों की अपेक्षा महत्त्वपूर्ण रूप से कम है। हालांकि, अल्प लागत का लाभ उधारकर्ताओं को नहीं प्रदान किया जा रहा है। भारत में बैंकों की अधिक मध्यस्थता लागत, काफी हद तक, अधिक परिचालन लागत के कारण थी। अतः, आवश्यकता इस बात की है कि अधिक परिचालन लागत में कमी लाई जाए। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए चिंता का एक क्षेत्र है प्रति कर्मचारी कारोबार, जो निजी क्षेत्र के नए बैंकों का लगभग आधा ही है। अतः, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को श्रमिक उत्पादकता में सुधार लाने तथा उसे निजी क्षेत्र के नए बैंकों के समकक्ष लाने हेतु प्रयास करने चाहिए। आय के गैर-ब्याजगत स्रोतों में भारत में बैंकों की कुल आय के एक बहुत ही छोटे अंश का समावेश होता है। भविष्य में, निवल ब्याज मार्जिनों के दबाव में आने की संभावना है। अतः, बैंकों द्वारा अपनी लाभप्रदता को टिकाए रखने के लिए आय के नए गैर-ब्याजगत स्रोतों की तलाश किए जाने की आवश्यकता है। यद्यपि कुल मिलाकर कार्य-कुशलता और उत्पादकता में सुधार हुआ है, तथापि यह कहने का साक्ष्य मौजूद है कि संसाधनों का उपयोग सर्वाधिक कुशल विधि से नहीं किया जा रहा है। इसका अभिप्राय यह है कि बैंक इनपुट के स्तर में महत्त्वपूर्ण रूप से कटौती करते हुए आउटपुट बढ़ा सकते हैं। कतिपय बैंकों ने सर्वाधिक कार्य-कुशल बैंकों के कार्य-कुशलता स्तर के तीन-चौथाई अंश पर ही परिचालन किया। अतः, सबसे कम कार्य-कुशल बैंकों की कार्य-कुशलता बढ़ाने के लिए अंतर्निहित कारणों की पहचान किए जाने पर विशेष रूप से ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। इसी प्रकार, कतिपय बैंकों द्वारा बैंकिंग क्षेत्र की उत्पादकता में और अधिक वृद्धि लाने के लिए वर्धित प्रौद्योगिकीय क्षमता (नवोन्मेष) का अधिक से अधिक उपयोग किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए प्रक्रियाओं में परिवर्तन और मानव संसाधन कौशलों में सुधार लाए जाने की आवश्यकता होगी।

9.123 भारत में बैंकिंग क्षेत्र के समक्ष भविष्य में उपस्थित होनेवाली चुनौती है मध्यस्थता लागत में कमी लाना और उसके साथ ही उच्च लाभप्रदता को बनाए रखना। इस लक्ष्य की प्राप्ति केवल कार्य-कुशलता में सुधार लाकर और आय के गैर-ब्याजगत स्रोतों का दोहन कर के ही हो सकती है। बैंकिंग क्षेत्र की अपेक्षाकृत अधिक कार्य-कुशलता और उत्पादकता के परिणामस्वरूप संसाधनों के आबंटन और वास्तविक अर्थव्यवस्था की वृद्धि की संभाव्यता को प्रचुर लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

परिशिष्ट IX.1

कार्य-कुशलता की लेखांकन बनाम आर्थिक माप

कार्य-कुशलता की लेखांकन माप

व्यावसायिक इकाइयों के कार्य-निष्पादन का मूल्यांकन करने हेतु वित्तीय प्रबंधक बारंबार अनुपात विश्लेषण का सहारा लेते हैं। बार-बार प्रयुक्त होने वाले कुछ अनुपात हैं: चलनिधि अनुपात, आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए), इक्विटी पर प्रतिलाभ (आरओई)। इन अनुपातों का परिकलन तुलन पत्र और लाभ एवं हानि विवरण/आय-व्यय विवरण की विविध मदों से किया जाता हैं। जहाँ वित्तीय प्रबंधन में इन अनुपातों को लेखांकन माप नहीं कहा जाता, वहीं उत्पादकता और कार्य-कुशलता का अनुमान लगाने से सम्बन्धित आर्थिक सामग्री में उन्हें लेखांकन माप ही कहा जाता है, क्योंकि ये अनुपात अनिवार्य रूप से वित्तीय विवरणों की कुछ लेखांकन प्रविष्टियों से परिकलित किए जाते हैं। ये अनुपात मुख्यतःआसानी से समझे जाने के कारण वित्तीय विश्लेषण, यहाँ तक कि आर्थिक साहित्य में भी काफी लोकप्रिय हैं, तथापि, यह स्वीकार किया जाना आवश्यक है कि ये अनुपात उत्पादकता के केवल सापेक्ष माप होते हैं तथा वे अधिक से अधिक व्यावसायिक इकाइयों की कार्य-कुशलता का केवल आंशिक रूप में ही संकेत दे सकते हैं। इसके अलावा, इन अनुपातों से लेखांकन संख्याओं पर आर्थिक महत्त्व को आरोपित करने के खतरे का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, उनमें लेखांकन पूर्वग्रहों का भी खतरा रहता है। इसका तात्पर्य यह है कि विभिन्न आर्थिक परिवेशों में मौजूद लेखांकन प्रथाएं और मानदंड महत्त्वपूर्ण रूप से भिन्न हो सकते हैं और इसलिए भिन्न-भिन्न आर्थिक परिवेशों में परिचालनरत दो व्यावसायिक इकाइयों से परिकलित अनुपातों के बीच तुलना आर्थिक निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती। तथापि, अनुपात विश्लेषण की लोकप्रियता तीन आधारों पर उद्भूत होती है। एक, जब तक लेखांकन सम्बन्धी पूर्वाग्रह वर्षों तक कमोबेश वही रहते हैं, अपरिष्कृत आंकड़ों और वित्तीय अनुपातों में विद्यमान प्रवृत्तियों की जांच करके सार्थक संदर्भ निकाले जा सकते हैं। दो, चूंकि उसी उद्योग की विविध फर्मों में एक जैसे ही पूर्वाग्रह मौजूद रहते हैं, अन्तर-फर्म तुलना उपयोगी होती है। तीन, अनुभव यह सुझाते हैं कि वित्तीय विश्लेषण केवल तभी 'उपयोगी' होता है, जब हम लेखांकन पूर्वाग्रहों से अवगत होते हैं और उसके लिए समायोजन करते हैं (चन्द्रा 2004)। इसके अलावा, उनकी लोकप्रियता इस तथ्य से भी उद्भूत होती है कि सम्पूर्ण विश्व की अधिकांश पर्यवेक्षी प्रणालियों में इन अनुपातों के आधार विनियामक ढांचे लागू किए गए हैं (जैसे कि कैमेल्स श्रेणी-निर्धारण)। इसके अलावा, कॉक्स आंशिक संकट मॉडल के बैंकों तक विस्तार जैसे कुछ मानदंडीय और अर्ध-मानदंडीय अस्तित्व मॉडलों में भी पश्चगमन आउटपुट का अनुमान लगाने हेतु इन वित्तीय अनुपातों का उपयोग किया जाता है। चूंकि लेखांकन मापों से बैंकों की उत्पादकता और कार्य-कुशलता को स्पष्ट रूप से मापना कठिन होता है, पिछले वर्षों में इस प्रकार की वैकल्पिक तकनीकें विकसित हो गई हैं, जो किसी बैंकिंग इकाई की कुल उपादान उत्पादकता को परिकलित कर लेती हैं।

कार्य-कुशलता की आर्थिक माप

कार्य-कुशलता का आधुनिक माप फैरेल (1957) से आरंभ होता है, जिसने किसी फर्म की कार्य-कुशलता की उस सामान्य माप को परिभाषित करने के लिए डेब्रू (1951) और कूपमैन (1951) के कार्य को आगे बढ़ाया, जो बहुविध इनपुटों का हिसाब रख सकता है। फैरेल ने यह प्रस्तावित किया कि किसी फर्म की कार्य-कुशलता में दो संघटक शामिल होते हैं, यथा - तकनीकी कार्य-कुशलता, जो किसी फर्म की इनपुट की एक निश्चित मात्रा से अधिकतम आउटपुट प्राप्त करने की योग्यता को घोषित करती है और निर्धारक कार्य-कुशलता, जो किसी फर्म की इनपुटों को उनके सम्बन्धित मूल्यों को ध्यान में रखते हुए इष्टतम अनुपात में उपयोग करने की योग्यता को द्योतित करती है। इसके बाद इन दोनों मापों को आर्थिक कार्य-कुशलता का एक माप उपलब्ध कराने हेतु मिला दिया जाता है। पुनः आर्थिक कार्य-कुशलता में दो परिवर्तियों का समावेश होता है यथा - लागतपरक कार्य-कुशलता और राजस्वगत कार्य-कुशलता। लागतपरक कार्य-कुशलता का अनुमान 'इनपुट उन्मुख दृष्टिकोण' के माध्यम से लगाया जाता है, जिसमें लागत को न्यूनतम कर दिया जाता है, जबकि राजस्वगत कार्यकुशलता 'आउटपुट उन्मुख दृष्टिकोण' का अनुसरण करती है और उसका उद्देश्य राजस्व को अधिकतम करना होता है।

आउटपुट-उन्मुख तकनीकी कार्य-कुशलता: इनपुट समूह को ध्यान में रखते हुए उसी इनपुट समूह से निर्माण किया जाने वाला अधिकतम आउटपुट आउटपुट-उन्मुख तकनीकी कार्य-कुशलता की माप करता है। मान लें कि φ^* इस रू प में φ कम अधिकतम मूल्य है कि $(xt, \varphi yt)$प्रौद्योगिकी सेट में निहित है। तो $y^* = \varphi^* yt$ और फर्म t की आउटपुट उन्मुख तकनीकी कार्य-कुशलता $TEt = TE(xt, yt) = 1/\varphi^*$है। तकनीकी कार्य-कुशलता का आउटपुट उन्मुख माप निम्नानुसार प्राप्त किया जाता है:

$\varphi* = \max \varphi$

s.t $\Sigma\lambda j\, yj \geq \varphi y;\ \Sigma\lambda jxj \leq x;\ \Sigma\lambda j = 1;\ \lambda j \geq 0;\ (j = 1,2, \ldots\ldots\ldots\ldots N)$

इनपुट-उन्मुख तकनीकी कार्य-कुशलता: इसके तहत फर्म के आउटपुट के समूह को कोई सौंपा गया कार्य माना जा सकता है तथा फर्म की कार्य-कुशलता का निर्धारण आउटपुट में कमी किए बिना उसके समस्त इनपुटों में अधिकतम समानुपातिक कटौती करते हुए किया जाता है। इसे निम्नानुसार मापा जाता है:

s.t $\Sigma\lambda j\, yj \geq y;\ \Sigma\lambda jxj \leq \theta x;\ \Sigma\lambda j = 1;\ \lambda j \geq 0;\ (j = 1,2, \ldots\ldots\ldots\ldots N)$

लागतपरक कार्य-कुशलता: इनपुट उन्मुख तकनीकी कार्य-कुशलता को मापने में सभी इनपुटों को समान माना जाता है और उद्देश्य सभी इनपुटों में उतनी ही मात्रा में कटौती करना होता है। यदि कुछ इनपुट एक बिन्दु से अधिक की सीमा तक गैर-प्रतिस्थापनीय हो जाते हैं अर्थात् वह इनपुट बाध्यकर हो जाता है तो किसी अन्य इनपुट में और कमी व्यवहार्य नहीं होती। किन्तु जब इनपुट के मूल्य उपलब्ध होते हैं, तो अधिक मंहगे इनपुट को कम करने के कार्य को कम महंगे इनपुटों को कम करने की अपेक्षा अधिक प्राथमिकता प्राप्त हो जाती है। दूसरे शब्दों में, लागतपरक कार्य-कुशलता किसी बैंकिंग फर्म के लागतपरक कार्य-निष्पादन को उस बैंक की सर्वोत्तम प्रथा (अल्पतम लागत) के अनुपात में मापती है, जो उतने ही आउटपुट का निर्माण बहिर्जात स्थितियों में करता है। इसलिए इस मामले में वस्तुपरक कार्य लक्ष्यांकित आउटपुट समूह की लागत को न्यूनतम रखना हो जाता है।

$C^* = \min w'x$

s.t $\Sigma\lambda j\, yj \geq y;\ \Sigma\lambda jxj \leq x;\ \Sigma\lambda j = 1;\ \lambda j \geq 0;\ (j = 1,2, \ldots\ldots\ldots\ldots N)$

राजस्वगत कार्य-कुशलता: आउटपुट उन्मुख कार्य-कुशलता की माप में उद्देश्य वृद्धि की उस अधिकतम दर को ज्ञात करना होता है, जो सभी आउटपुटों के लिए व्यवहार्य हो। किन्तु जैसा कि इनपुटों के मामले में होता है, आउटपुट के मूल्य उपलब्ध होने पर कुछ आउटपुट अन्यों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान होते हैं।

विविध प्रकार के कार्य-कुशलता मापों का मोटे तौर पर दो प्रकार के दृष्टिकोणों से अनुमान लगाया जा सकता है - ये हैं मानदंडीय और गैर-मानदंडीय दृष्टिकोण।

मानदंडीय: सर्वोत्तम प्रथा सीमांत का अनुमान लगाने के लिए इसके नीचे यथावर्णित तीन मुख्य मानदंडीय दृष्टिकोण होते हैं:

I) **अनुमान पर आधारित (स्टॉकॅस्टिक) सीमांत दृष्टिकोण:** इस दृष्टिकोण में सर्वाधिक कार्य-कुशल उत्पादकों के लागत, लाभ अथवा उत्पादन कार्यों का अनुमान लगाया जाता है और सीमांत से किसी संस्था के विचलन में दो

घटकों का समावेश होता है - एक यादृच्छिक चूक और एक अकुशलता शर्त। चूक वाली शर्त का अंश, जो सीमांत से विचलनों का निरुपण करता है, दुतरफा वितरण से लिया गया माना जाता है, जबकि अकुशलता एकतरफा वितरण से ली गई मानी जाती है, क्योंकि अकुशलता लागत को बढ़ा देती है। अतः अनुमान पर आधारित (स्टॉकैस्टिक) सीमांत दृष्टिकोण का अनुमान विभिन्न खंडों के आंकड़ों का उपयोग करते हुए लगाया जा सकता है।

ii) ***वितरण रहित दृष्टिकोण:*** इस दृष्टिकोण में कार्य-कुशलता में अंतरों को कुछ समय से स्थिर माना जाता है, किन्तु इसके लिए किसी विशिष्ट वितरणपरक मान्यता की आवश्यकता नहीं होती (गोड्डार्ड, मौलीन्यूक्स और विजन; विली 2001) । प्रत्येक फर्म की अकुशलता का अनुमान उसके औसत अवशिष्ट और सीमांत पर कार्यरत फर्म के औसत अवशिष्ट के बीच का अंतर होता है, जिसमें यादृच्छिक घटक शून्य का औसत न होने का हिसाब रखने हेतु कुछ काट-छाँट की जाती है।

iii) ***स्थूल सीमांत दृष्टिकोण:*** स्थूल सीमांत दृष्टिकोण (TFA) की मान्यता यह होती है कि एक आकार वर्ग वाले बैंकों की अल्पतम औसत-लागत चतुर्थक के भीतर पूर्वानुमानित लागतों से विचलन यादृच्छिक त्रुटि का निरूपण करते हैं। सर्वाधिक और सबसे कम चतुर्थक के बीच पूर्वानुमानित लागतों में विचलन उत्पादक अकुशलताओं का निरूपण करते हैं (गोड्डार्ड, मॉलिन्यूक्स और विजन; विली, 2001)। यह दृष्टिकोण न तो अकुशलताओं और न ही यादृच्छिक त्रुटि पर किसी प्रकार की वितरणपरक धारणा थोपता हैं। स्थूल सीमांत दृष्टिकोण (TFA) स्वयं अलग-अलग फर्मों की कार्य-कुशलता के सटीक बिन्दु वाले अनुमान नहीं उपलब्ध कराता, किन्तु वह कार्य-कुशलता के समग्र स्तर का अनुमान अवश्य उपलब्ध कराता है।

गैर-मानदंडीय: मुख्य गैर-मानदंडीय दृष्टिकोण हैं-आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (DEA) और मुक्त निपटान आवरण (FDH)। आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण में प्रेक्षित डाटा से एक सर्वोत्तम प्रथा सीमांत निर्मित करने हेतु तथा उस निर्मित सीमांत से सम्बन्धित कार्य-कुशलता को मापने के लिए गणितीय योजना का उपयोग किया जाता है। आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (DEA) को सर्वोत्तम प्रथा उत्पादन सीमांत की पहचान करने हेतु आउटपुट अथवा उसके मूल्यों की आवश्यकता नहीं होती। सर्वोत्तम प्रथा सीमांत की पहचान इस नग-वार रैखिक संयोजन के रूप में की गई है, जो इनपुटों और आउटपुटों के विनिर्देशनों को ध्यान में रखते हुए सर्वोत्तम प्रथा प्रेक्षणों के सेट को जोड़ता है। इसका परिणाम आउटपुट उन्मुख आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (DEA) हेतु एक उत्तल उत्पादन सीमांत निर्मित करने और इनपुट उन्मुख आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (DEA) हेतु अवतल उत्पादन सीमांत उत्पन्न करने के रूप में सामने आता है (बर्जर और हम्फ्री, 1997)। फलतः किसी निर्णयकर्ता इकाई (DMU) के लिए आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (DEA) के कार्य-कुशलता अंक को किसी निरपेक्ष मानक द्वारा परिभाषित नहीं किया जाता, अपितु वह अन्य रूपों द्वारा परिभाषित होता है (बॉक्स IX.6 देखें)। आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (DEA) 0 और 1 के बीच एक अंतरिक नमूना कार्य-कुशलता अंक सृजित करता है, जिसमें 1 सर्वाधिक कार्य-कुशल होता है।

मुक्त निपटान आवरण (FDH) दृष्टिकोण में उत्तलता की धारणा को त्याग दिया जाता है और प्रेक्षित आंकड़ों का बेहतर सन्निकरण की अनुमती देने की तथा आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (DEA) की अपेक्षा बड़े कार्य-कुशलता अनुमान लगाए जाने की अपेक्षा की जाती है। हालांकि, आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (DEA) से होने वाला एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह सर्वाधिक कुशल निर्णयकर्ता इकाइयों का निर्धारण करने में आंकड़ों के सम्बन्ध में कोई विशिष्ट कार्यपरक रूप को अधिरोपित नहीं करता और इसलिए भिन्न-भिन्न आयामों वाले इनपुटों और आउटपुटों के बीच अन्योन्य-क्रिया को ग्रहण कर लेता है। दूसरी ओर, आंकड़ा पर्यावरण विश्लेषण (DEA) की प्रमुख कमी यह है कि वह आंकड़ों को माप सम्बन्धी चूक से मुक्त मानता है और इसलिए आंकड़ों की अखंडता का आश्वासन न होने की स्थिति में अपरिशुद्ध परिणाम दे सकता है (अवकिरन, 1998)।

सन्दर्भ :

गोमेज - गो-जालेज, जोस ई., निकोलस एम. कीफर (2006): बैंक फेल्योरः एविडेंस फ्रॉम दि कोलम्बियन फाइनैन्सियल क्राइसिस, कार्नेल युनिवर्सिटी, इथाका, न्यूयार्क।

इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ बैंकिंग एण्ड फाइनैन्स (2005): फाइनैन्सियल मैनेजमेंट, मैकमिलन, मुंबई।

प्रसन्ना चन्द्रा (2004): फाइनैन्सियल मैनेजमेंटः थियरी एण्ड प्रैक्टिस, टाटा मैक्ग्रा हिल, नई दिल्ली।

रिज़र्व बैंक आफ न्यूजीलैण्डः कैपिटल एडिक्वेसी रेशियोज फॉर बैंक्स - सिम्प्लीफाइड एक्सप्लनेशन एण्ड एक्जाम्पल ऑफ कल्कुलेशन।